लोकभाषा के काव्य आ ओकरा चर्चा पर चर्चा

लोकभाषा में रचल साहित्य का भाव भूमि से जुड़े आ ओकरा संवेदन–स्थिति में पहुँचे खातिर,लोके का मनोभूमि पर उतरे के परेला। लोक कविताई के सौन्दर्यशास्त्र समझे खातिर लोकजीवन के संस्कृति, लोकदृष्टि ओकरा अनुभव–सिद्ध मान्यता आ संवेदन–ज्ञान के समझल जरूरी बा। अक्सरहा एघरी,कुछ लोग भोजपुरी साहित्य आ ओकरा कविताई के अपना विचार दर्शन ,अपना रुचि –पूर्वाग्रह आ जानल सुनल राजनीतिक–समाजिक अवधारणा आदि का सुबिधानुसार देखे,जाने आ आँके के कोसिस का साथ मूल्यांकनो करत लउकत बा। अपना निजी सोच, बिचार–दर्शन में ऊ लोग भोजपुरिये ना, कवनो भाषा–साहित्य के अरथवान सिरजनशीलता के, ओकरा पूर्णता में समझला के बजाय, ओकरा सँग अन्याये करी। जेकरा, कविता के सही पाठ करे ना आई, ऊ भला ओकरा मरम के का समुझी? लोकभाषा के आपन ठेठ ठाट आ ब्यंजक–शक्ति होले, जवना के चलते ओकरा जियतार अभिव्यक्ति में ह्रदय–संवाद के आत्मीय सांकेतिक–छुवन, पढ़वइया–सुनवइया के ओकरा प्रेषित अर्थ से जोड़ेले। एकरो खातिर 'ग्रहणशीलता' आ 'समझदारी' जरूरी बा ।

एम्मे कवनो शक नइखे कि कविता का समय–सन्दर्भ में, रचनाकार का संवेदन आ काव्यानुभूति तक पहुँचे आ ओके समझे खातिर इतिहासबोध आ समाजिक–सन्दर्भो के जानकारी होखे के चाहीं, बाकिर खाली ओतने से कविता के समग्र आकलन हो जाय ,ई जरूरी नइखे ।कबिता के उपादान ,समय का साँच का मोताबिक बदलत रहेला ।जीवन अवस्था ,विचारधारा आ अभिव्यक्ति के लूर –ढंग ओकरा रचना–विधान में सहायक होला ,तब्बो ओकर कवनो बान्हल सीमा नइखे ,जवना पर कविता क ––लोकभाषा का कविता के संपूर्ण मूल्यांकन हो जाय ।कारन कि एकरा बदे कवनो एकहीं 'परफेक्ट' कसौटी नइखे।

कल्पनाप्रसूत, बनावटी काव्यानुभूति आ कवनो खास सिद्धान्त पर रचल जाये वाली कविता समय का मोताबिक नया हो सकेले बाकि मौलिक संवेदन का अभाव में ,सुभाविक ना रहला से बनावटी कविताई कहाई ।एही तरे छन्द ,बन्दिश ,शैली ,साँचा ई कूल्हि कविता के देह–धजा के अंग हो सकेला ,आत्मा ना ! भाषिक बिनावट में ,कवि के संवेदना आ जियतार

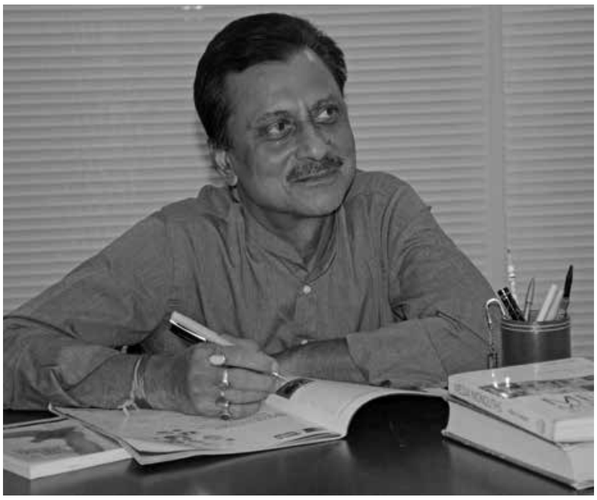

अनुभूति प्रान फूँकेले, तब कविता क जियत–संसार परतच्छ होला। एही से कविता व्यक्तिगत रुचि–अरुचि, संस्कार–बिचार ,आ कवनो खास नजरिया से ना नपाय ।कविता क स्थायी मानको ,ओके समझे समझावे में कामे आ सकेला, बाकि कबो–कबो,कवनो कवनो कविता के समग्र आकलन में ऊहो पूरा ना परे।

कवनो असाधारन अभिव्यक्ति जवन मर्म छूवेले , ओकर सन्दर्भो माने राखेला ।मानवी मूल्य के उजागर करे वाली अरथवान अभिव्यक्ति खातिर सुघर भाषाई बिनावट रचनाकार का कौशल आ काव्य–विवेक के प्रमान होला ।समालोचक में 'समझ' का साथ अनुभव–ज्ञान सिद्ध सामरथो चाहीं, जवना बले ऊ विषय–वस्तु(कन्टेन्ट) के साथ रूप (फार्म) में भाषाई रचाव (टेक्श्चर) क संगति–असंगति देख सको ।ओके ईहो देखे के परी कि कवि का परोसल जथारथ में जीवन–सत्य आ मानवीयता के कतना जियतार उपयोग भइल बा आ कवि ओह जीवन–सत्य के केतना सूक्ष्मता आ सचाई से उपयोग कइले बा ?

मानवीय करुना ,संवेदन के रचनात्मक गति आ रूप देले। अद्वितीयता का सँगे कवि में समाजिकतो जरूरी बा, जवन मानव–जीवन के उठावे में आवश्यक होला आ मानवीय अनुभवन के विवेकसम्मत वक्तव्य देबे में कवि के सहायक बनेला ।हिन्दी के चर्चित कवि मुक्तिबोध के शब्द उधार लेके कहीं त कविता आत्मपरक अभिव्यक्ति होइयो के ,व्यक्तिसापेक्ष , जीवन–सापेक्ष्य, युग सापेक्ष्य होले । कवि के अनुभूति जब छीछिल होई ,त भाषा के नया, ताजा आ कलात्मक प्रयोगो बेमाने होई । एही सब का चलते,

समीक्षक/समालोचक क काम रचनाकारो ले ढेर तन्मयता भरल ,सिरजशील आ कठिन होला।

बात करत रहीं लोकभाषा का कविताई पर, आ करे लगनी समझ बूझ, आकलन ,मूल्यांकन के। असल में एने, हमके हिन्दी के कुछ संगी साथियन क इयाद आ गइल हा, जवन लोग, अचके भोजपुरी का गत–दुरगति में लागल बा ।ओम्मे कुछ कथित समाजशास्त्रियो बुद्धिजीवी बा लोग ।ऊ लोग भोजपुरी कविताई आ साहित्य के खाक बूझो भा मत बूझो ,बाकिर अपना खास वैचारिक लकड़पेंच , गिरोहबन्दी आ नव–नटकला से नोकसान जरूर कर रहल बा लोग ।अइसना महानुभावन क ,कई कई 'वाद' के खट–मिठ अनुभव आ जान–पहिचान बा । समाजवाद, विकासवाद, जनवाद, दलित–शोषित वाद, स्त्रीवाद जइसन कतने कड़ुवा कसैला भेदभावी वाद बा, जवना का बसियाइल भरम–जाल में ऊ लोग भोजपुरियो कविता के चीन्हे–जाने लागल बा लोग। ए चिन्हला–जनला में ,भोजपुरी कविता क बहुत कुछ नीमन, ग्राह्य, सार्थक आ मूल्यवान छूट जाये क डर बा।

अरे भाई ,लोक के कविता त करुना ,प्रेम आ पीर क कविता हऽ। ओम्मे प्रतिरोधो बा ,त ओकर तेवर तीखा ना होके ,हिया के हूले वाला बा। ओम्मे आत्मसंघर्ष के कतने रूप, रंग बा। नियति क मार आ श्रम–साधना का बीचे उत्सवन क हास हुलास आ संस्कृति क राग–रंग बा। हमन सब जानत बानी जा कि लोकगीतन में केतना विविधता भरल बा –जियत–जागत संसार लेखा। एगो पूरा जीवन–चक्र समेटले। ओमें भक्ति का साथ, निस्सारता क निरगुनो बा। दरसल लोक कविताई कुछ अइसन बा, जवना में बिचार सिद्धान्त जइसन ऊपर से कुछ लादल नइखे। कुछ कहाइल बा, कुछ अनकह जानबूझ के छोड़ दिहल गइल बा। ऊहो एह गरज से कि 'थोरे लिखना, ज्यादा समझना'। अब ई पढ़े–सुने वाला पर छोड़ दिहल बा कि ऊ ओके पूरा समझ लेव! ई तऽ पढ़े–लिखे वाला लोगन पर बा कि ओह लोग में ग्रहणशीलता, समझ आ विवेक के कवन स्तर बा! भोजपुरी कविता क उत्स एही लोक कविताई में बा, ओकरा लय–धुन–राग के छोड़ल, परम्परा विच्छेद कहाई। एही तरे लोक के ऊ समाजो ना छूटी, जवना में पारस्परिकता आ सामूहिकता से लसल घर–गिरस्थी, खेत–खरिहान,पशु–पंछी, ताल–पोखर, नदी–पहाड़ बा। भोजपुरी कविता के समझे खातिर ओकरे भाव–भूइँ पर उतरे के परी आ परदेसी मानक के बजाय, ओकरे मानक अपनावे के परी ।••

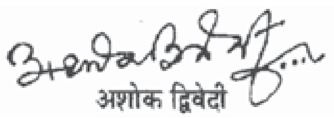

अशोक द्विवेदी

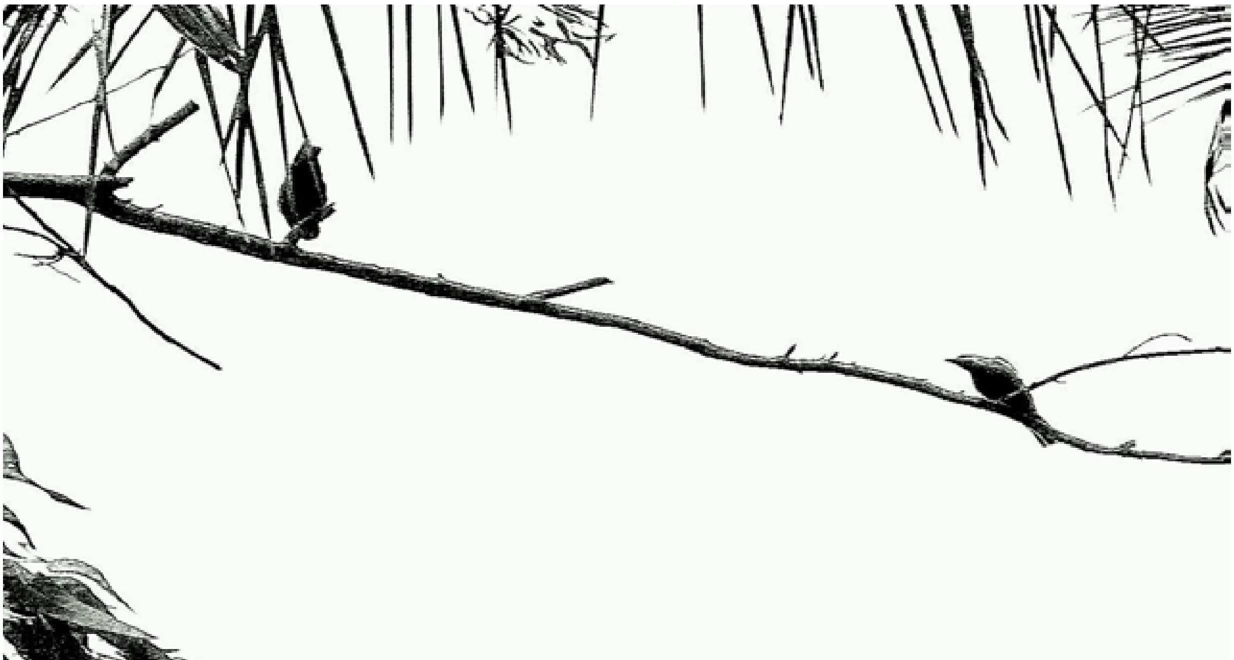

चन्द्रदेव यादव के
पांच गीत

[एक]

पवन पानी धूप खुसबू
सब हकीकत ह, न जादू!
जाल में जल, हवा, गर्मी
गंध के, के बान्ह पाई?
रेत पर के घर बनाई?

हम नदी क धार देखीं
फिर आपन बेवहार देखीं,
भूमि-जल पर आज नइकी
सभ्यता क मार देखीं
जेह दिया से हो उजाला
वोह दिया से घर जराईं !

एक भुजा में दर्द होखे
दूसरी तब जर्द होखे,
आँच गुंबद पर जे आवे
कलस रोये, सर्द होखे
चान-सूरुज के मिला के
के सही रस्ता देखाई?

ई हकीकत, ना फसाना
एके जानत ह जमाना
कट के माटी धूर से केहु
गाई ना सुख क तराना
सात रंग हो, सात सुर त
जग हमेसा मुस्कुराई !

••

[दू]

हम अपने आँगन क माटी
सँच के रक्खीला,
माटी ना, पुरखन क थाती
सँच के रक्खीला !

कबों-कबों पलकन से छू के
एकर तिलक लगाईं,
माँ क ममता, प्यार पिता क
छन भर में पा जाईं
ई माटी ह राग प्रभाती
सँच के रक्खीला !

जानल-अनजानल चीजन क
एसे खुसबू आवे,
भूलल-बिसरल पितरन क
ई माटी अलख जगावे
एम्में ह आपन परिपाटी
सँच के रक्खीला !

एह में जब-तब तुलसी चौरा
कोहबर क छबि दीखे,
एह में जियन-मरन क छाया
सारे सपन सरीखे
दियवट पर क दीया-बाती
सँच के रक्खीला !

••

[तीन]

काम पे मजूर
साम हवे अभी दूर
हौ थकान भरपूर
ई मजूरन क सदियन क जंग ह,
राह जिनगी क सचमुच में तंग ह !

रोज कुआँ खोद खोद रोज जल पीएलं,
एही तरे कामगार जीवन भर जीएलं
लहू के निचोड़ेलं
पाथर के तोड़ेलं
सुख के कन जोड़ेलं
ओनकर खुसी त कुबेर घरे बंद ह !

जबले ह जाँगर तबै ले अहार ह,
पौरुख के थकतै ई जिनगी पहाड़ ह
साँझ क दुकूल
ओम्में चाँदनी क फूल
समै सदा प्रतिकूल
येह मजूरन क जिनगी बदरंग ह !

उमिर घटे रोज नाहीं कर्जा कभी रे,
लइकन के मिले कहाँ दूध आउर घी रे

जीवन गरीबी में
अउर बदनसीबी में
कटे नाउमीदी में
जीवन का एनकर? अँधेरी सुरंग ह
हाथ में ह दीया मगर जोत मंद मंद ह !

••

[चार]

जिनगी घर क फूटल-पचकल
धुँअसल बासन ह
कब से खुसी बदे तरसत
ई चेहरा आपन ह !

लिख के बारहखड़ी समय, फिर
एके पचरेला,
सतर खींच, अनलिखा छोड़ के
पल में बिसरेला
जिनगी खरिहाने में सूखल
पड़ल बढ़ावन' ह !

उमिर हवे पगडंडी जेह पर
काँट-कूस ह जामल,
ठिल्ली के बेंगा नाईं दुख
घर में ह तावल
सुख गोहरउले वाला सँच के
रक्खल आलन ह !

बहुत जतन कइली सुख-सम्पत
घर में आइल ना,
नादी में क दूध पसर भर
कबों फोंफाइल ना
कइसे आई खुसी घरे, जब
फेरल तावन'' ह !

••

'बढ़ावन – पहिले खरिहान में गोबर क गोल पिंड बना के पइर या अनाज के रास पर एह उमेद से रक्खल जात रहल कि एसे अनाज में बढ़ोत्तरी होई एही पिंड के बढ़ावन कहल जात रहल ।

'' तावन – नारी के पानी के अपने खेत में ले जाए बदे ओकरी मेड़ के काट के बित्ता भर आगे नारी के बान्ह दीहल जाला। नारी के बान्हे बदे माटी से जवन रोक लगावल जाला ओके 'तावन' कहल जाला। ई क्रिया संपन्न भइले पर कहल जाला कि 'तावन फेर गइल ह'।

[पांच]

कल से नल से हवा आ रहल
पानी भइल हराम,
चलत-चलत थक गइल सहर
फिर हो गइल चक्का जाम !

चौहद्दी बढ़ गइल सहर क
गाँव भइल बेहाल,
धोख जहाँ पर रहैं खेत में
उहाँ खड़ा अब महल
निरधंग के चूल्ही में पसरल
चुप्पी आठो जाम !

भारी होते गइल गरे क
हार सेठानी क,
मँहगाई में चमकल चेहरा
खूब किरानी क
रोज कुआँ के खोदे वाला
जपैं राम क नाम !

एक-एक पइसा खातिर जूझत
हवैं इहाँ मजदूर,
पइसा क खरिहान लगा के
केहू ह मगरूर
बिक गेल पूँजी हाथ जुन्हैया
निरधन खातिर घाम !

••

धोख – बिजूका

हिन्दी विभाग, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली–110025
मोबा. 9818158745

‘गँवई गंध गुलाब’ के ‘मनबोध मास्टर’

आजु जब खेती– किसानी में जीव–जाँगर आ जिनिगी खपावेवाला गरीब किसान खुदकुशी करे खातिर अलचार हो जात बाड़न, त एह निठुर समय में एगो अइसन ऋषि रचनाकार के बरबस इयाद आवत वा, जे ताजिनिगी गाँव के तंगहाल मजूर–किसान के जरत–बरत मुद्दन के अपना सम्पूर्ण रचनाशीलता के मार्फत जियतार ढंग से उठावत रहल आ जे सही माने में ‘ग्राम देवता’ कहाए के हकदार रहे। ऊ अप्रितम साधक हिन्दी आ अपना महतारी भाषा भोजपुरी के गौरव–स्तम्भ रहे आ लमहर जिनिगी जीयत आखिरकार बानबे बारिस दू दिन के उमिर गुजरला का बाद बाइस नवंबर, 2016 के मंगर का दिने काशी में पंचत्तव में विलीन हो गइल। गाँव आ गँवई जन खातिर लेखन करे, जीए वाला ऊ अमर विवेकी साहित्यकार रहलीं डॉ. विवेकी राय। उहाँ के ना खाली प्रेमचंद–रेणु के परिपाटी के आगा बढ़ावत ग्राम्य लेखन के एगो अभिनव आयाम दिहलीं, बलुक कविता, कहानी, उपन्यास, ललित निबंध, रिपोर्ताज, डायरी जइसन विधन के इतिहास रचेवाली कृतियन के जरिए पूर्वांचल (पूरवी उत्तर प्रदेश) के मौजूदा गँवई जिनिगी के तल्ख जमीनी हकीकत से रू–ब–रू करावत सउँसे दुनिया के अभिभूतो कइलीं।

बाबूजी शिवपाल राय आ माई जविता कुँवर के लाडला विवेकी राय जी ने जनम अपना निनियाउर भरौली (बलिया) में 19 नवंबर, 1923 के भइल आ सोनवानी (गाजीपुर) के करइल माटी में होश सम्हारत गाँव के पहिल मनई बनलन, जे उर्दू मिडिल पास कइल। करइल के करियई माटी के ई खासियत होला कि गील होके गोड़ में लपिटाई, त छोड़वले ना छूटी आ कड़ेर होई, त सुइया पहाड़ बनि जाई। बुझिला एही से पूर्वांचल त छोड़वले के गँवई लोग बड़ा पितमरू, जीवट के होला आ नेह–नाता से भिंजला पर आल्हर बुतरू नियर करेजा में सटल, मोलायम। विवेकी राय जी के व्यक्तित्वों किछु ओइसने रहे। ताजिनगी तमाम झंझावात झेलत चट्टान नियर अडिग रहलीं। दुर्घटनाग्रस्त जवान कमासुत बेटा के लोथ कान्ह पर ढोवला से बढ़िके बाप खातिर भला अउर दुख का हो सकेला ! बाकिर रचनाशीलता के अलम से आफत–विपत उहाँ के शख्सियत के माँजत चमकावत चलि गइल। दोसरा ओर, उतना सहज–सरल सुभाव कि छोट–से छोट अदिमियो का सोझा उहाँ के अउर छोट बनि जाईं। फेरू त अइसन बुझइबे ना करे कि भेंट करे वाला ओतना महान शख्सियत से मिलि रहल बा। अइसन विरल व्यक्तित्व करइल के कुदरती माटिए में नू भेंटा सकेला !

विवेकी राय जी आपन सिरिजना खुदे कइलीं। ‘सेल्फ मेड’ रहलीं उहाँ के। अभाव में जनम, कमे उमिर में पिता के साया सर से उठि गइल। फेरू त मिडिले के बाद प्राइमरी स्कूल के अध्यापकी शुरू हो गइल। मास्टरी करत, घर–परिवार सम्हारत स्वाध्याय का बल–बूता

भगवती प्रसाद द्विवेदी

पर हाईस्कूल, इण्टरमीडिएट, बी.ए., साहित्यरत्न, एम.ए. तक के डिग्री आ काशी विद्यापीठ, वाराणसी से डॉक्टरेट (पी–एच.डी.) के उपाधि पाके पोस्ट ग्रेजुढट कॉलेज, गाजीपुर के प्राध्यापकी। जिनिगी के जद्दोजहद के काँट–कूस का बीचे गुलाब–अस फुलाए–मुसुकाए वाला विवेकी राय के बड़ी बाग, गाजीपुर में बनल घर के नाँवों रहे– ‘गँवई गंध गुलाब’। आगा चलिके घर तक जाए वाली सड़क के नामकरण हो गइल– डॉ. विवेकी राय मार्ग। अब ले उहाँ के विपुल साहित्य पर विभिन्न विश्वविद्यालयन से साठ गो छात्र शोध करि चुकल बाड़न। आखिर कतना लोग के ई सुख नसीब हो पावेला! ओह में एगो अइसना निष्काम करमजोगी रचनाकार के, जे ताजिनिगी गाँव सोनवानी आ गाजीपुर छोड़ि के कतहीं गइबे ना कइल।

राय साहब के लेखन के सिरीगनेश कविता से भइल रहे जवना घरी ऊ मिडिल स्कूल के विद्यार्थी रहलन। फेरू त नाँव धरा गइल ‘कवि जी’ आ गाँव’लोक से जुड़ि के ना सिरिफ कविता–संग्रह ‘अर्गला,’ ‘रजनीगंध’, ‘लौटकर देख्ना’, ‘यह जो है गायत्री’, ‘दीक्षा’ शीर्षक से प्रकाशित भइलन स, बलुक एगो जागरूक मंच ‘अंतरग्रामीण सुहृद–साहित्य–गोष्ठी’ बनाके गाजीपुर’बलिया के तमाम गाँवन में साहित्यिक आयोजन कइके आमजन के सँगहीं नवही साहित्यकारन के जोड़े में अहम भूमि को निबाहल गइल। दू दशक ले ई सिलसिला चलल। भोजपुरी में 1984 में छपल कविता–संग्रह ‘जनता के पोखरा’ खूब चरचा में रहल।

गद्य लेखन के विधिवत शुरूआत 1945 में भइल रहे, जब राय साहब के पहिल कहानी ‘पाकिस्तानी’ तब के मशहूर दैनिक ‘आज’ में प्रकाशित होके चरचा में बनल रहल। उहाँ के शोहरत में चार चान लगवले रहे ‘आज’ में प्रकाशित रिपोर्ताज, रेखाचित्र ललित निबंध पढ़नहिरन के अभिभूत कऽ देत रहे। तब, भोजपुरी में मुक्तेश्वर तिवारी ‘बेसुध’ के ‘चतुरी चाचा की चटपटी चिट्ठी’ आ हिन्दी में राय साहब के ‘मनबोध मास्टर की डायरी’ दैनिक आज’ के खास पेशकश होत रहे। ओह समय में विवेकी राय जी ‘आज’ (बनारस) आ ‘अमृत बाजार पत्रिका’ (इलाहाबाद) के प्रतिनिधियो का रूप में काम करीं। बाद में ‘रविवार’ (कोलकाता), ‘शिखरवार्ता’ (भोपाल), ‘ज्योत्सवना’ (पटना) में गाँव से जुड़ल स्तम्भ लिखलीं। ‘जनसता’ (मुंबई) के भोजपुरी स्तम्भ ‘अड़बड़ भैया’ यूपी, बिहार के पाठकन में बहुते लोकप्रिय भइल रहे। मनबोध मास्टर की डायरी’ त 1957 से 1970 ले बिना नागा लगातार छपत रहल।

डॉ. विवेकी राय के शोधी आ समालोचक नजरियो खास तौर से रेघरियावे जोग रहे। अपना समय के चर्चित साहित्यिक पत्रिका ‘कल्पना’ (हैदाराबाद) के ऐतिहासिक

अवदान पर उहाँ के 'कल्पना और हिन्दी साहित्य' शीर्षक से मूल्यांकनपरक पुस्तक लिखलीं। गाजीपुर पर केन्द्रित 'गाजीपुर संवाद' किताबो चरचा में रहल। 'आचार्य रामचन्द्र शुक्लः रचना और दृष्टि' आलोचनात्मक ग्रंथ रहे। 'भारत छोड़ो आन्दोलन' (1942) के पचासवीं सालगिरह पर लिखाइल 'श्वेतपत्र' ओइसे त औपन्यासिक शैली में संस्मरणात्मक ढंग से रचल कृति रहे, बाकिर सही माने में ऊ सन् बेयालिस के क्रांति के तीन नामी जिलन–बलिया, गाजीपुर, भोजपुर– के प्रामाणिक ऐतिहासिक दस्तावेज रहे। हिन्दी–भोजपुरी के दर्जन–भर अइसनो किताब अइली स, जवनन में राय साहब अपना संपादन–कला के अद्भुत छाप छोड़ले रहलीं। इन्हनीं में 'भोजपुरी निबंध निकुंज,' 'वंदेमातरम्', 'पवहारी बाबा' वगैरह खास रहली स।

बाकिर गुणात्मक आ परिमाणात्मक दृष्टि से रचाइल गाँव–केन्द्रित अनमोल कृति विवेकी राय के विलक्षण ग्राम्य कथा शिल्पी बनवली स। ओइसन कृतियन में ललित निबंध, रिपोर्ताज, डायरी, संस्मरण, कहानी, उपन्यास विधा के सत्तर पचहत्तर गो किताब बाड़ी स। उपन्यासन में 'बबूल', 'पुरूष पुराण', 'लोकऋण', 'सोनामाटी', 'देहरी के पार', समर शेष है' 'मंगल भवन' नमामि ग्रामम्' इतिहास रचि चुकल बाड़न स। 'जीवन परिधि', 'नयी कोयल', गूँगा जहाज', 'बेटे की बिक्री', 'कालातीत', 'चित्रकूट के घाट पर', विवेकी राय की श्रेष्ठ कहानियाँ' वगैरह यादगार कहानी–संग्रह बाड़न स। ललित निबंध, डायरी, रिपोर्ताज, व्यंग विधा के अमर कृति बाड़ी स– 'फिर बैतलवा डार पर', 'गँवई गंध गुलाब', 'जुलूस रूका है', मनबोध मास्टर की डायरी', 'नया गाँवनामा', आम रास्ता नहीं है', 'जगत तपोवन सो कियो,' मेरी श्रेष्ठ व्यंग्य रचनाएँ' वगैरह।

'सोनामाटी' जइसन क्लॉसिक उपन्यास के तुलना 'गोदान' आ मैला आँचल' से कइल रहे। नामी–गिरामी समालोचक डॉ. नामवर सिंह के कहनाम रहे– "डॉ. विवेकी राय प्रेमचंद और रेणु की परंपरा में ठहरते हैं। गाँव और उसका जीवन इनके साहित्य का जीवन स्रोत रहा है। गाँव–कथा का जब भी उल्लेख किया जाएगा, विवेकी राय जी हमेशा स्मरणीय और प्रासंगिक रहेंगे... विवेकी राय के चर्चित उपन्यास 'सोनामाटी' को मैं 'गोदान' और 'मैला आँचल' जैसे ग्रामीण उपन्यासों की परंपरा की महत्वपूर्ण उपलब्धि मानता हूं। उन्होंने अपने जनपद की 'करइल माटी' को अपनी कथा में सोना बनाने को श्रमसाध्य एवं कलापूर्ण उद्योग किया है। जनपदीय मिट्टी का सोंधापन उनके कथा साहित्य में फैला हुआ है।...प्रेमचंद के कथ्य गँवई सच का डॉ. विवेकी राय के साहित्य में पूरी तरह साक्षात दर्शन किया जा सकता है, जहाँ स्वातंत्र्योत्तर भारतीय गाँवों का सच चित्रित तो है ही, साथ ही नवसृजनता की सोच को पर्याप्त प्रोत्साहन तथा प्रगतिशील सामाजिक ढाँचे को मजबूत करने का प्रयास भी मुखर है.... उन्होंने शहर में रहकर साहित्य में प्रयुक्त गँवईपन को बचाने–बढ़ाने तथा उन्हें आम लोगों तक पहुँचाने का नया अस्त्र खोज निकाला था। नई और पारंपरिक दृष्टि से एक साथ तत्कालीन गाँवों को देखने का तरीका डॉ. राय को खूब मालूम था।" डॉ. प्रभाकर श्रोत्रीय 'सोनामाटी' के कृषि संस्कृति के महाकाव्यत्मक दस्तावेज मनले रहली विवेकी राय जी के एह बात के बखूबी एहसास रहे कि हिन्दी में उहाँ के प्रसिद्धि में भोजपुरी के माटी, मुहावरा, खाँटी शब्दन आलोक संस्कृति के अहम भूमिका रहल बा। एह से उहाँ के महतारी भाषा से नेह–नाता ताजिनिगी अटूट बनवले रखलीं आ कई गो अनमोल पोथियन के सिरिजना कइलीं। 'भोजपुरी कथा साहित्य के विकास' (1982) जहवाँ साहित्येतिहास आ आलोचना के किताब रहे, उहँवें 'भोजपुरी साहित्यः प्रगति की पहचान' (2002) निबंध–भाषण के। 'ओझइती' (1980) 'गंगा यमुना सरस्वती' (1992), 'कथुली गाँव' (2000) आ 'अमंगलहारी' (1998) कथासाहित्य के नायाब कृति बाड़ी स। 'गंगा यमुना सरस्वती' में कहानी–निबंध–संस्मरण के नायाब संगम बा। 'अमंगलहारी' जहवाँ गँवई जिनिगी के भारी–भरकम औपन्यासिक कृति बा, उहँवें 'कथुली गाँव' छोट–छोट लोककथन के चुटीला संग्रह बा। 'राम झरोखा बइठि के' (1994) के वृतचित्र–निबंध के लालित्य देखते बनेला। ओइसे त भोजपुरी के पहिल निबंध ललित निबंध का रूप में 1948 में 'भोजपुरी' पत्रिका में छपल 'पानी' रहे, निबंधकार रहलीं महेन्द्र शास्त्री। बाकिर ललित निबंध के पहिलकी किताब आइल 'के कहल चुनरी रँगा ल' (1968) आ ओकर निबंधकार रहलीं डॉ. विवेकी राय जी। एह एकल संगह का प्रकाशन से भोजपुरी निबंध 'एक से एकइस' हो गइल रहे।

डॉ. विवेकी राय के ख्याति गँवई उपन्यासकार आ कथाकार का रूप में सर्वाधिक रहल बा, बाकिर उहाँ के निबंधकार के पलड़ा कम भारी नइखे रहल। उहाँ के पहिल ललित निबंध–संगह 'के कहल चुनरी रँगा ल' निबंध साहित्य के अनमोल निधि का रूपमें रेघरियावल जाला। एक संग्रह में किसिम–किसिम के एकइस गो निबंध संग्रहीत बाड़न स। शीर्षक निबंध 'के कहल चुनरी रँगा ल' के भावात्मक निबंध का कोटि में राखल जा सकेला। 'शब्दन के भोजपुरिया लजा मत' अइसन महत्वपूर्ण निबंध बा, जवना में विचार के प्रधानता बा। 'भोजपुरी साहित्य' के समीक्षात्मक निबंध का श्रेणी में राखल जा सकेला। 'हुक्का हरि क लाड़िलो' में राय साहब के कथाकार रूप के दर्शन होत बा। संग्रह के वैविध्यपूर्ण निबंध के पढ़ला–परखला क बाद डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय आ पं. गणेश चौबे के स्पष्ट कहनाम बा कि हिन्दी गद्य–निबंध का क्षेत्र में जवन स्थान पं. बालकृष्ण भट्ट जी के बा, ऊहे भोजपुरी निबंध का हलका में डॉ. विवेकी राय जी के बा।

डॉ. राय के निबंधन में गँवई जिनिगी के जीवंत छटा आ भाषा के कलात्मकता देखते बनत बा। 'के कहल चुनरी रँगा ल' निबंध के ई पाँती देखीं– "अइसन जनात बा कि इहवें जमुना क किनारा बा, इहँवें कन्हैया क बंसी

बाजति बा। इहँवे कुंज–गली के छेड़छाड़ होति बा। खेत में कृष्ण बाड़न, खेत में राधा। कहाँ से ई शोभा आइल? खेते में जिनिगी आ खेते में जवानी। बनिहारिन लोगन से के कहल कि बोझा माथ पर उठा के जमुनापारी पाड़ी नियर माकत चलऽ जा। के कहल कि चमक–चमक के, झमक–झमक के, उचकि–उचकि के लपकि–लपकि के, देहि भाँजत गेना नियर उछलत चउए पर चलऽ जा।"

"राहे–राहे रासलीला, खेते–खेते वृंदावन...... ई फागुन के महीना, ई खेत, ई खरिहान, ई कटिया, ई धूप, ई बसंती चोली, ई गुलाबी चुनरी, मस्त चाल...... अजी, धनिया से के कहल कि अब चुनरी रँगा ल।"

तबे नू एह आ अइसन कलम के जादूगरी पर चकित होत डॉ. रामप्रवेश शास्त्री के लिखे के पड़ल– "विवेकी राय जी के चुनरी के रंग, बिनावट, कारीगरी के जवन भी संज्ञा अच्छा लागे, दिहला में कवनो हरज ना बा, लेकिन अइसन कला के पटतर दिहल कठिन होला। जवन नित नया बा, ओके पुरान बटखरा से वजन कइले अतने लाभ हो सकेला कि पता चलि जाई कि हमरा जानकारी के कसौटी में कतना पर ई अधिका उतरल बा।"

डॉ. अनिल कुमार आंजनेय एह कृति के भोजपुरी अंचल के दरपन बतावत कहले रहलीं– "के कहल चुनरी रँगा ल' भोजपुरी अंचल के दर्पण ह। जेके भोजपुरी जिनिगी में, अंचल में गहराई तक पइठे के बा, ओके ई समीक्ष्य पुस्तक पढ़ल बहुते आवश्यक बा। ई पुस्तक के गहरे पैठ अंतर्दृष्टि के साक्षी ह।"

आंजनेय जी के एह कहनाम से सहमति जतावत चंद्रशेखर तिवारी लिखले बाड़न– "एह संग्रह के पढ़िके ई कहल जा सकेला कि डॉ. विवेकी राय जी अउरी साहित्यकारन खानी कागद की लेखी ना कहिके महात्मा कबीर का तरह 'आँखिन के देखी' कहले बाड़न, जवना से उनकर निबंध पाठक पर आपन एगो विशिष्ट छाप छोड़े में सफल भइल बाड़न स। एह पुस्तक के प्रकाशन निश्चित रूप से भोजपुरी साहित्य के ललित निबंधन का इतिहास में एगो महत्वपूर्ण घटना ह।"

अपना भाषाई कौशल, व्यंगात्मकता आ रचनात्मक दक्षता के बदउलत राय साहब के निबंध एह विधा के विकास–समृद्धि के दिसाईं मील के पाथर साबित भइलन स। एह संबंध में डॉ. जया पाण्डेय के साफ–साफ विचार बा– "विवेकी राय जी के कुल्हि निबंध शुरू से आखिर ले व्यक्ति–व्यंजकता का रंग में रँगाइल बाड़े सन। कतहीं–कतहीं प्रगीतात्मक काव्य के आनंद आवता। दोसर विशेषता बा लेखक के व्यंग्य–विनोद के प्रवृत्ति। कवनो भाषा के गद्य साहित्य जतने समृद्ध होई, ऊ भाषा ओतने विकसित मान जाले। विवेकी राय के तमाम निबंध विकासमान बोली के भाषा के प्रौढ़ता प्रदान कइलन स।"

डॉ. विवेकी राय के हिन्दी–भोजपुरी के कृतित्वे–भर आंचलिक ना रहे, उहाँ के शख्सियतो एड़ी से चोटी ले आंचलिकता से लैस रहे– सहनशीलता आ जीवट से लबालब भइल। तबे नू, अढ़ाई दशक पहिले हृदयाघात के हुरपेटत विजयी भइलीं। सतरह साल पहिले जब पोक्षाघात के शिकार दहिना अलँग कहला में ना रहल, त बायाँ हाथ से लिखे के सिलसिला शुरू कऽ दिहलीं। बाकिर एह बेर उहाँ के मउवत के चुनौती कबूल ना कऽ पवलीं आ बाबा विश्वनाथ के नगरी काशी के अस्पताल में गंगा मइया के गोदी में आखिरी साँस लिहलीं। अतिशय सज्जनता आ साधुता के प्रतिमूर्ति, गँवई जिनिगी के अद्भुत चितेरा, गँवई गंध गुलाब' से साहित्य–वाटिका के गमगमावे वाला 'मनबोध मास्टर' के हमार अशेष प्रणामांजलि! ●●

शकुंतला भवन, सीताशरण लेन, मीणापुर,
पोस्ट बॉक्स ११५, पटना'

ग़ज़ल

अशोक कुमार तिवारी

हो गइल छीछिल छुछुन्नर, दिल कहाँ दरियाव बा,
अब उठावे ना, गिरा देबे में सबकर चाव बा।

लगल आगी रहे धनकत भले, हमरा ठेंग से
जर रहल बा झोपड़ी, सूतल सूचना गाँव बा।

बात-बीतल हो गइल बाटे धरम-ईमान के
शेष बा लड़ले-लड़ावल, अब कहाँ फरियाव बा!

हो सकत बा, न्याय के मन्दिर रहल होई कबो
अब कसाईघर भइल छूरी, गँड़ासा दाँव बा!

देख के दउरल धधाइल धइल जबरन बाँह में,
भाव के अभिनय ह बस, भीतर कहाँ ऊ भाव बा!

ग्रा०पो० सूर्यभानपुर, बलिया-२७७२१६

प्रगतिशीलता के नाम पर

डॉ. ब्रजभूषण मिश्र

आन भाषा सब अइसन भोजपुरी साहित्य में बेसी कविते लिखल जा रहल बा। दोसर–दोसर विधा में लिखे वाला लोग में शायदे केहू अइसन होई, जे कविता ना लिखत होई। एही से कविता के जरिये भोजपुरी में साहित्य लेखन के दशा–दिशा, प्रवृति–प्रकृति के जानल–समझल जा सकत बा। साहित्य आ साहित्य के शक्ति के बारे में एगो श्लोक भरतमुनि कहले बाड़े–

नरत्वं दुर्लभं लोके विद्वत्वं तत्र दुर्लभम्।
कवित्वं दुर्लभं तत्र शक्तित्वं तत्र दुर्लभाः।

कविता आ काव्य शक्ति के जे हाल होखे भोजपुरी में कवि आ लेखक के भरमार बा। एही भरमार से भोजपुरी लेखन के प्रवृति आ धारा भरमाए लागल बा। हम अपना बात के फरिआवे खातिर भोजपुरी के प्रसिद्ध आलोचक–समीक्षक **महेश्वराचार्य** के कथन दोहरावे के चाहत बानी उहाँ का अपना समीक्षात्मक पुस्तक **'त्रिपुटी'** के भूमिका में लिखले रहीं– "सत् साहित्य भा स्थायी साहित्य के सृजन कम हो रहल बा। अधिका हो रहल बा मनोरंजन के सृजन। श्रोता भा पाठकन के रूचि बदल गइल बा। लेखक भा कवि अपना श्रोता भा पाठकन के खुश करेवाला चीज लिख रहल बाड़ें। परंपरा के कठोरतम सीमा के तूर के युग प्रगतिशीलता ले आवे के फेरा में पड़ गइल बा। शुकदेव के अभेद ज्ञानो, एह प्रगतिशीलता से मात खा रहल बा।"

असल में प्रगतिशीलता के नाम पर बहुत चालबाजी आ खेल होत रहल बा। प्रगतिशीलता त सतत चले वाली प्रक्रिया हऽ। एकर बिस्तार लमहर बा, बाकिर प्रगतिवाद आ जनवाद के नाम पर एकरा के संकुचित करे के काम चलत रहल बा। दुनिया में हो रहल हर तरह के परिवर्तन के समेटत स्वीकारत आगे बढ़त रहे के प्रेरित करे वाली विशेषता हवे प्रगतिशीलता। प्रगतिवाद के दायरा संकुचित बा। प्रगतिवाद मार्क्सवाद के कोख से ऊपजल आ वामपंथी विचारधारा से प्रतिबद्ध होके रूढ़ हो गइल। रचना भा रचनाशीलता का वैचारिक उहो निखालिस एगो राजनैतिक विचारधारा से प्रतिबद्ध कइल, ओकरा के सीमित दायरा में बान्हल कहाई। जइसे कवनो नदी आ झरना के पानी के खास उद्देश्य से घेरि के नहर भा डैम में राख दिआय। एह वैचारिक प्रतिबद्धता के बारे में बड़ा सटीक ढंग से, अपना काव्य संग्रह **'केतना बेर' में पी. चन्द्र विनोद जी** भूमिका का जरिये बतवले बानी कि रचनाकार का वैचारिक प्रतिबद्धता से तटस्थ आ मुक्त रहे के चाहीं– "कवनो खास खूँटा में बन्हा के जे रचना होइ त रचनाकार के व्यक्तिगत आवेश आ संवेदना धूमिल पड़ जाई। कवनो प्रतिबद्धता के हर बिन्दु, ओह से प्रतिबद्ध हर आदमी के पूरा–पूरी व्यक्तिगत हो पाई, ई जरूरी नइखे। भीतर के आवेग के बिना, कलम के जबरी बोकराती बनावल, शुद्ध सर्जना खातिर अस्वभाविक बा। ई एक तरह से मुँह में अंगुरी डाल के बोलवावल होई।"

एने भोजपुरियो में प्रतिबद्धता के पिटल–पिटाइल परिपाटी पनप रहल बा। अपना के प्रगतिवादी–जनवादी 'कवि'–'लेखक', 'आलोचक' कहवावे– गिनवावे के प्रवृति बढ़ रहल बा। एही होड़ में सत्–साहित्य आ शास्वत साहित्य के हेठी आ नजरअंदाज कइल जा रहल बा, नीचा देखावल जा रहल बा। ई वैचारिकता दलगत आधार पर काम कर रहल बा। ई प्रतिबद्धता आदमी–आदमी के बराबरी के काम में अबले सफल त नइखे हो सकल, उलटे भेद बढ़ा देले बा, दूरी पैदा कर देले बा, कई तरह के विवाद पैदा कइले बा। भोजपुरी साहित्य के कवि–कथाकार आलोचक बरमेश्वर सिंह जी अपना कविता संग्रह 'अथ लुकाठी कथा' के अपना कथन में एह प्रतिबद्धता के खबर लेले "हमरा समझ से फैशनेबुल प्रतिबद्ध भइल, प्रगतिशील साहित्यिक मूल्यन के अपमान कइल बा। आज काल पार्टीबद्ध होके अपना आप के प्रतिबद्ध घोषित कइला से मिले वाली सुविधा के खूब दुरूपयोग हो रहल बा।" एह बात के अउरि फरिया के उहाँ का अपना कविता संग्रह 'गीत–अगीत' के अपना भूमिका में बतवले बानी–" दरअसल, ई कुल्हि खेल अपना के प्रगतिशील साबित करे के फेरा में फँसल आलोचक करि रहल बाड़ें। अजब तमाशा बा। ई प्रगतिशीलतो आज एगो मुखौटा होके रहि गइल बा। बाकिर, ई रीढ़ तब स्वस्थ रही, जब सोच सकरात्मक रही, तबे कथनी–करनी में साम्य रही। अब सकारात्मक सोच के पैमाना ई बा कि ऊ मानवीय मूल्यन खातिर कतना चिंतित आ प्रयत्नशील बा। बाकिर आज के ढेर प्रगतिशीलन के मुखौटा के पीछे छिपल चेहरा पाक साफ नइखे।" बरमेश्वर जी के कथन आज के भोजपुरी लेखन में प्रगतिशीलता के दशा बतावत बा। बरमेश्वर जी समकालीनता के नाम पर तात्कालिकता का चलन पर अंगुरी उठवले बानी आ सही उठवले बानी। प्रगतिशीलता आ समकालीनता के प्रगतिवाद–जनवाद आ तत्कालीनता के घेरा में बंद कइल साहित्य के सत् शाश्वत आ मानवीय सहजता से दूरं कइल बा।

प्रगतिवाद आ जनवाद के पैरोकार लोग सामाजिक परिवर्तन भा क्रांति खातिर साहित्य में खाली भौतिक जन के बात कर रहल बा; ओह जन का मन के महत्व नइखे देत, ओकरा मन के खेयाल नइखे करत। जनवादी साहित्यकार–आलोचक का एह बात के धेयान नइखे कि आदमी के आदमी से रिश्ता–नाता, मूल्य के पहचान, चाहे मानसिक तनाव से मुक्ति मने से हो सकेला। ओकरा ई नइखे बुझात चाहे ऊ बुझे के नइखे चाहत कि खाली आर्थिके आजादी आ खयाली क्रांति से आदमी के भलाई नइखे, सह्रदयता आ सह अनुभूतियो जरूरी बा। ऊ

संवेदनशीलता जरूरी बा, जवन आदमी के आदमी से जोड़ेला। मुक्त छन्द के युगबोधी कविता संग्रह **'आगे-आगे'** के संपादक आ दर्शन शास्त्र के विद्वान साहित्यकार **डॉ. रिपुसूदन श्रीवास्तव** अपना भूमिका में साहित्य में जन के साथ मन के ऊपर बल देने बानी। जन आ मन के संगम स्थल पर रचल जाए वाला साहित्य सोगहग साहित्य हो सकत बा। उहाँ के कहनाम बा– "एने कुछ दिन से कहल जा रहल बा, जे जवन कुछ 'जनवादी' बा, ऊहे साहित्य ह, बकिया सब कुछ कूड़ा–करकट ह, ऐय्यासी ह। 'जनवादी साहित्य' के मथेला के नीचे जे कुछ आवेला ओकर सम्बन्ध आदमी के सामाजिक आर्थिक परिवेश से बाटे। 'जनवाद' आ 'मनवाद' एक दोसरा के विरोध में खड़ा बा। हमनी का, ई मानीले जे 'जन' के कल्याण 'मन' के छोड़ के ना होखें 'मन' के मार के केहू खुश कइसे हो सकेला। आदमी के बेहतरी मार्क्सवाद का अलावा दोसरो लोग का सोच आ चिन्ता के विषय रहल बा। कवनो एगोवाद के मान लीहल मानसिक संकीर्णता बतावेला। 'मनवादी' साहित्य के कूड़ा–करकट कहल हमरा विचार से राजनीतिक बाध्यता भले होखे, बौद्धिक ईमानदारी ना कहाई। हमनी का सोच से जनवाद आ मनवाद के संधि स्थल पर जवन साहित्य जनमेला, जवन कविता उपजेला ऊ समूचा आदमी के साहित्य होला।"

'आगे–आगे' के कवितन में उपरोक्त बात के खेयाल राखल गइल कि प्रगतिवाद–जनवाद के फेरा में मन के अनदेखी ना हो जाएं प्रगतिवादी–जनवादी कविता पर ई आरोप सही बा कि ऊ जादातर 'नाराबाजी' बन के रह जाला। जबकि कविता नारा–बाजी आ लटकाबाजियो ना ह। कविता कवनो सिद्धान्त के पद्यानुवादो ना ह। कविता तन आ मन दुनो दिसाई भोगल अनुभूति के कवनो सत् उद्देश्य से कइल रसगर अभिव्यक्ति हऽ। एह अभिव्यक्ति के तेवर देश–'काल आ पारिस्थिकी से अनुकूलित होखे के चाहीं। कविता अइसन जोरदार जरिया, गाय के घीव चाहे मधु अइसन, जवना में कड़ुआ से कड़ुआ चीज लपेट के गला के नीचे उतार दिहल जा सकत बा, प्रेम से। कविता अइसन जोरदार हथियार हऽ जे असर के बाद लागेला। लगला के बाद असर ना करे। लोहा वाला हथियार लगला के बाद असर करेला। हमरा समझ से भोजपुरी कविता अपना आदिकाल से लेके आज तक आदमी के आदमी बनवले राखे खातिर जूझ रहल बा आ जन–मन के संगमस्थले पर आकार ग्रहण करत रहल बा। गोरखनाथ, कबीर से शुरू होके लमहर संत परम्परा में पोषित होखत एकर जवन धारा बहल, ऊ कुँवर सिंह के शौर्य के बखान करत देश प्रेम में परिवर्तित भइल आ रघुवीर नारायण जइसन कवियन से परिपुष्ट भइल। आगे उहे प्रकृति–प्रेम आ भाषा प्रेम में आपन सरूप बदलत बढ़त गइल। हीरा डोम रचित अछूत के शिकायत' से दलित विमर्श शुरू भइल त भिखारी ठाकुर के दलित–शोषित कमजोर समाज के आर्थिक सामाजिक चित्रण पर लोगन के नजर पड़ल। आजादी के बाद आम आदमी के टूटत सपना ठगात हालत के चित्रण छायावाद का प्रभाव में शुरू भइल आ मुक्त छंद नवगीत, गजल में व्यक्त होखे लागल सब में आदमी का बेहतरी खातिर संघर्ष के स्वर गूँजल आ बिना कवनो भेद–भाव सबके दुख–तकलीफ आ हर्ष–विषाद के समेट के अभिव्यक्त कइलसं भोजपुरी कविता गोरख–कबीर से लेके आज तक भोजपुरिया संस्कार–संस्कृति आ प्रेम के सोन्ह गंध में पगाइल रहल। एह पोढ़ परम्परा पर अब सवाल उठावल जा रहल बा, एकरा के खाना में बाँटे आ नकार के प्रयास जारी बा। एह सवाल आ एह नकरला के पीछे राजनीतिक जनवाद के मानल जा सकत बा। जनवाद प्रगतिशीलता के नइखे अपनवले, बलुक अपना बाइ प्रोडक्ट के रूप में गुटबाजी, जातिवाद आ बर्गवाद उपजवले बा। प्रगतिवाद आ जनवाद के प्लेटफॉर्म से ऊँच–नीच, अमीर–गरीब, छुआ–छूत, अंध–विश्वास, नारी आ दलित उत्पीड़न जइसन समस्यन के मोटावे के संकल्प उठवले रहे, आदमी–आदमी के बराबरी के बात करत रहे, ऊ तऽ सफल ना हो पावल, बलुक नया–नया समस्या पैदा भइल, आदमी–आदमी के बीच खाई पैदा होत चल गइल। गोल आ गुट बरियार भइल। परंपरागत रूप से चलत आ रहल भेद–भाव, छूआ–छूत, भय–भूख, उत्पीडन–दलन सहित नाना प्रकार के विसंगतियन के उन्मूलन त नाहिये भइल, ऊ दोसरा रूप में नया–नया तरह के भेद–भाव दुराव, छुआ–छूत, उत्पीड़न–दलन आ प्रतिकार के रूप में सोझा आइल। एकर प्रभाव साहित्यो पर पड़ल, नीक आ बढ़िया सत् आ शास्वत साहित्य के अनदेखी होखे लागल। जातिगत आ वर्गगत आधार पर साहित्य के बढ़िया खराब कहत चर्चा कइल जाए लागल। एसे भोजपुरियो साहित्य के अहित हो रहल बा। एह में जाने अनजाने भोजपुरिया इतिहास आ संस्कृति के विकृत करके साहित्य में परोसल आ स्थायी–शास्वत रचना के नकार के अपना रचना के श्रेष्ठ बतावल जा रहल बा। साहित्य के शास्वत–प्रवृति पर सवाल उठावल जा रहल बा।

हम दू–तीन गो उदाहरण देके एह प्रवृति के जानकारी देवे के चाहब। हमनी जानत बानी कि हिमालय जड़ी–बूटी, स्वच्छ हवा–पानी देवे के साथ साधना स्थली के रूप में जानल जाला, भला ऊ साँप जइसन फुफुकार काहे छोड़ी? हिन्द महासागर के पानी खारा होला, ओकरा में लहर उठेला आ ऊ घहराला। रस पीये के चीज ह, आम के रस होखे भा ऊखि के रस होखे। आगन्तुक के अइला पर रस–पानी से स्वागत कइल जाला। अब कवनो कवि हिमालय से फुफुकार छोड़वावे लागे आ सिन्धु से रसधार बहवावे लागे–'एक द्वार धेरी ठारऽ हिम कोतवलवा के तीन द्वार सिंधु रसधारऽ मोरे मितवा' अउर' भोरे–भोरे झाँके जहाँ पहली किरनिया से, हिम खोहऽ मारे फुफुकार मोरे मीतवा' त का कहल जाई? ओह पर से तुर्रा ई कि रघुवीर नारायण के बटोहिया 'गीत' सुन्दर सुभूमि भइया भारत के देसवा से मोरे प्राण बसे हिमखोहि रे बटोहिया।'– से अपना रचना

के श्रेष्ठ बतावल जा रहल बा।

जातिगत आधार पर केकरो अवदान के कइसे नकारल जाला, एकर उदाहरण दे रहल बानी। 'हीरा डोम' के रचना 'अछूत के शिकायत' महावीर प्रसाद द्विवेदी 'सरस्वती' जइसन पत्रिका में छपलें। जवना धड़ी सबका 'सरस्वती' में जगह ना मिलत रहें अब एने कहीं–कहीं ई सवाल उठल ह कि एगो ब्राह्मण दलित के रचना काहें छापी? हीरा डोम के दोसर कवनो रचना काहे नइखे उपलब्ध? कहीं द्विवेदिये जी त हीरा डोम के छद्म नाम से 'आपन रचना' नइखन न छाप देले। एह प्रकरण में द्विवेदी जी के अवदान के नकारे के क्रम में हीरा डोमो के नकारल जा रहल बा।

हम भोजपुरी साहित्य के महानायक बाबू कुँवर सिंह के लेके 'फेसबुक' पर सवाल उठल कि भोजपुरी साहित्य के महानायक बाबू कुँवरे सिंह काहे? दोसर केहू काहे ना? अब के बतावे कि कुँवर सिंह बुढ़ापा में तलवारे ना उठवलन, बलुक अंग्रेजन के खदेड़बो कइलन। उनका जुझारू चरित्र से प्रभावित होके पूरा भोजपुरी लोक झूम उठल, गा उठल। पँवरिया, धोबीअऊ, कहरऊ, फगुआ गीतन में कुँवर के शौर्य गाथा भोजपुरी लोक गवले बा। सैंकड़न फुटकर कविता से लेके खण्डकाव्य आ महाकाव्य के दर्जनो रचना आ नाटक कुँवर चरित्र के ऊपर साहित्यकार लोग रचले बा। ई सब केहू के आदेश पर नइखे नू भइल, स्वतः स्फूर्त भइल बा। खाली क्षत्रीय भइला से उनका महानायकत्व के नकारल कहाँ तक उचित बा?

एही से हम कहत बानी कि प्रगतिशीलता का आड़ में प्रगतिवाद आ जनवाद से भोजपुरी कविता के अहित कइला के कोसिस हो रहल बा। जाति आ वर्ग के आधार पर आ राजनैतिक विचारधारा से प्रभावित होके साहित्य के आकलन–मूल्यांकन भोजपुरी साहित्य के सोगहग सही रूप पाठक के सोझा नइखे आवे देत आ ओकर व्याख्या–विश्लेषण गलत ढंग से कर रहल बा। साहित्यकार के आत्ममुग्धता आ अपने मुँह मियाँ मिट्ठू ढेर नोकसान पहुँचा रहल बा। हम जे लिखनी, अब तक नइखे लिखाइल। एह से बढ़िया नइखे लिखाइल, जइसन कहनाम सही, सत प्रगतिशील आ शाश्वत के ऊपर परदा डाले के के काम कर रहल बा।

भोजपुरी कविता के परम्परा बड़ा समृद्ध बा, बाकिर नकरात्मकता के बल से सकारात्मक वस्तुअन के पीछे छोड़ देवे, अलोपित कर देवे के राजनीतिक चकरचाली अहितकर बा। बनावटीपन आ विचार के थोपा–थोपी से कविता अपना मूल जड़ से उखड़ रहल बिया। जीवन–प्रकृति से जुड़ के बिना वैचारिक कथरी ओढ़ले जवन साहित्य रचल गइल बा ओके महत्व दिहल जरूरी बा, आ आगे ओइसनके महत्वपूर्ण रचनाधर्मिता बनल रहे, एह पर बल दिहल जाये के चाहीं। भेदभाव पूर्ण नकारात्मकता दूर होखे के चाही। रचनाकार आ आलोचक दूनो खातिर डॉ. अशोक द्विवेदी के कथन उहें के काव्य संग्रह 'कुछ आग कुछ राग' के भूमिका 'अछरे अछर सबद बनि भाखा....' के अंश उद्धृत करत आपन बात चाहत बानी– "एघरी जबकि साहित्य परखे वाला कुछ लोग कविता के ओकरा मूल से काटे पर उतारू बा, ई काम अउर कठिन हो गइल बा। बनावटी, चमत्कारपूर्ण, अतिवैचारिक आ कला से बोझिल कविता, आम आदमी के पल्ले ना परे। प्रेम आ प्रकृति से विलग भइल, मानव प्रकृति से अलग भइल हऽ। प्रत्यक्ष लउकत साँच से आँख फेरल हऽ। प्रेम आ प्रकृति त' कविता सिरजन' के मूल आधार रहल हऽ, फेरू अचके ओकरा से परहेज काहे?"

स्पष्ट बात ई बा कि अइसन परहेज नकारात्मक प्रवृत्ति के बढ़ावा दे रहल बा। प्रेम आ प्रकृति के नकार के आदमी–आलोचक भा साहित्यकार नैसर्गिक भाव के नकार रहल बा आ साहित्य के मूल्य उद्देश्य–आदमी के आदमी के जोड़ल आ आदमी के आदमी बनवले रखला से भटक रहल बा। प्रगतिशीलता के आड़ में प्रगतिवाद आ जनवाद के नाम पर आदमी बहुत कुछ भइल चाहे ना, बाकिर आदमीयत से दूर भइल जा रहल बा। ●●

गीत

शिवजी पाण्डेय 'रसराज'

हम गरीबने पर अइसन, अन्हेर काहें?
देहि धुनलो पर खइला में देर काहें?
दिन भर करत-करत काम, झाँवर हो गइले चाम,
छिन भर देहिया के सुबहित ना, मिलले आराम,
नीक कइलो पर विधना क फेर काहें?
का अंजोर का अन्हार, एकही लेखा हमार,
कबो सूखा के मार, कबहीं ठरवत टुसार,
महँगी घहरेले हमरे, मुड़ेर काहें?
कहलऽ आई सुराज, होई समता के राज,
ऊँच-नीच, भेद-भाव, रहित होई समाज,
हमके तनकी सा, उनका के, ढेर काहें? ●●

■ ग्रा०पो०-मैरीटार, बलिया

भोजपुरी गीत के भाव-भंगिमा

डॉ. अशोक द्विवेदी

[भोजपुरी साहित्य सम्मेलन पत्रिका के 'गीत–विशेषांक' (वर्ष 2000) में छपल आलेख, जवन बाद में 'धार के खिलाफ' गीत–संकलन का पीठिका के रूप में 2001 में छपल]

कविता के बारे में साहित्य शास्त्र के आचार्य लोगन के कहनाम बा कि कविता शब्द–अर्थ के आपुसी तनाव, संगति आ सुघराई से भरल अभिव्यक्ति हऽ। कवि अपना संवेदना आ अनुभव के अपना कल्पना–शक्ति से भाषा का जरिये कविता के रूप देला। कवनो भाषा आ ओकरा काव्य–रूपन के एगो परंपरा होला। भोजपुरी लोक में 'गीत' सर्वाधिक प्रचलित आ पुरान काव्य–रूप हऽ।

जेंतरे हर काव्य–रूप (फार्म) के आपन–आपन रचना–विधान, सीमा आ अनुशासन होला, 'गीतो' के बा। दरअसल गीत एगो भाव भरल सांकेतिक काव्य–रूप हऽ, जवना में लय, गेयता आ संगीतात्मकता कलात्मक रूप में रहेला। शब्द–अरथ के सुघर बिनावट का साथ–साथ आंतरिक संगति के एकरा में बहुत महत्व बा। केहू पुरान साँचा में नया ढंग से भावाभिव्यक्ति का परंपरा के आगा बढ़ावेला, केहु पुराना साँचा–ढाँचा में कुछ नया जोरि मिलाइ के अपना समय–सत्य के उकेरेला आ केहू पुराना साँचा तूरि के नया साँचा–ढाँचा गढ़ेला। महत्व तीनों के बा, काहें कि तीनू में अपना समय के जीवन आ परिवेश रहेला।

गीत का संरचना में भाषा के सार्थक, सुनियोजित इस्तेमाल गीत के सार्थक प्रभाव (इम्प्रेशन) देला आ ओकरा के असरदार बनावेला। गहिर असर डाले वाला गीतन में वास्तविक जीवन के भाव–सघनता, तरलता आ अनुभूति के गहिर व्यंजना रहेले। कवनो गीत के 'टोन', लय आ ध्वन्यात्मक अनुगूँज ओकरा संप्रेषणीयता के अउर बढ़ावेला। लोकगीतन का अनगढ़ संरचना में, मर्म छूवे आ झकझोर वाला शक्ति एही कारन बा। गीत के एगो लमहर परंपरा भोजपुरी लोक–साहित्य में बा, जवन अधिकतर वाचिक बा। एम्मे लोकजीवन के हूक–हुलास, राग–रंग आ आँच देबे वाला साँच का साथ प्रेम–विरह के मार्मिक व्यंजना बा। पुरुष प्रधान गीत बिरहा, चइता, फगुवा, कहरवा आ नारी प्रधान कजरी, सोहर, झूमर, संझा–पराती, जेवनार, जँतसार, छठ, बहुरा आ बियाह के गीतन में स्रम, सपना, हुलास, हँसल–अगराइल, पीरा आ अहक–डहक; सुनवइया के बरबस खींचे आ बान्हे के सामर्थ से संपन्न बा। इहे ना, देवी–देवतन के मनावन–रिझावन आ आत्मनिवेदन कूल्हि बा एमे। लोककंठ से फूटल, दूर ले, बिना प्रचार–प्रसार के सहजे पसरल भोजपुरी के ई गीति–परंपरा कतने नया साँचा आ लय गढ़लस।

प्रेमरस से भींजल, विरह के पीर से भरल कसक उपजावे वाला भाव प्रधान निरगुनिया, गीतन के सिरजनहार महेन्दर मिसिर एगो नए राग आ गीत–रूप दिहले– 'पुरबी'। एह गीतन के भावावेग आ लय में भाषा के सीमा टूटि जाले। ध्यान से देखल जाव त ई बात साफ हो जाई कि एह गीतन में भाव–सघनता शब्दन के चुनाव आ बइठाव में कुशल संयोजन बा। लोक–संपृक्ति आ संप्रेषण खातिर कमोबेस एह तरह के शब्दन के इस्तेमाल करहीं के परेला, जवन लोक–व्यवहार में आपन अर्थ गौरव आ आकर्षण राखत बाड़न स। एकरा साथे–साथ भाव–संप्रेषण का अनुकूल एह तरह के लय–विधान बनावे के परेला जवना से भाव–सघन्ता आ अनुभूति के तरलता असरदार ढंग से सुने वाला के हृदय के छू लेव।

भोजपुरी के कवि जब गीत लिखे लगलन त लोक प्रवाहित ई गीत–परंपरा कवनो ना कवनो रूप में ओ लोगन के पाछ धइले रहे। भोजपुरी गीतकारन में दोसरा भाषा लेखा कबो नया–पुरान के ताल–ठोंक झगरा ना भइल। अब्बो नइखे। एकर कारन ईहे बा कि ई कवि अपना माटी आ परंपरा से हमेशा जुड़ल–बन्हाइल रहलन स। शिल्प–संरचना बदलल, भाषा प्रयोग के तौर–तरीका बदलल, बाकि गँवई भावधारा नया–नया रूप धइ के संगे लागल रहि गइल। अपना जमीन से कटि के दुनियाँ–जहान का भवँरजाल में अझुरइला से का होइत? भोजपुरी लोक ओके सकरबे ना करित।

भोजपुरी कवि जवना उछाह से लोकराग आ ओकर पारंपरिक लय–धुन पकड़ि के आपन गीत रचेला, ओही उछाह से एह काव्य–रूप में केहू नया शिल्प–साँचा में अपना माटी के रस–गंध आ सुभावो उरेहेला। लीखि से अलगा हटि के लिखे वाला कवियन में जहाँ परंपरा से विलगाव भइलो बा, उहाँ ओकर भोजपुरिहा–संस्कार ओके भोजपुरी परंपरा से कटे नइखे देले; जे एहू से कटि कइल, समझ लीं ऊ भोजपुरी के नइखे रहि गइल। बाहर ओकर भले जान–मान भइल, भोजपुरी में ओकर पुछार ना भइल।

स्वतंत्रता–आंदोलन आ सुराज मिलला का बाद ले भोजपुरी कविता क जवन रूप देखे–सुने आ पढ़े के मिलेला ओमे राष्ट्रीय चेतना का अलावा प्रकृति के सुघराई, खेत–खरिहान, मौसम, प्रेम–भावना, जिनिगी के दुख–सुख आ भक्ति के स्वर प्रधान बा। गौर कइला प ई साफ बुझाई कि गँवई जीवन आ प्रकृति एह पूरा कविता–समय के

आलंब आ प्रतिपाद्य रहल बा। लोक–गीत लोक–अनुभूति आ ओकरा रुचि–प्रतीति के गीत संसार हऽ। सुख–दुख, सोच–विचार, अनुभव–व्यवहार हर ममिला में लोकधर्मी। किसान–मजूर आ मेहरारू एह संसार के वाहक आ भोक्ता हउवन त घर–गिरहस्थी, खेत, खरिहान, बाग–बगइचा, पोखरा–ताल–नदी आ पहाड़–जंगल एकर क्षेत्र हउवे। एकरा बाद कुछ बा त ऊ परदेस हऽ। बाकिर ई क्षेत्र अब बढ़ि–पसरि के प्रदेश, देश, देश के राजनीति, शासन–प्रशासन, सड़क–संसद, सामाजिक–सांस्कृतिक विघटन, मानवी–रिश्ता आ मूल्यन के बिखराव तक पहुँच गइल बा। एह तरह से ई अपना लोक दृष्टि में आधुनिकता आ उत्तर आधुनिकता के काम भर समेट चुकल बा।

भोजपुरी कवि नकली क्रांतिधर्मिता आ जन–पक्षध रता के भोंपू ना बजावे; ऊ जन–चेतना के वहन करेला। जवन जथारथ बा ऊ बा, आ जथारथ ई बा कि दिन–रात, हाड़तोड़ काम कइला का बाद जो दू घरी कहीं ओठँघे–बइठे आ सपना बुने के संजोग भेंटाला त ओहू कल्पना–विहार का अवस्था में ओकर गरीबी कवनो ना कवनो रूप में झलकेले–चाहे ऊ पेवन आ चकतिये लेखा काहें ना होखो। ऊ धरती–आकास का बीच घटे वाला हर घटना–दुर्घटना के अपना देंहि आ दिल–दिमाग पर अनुभव करेला। ई बात दीगर बा कि ओकर धरती गँवई खेत–खरिहान क धरती ह, आ ओकर दुनिया एह, धरती पर नया–नया रूप धारे वाली प्रकृति के दुनियाँ हऽ–

चन्दा ओढ़वे राति चानी के चदरा
सूरुज उड़ावेला सोने के बदरा
बदरे में चकती लगावे मोरी नइया।
मजे-मजे काम होखे रसे-रसे पानी
ताले-तलइया में बिटुरल बा पानी
सोने क मछरी कि रूपे क रानी
पियरी पहिरि बेंग कइठेले ज्ञानी
इनरासन झूठ करे हमरी मड़इया।
सननन, सन सन बहेले पुरवइया।

(मोती बी0ए0)

मोती बी0ए0 अपना काव्य–संग्रह 'सेमर के फूल' में फेंड़, फूल, सुगना आ झुलनी जइसन प्रतीकन से जीवन–दर्शन के अन्योक्तिपरक प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति त कइलहीं बाड़न, खेती–बारी आ किसान–जीवन के यथार्थ चित्रो उरेहले बाड़न। एम्मे कल्पना के हवाई उड़ान आ रुमानी छिछिलपन नइखे– खेतिहर जीवन के एगो जियतार चटक रंग बा, जवन अपना लालित्य आ रागात्मकता से लसल बा। मोती बी0ए0 गँवई जीवन के कुशल चितेरा बाड़न। एही से उनका गीतन में प्रकृति के सुघराई का साथ–साथ किसान के संघर्ष, दुख–दरिद्रता आ अवसाद के मर्मस्पर्शी अभिव्यक्ति भइल बा–

पुसवा आ मघवा बिपतिया के खनिया
एही में होले वसूली लगनिया
साहब के कुड़की सभापति के घुड़की
ढेबुआ की खातिर उजारे पलनियाँ
हाकिम-दइब हतियार हो सजनी!

(मोती बी0ए0)

ई अनायास नइखे कि प्रकृति के प्रति भोजपुरी कवियन के गहिर लगाव गीतन में चित्रित भइल बा। हिन्दी के काव्य–धारा में आइल बदलाव, भोजपुरियो के प्रभावित कइले बा। अनिरूद्ध, हरेन्द्रदेव नारायण, भोलानाथ गहमरी, प्रशान्त आदि कुल्हि कवियन पर हिंदी के छायावादी संस्कार आ प्रवृत्ति झलकेले। बाकिर शब्द–संयोजन, भाषा क चित्रकारी, प्रेमभावना आ रहस्यवादी प्रवृत्ति का बावजूद गीत में एगो खास किसिम के लोकज संवेदना, लगाव आ सह–अनुभूतियों देखे के मिली–

टुटही मड़इया के अइसन कहानी
अहदन का पानी में खउले जवानी
रोवेला छौंड़ा मजूरवा, मेहरिया
देखे बजरिया के राह
सँझिया के उसरल बजार!

(अनिरूद्ध)

बिना छुवल बाजेला सितार!
पतझर में दरद, माघो में पिरीत गीत
बरखा में गाईले मल्हार!

(हरेन्द्रदेव नारायण)

सजधज के सोनकिरिन उतरे मुड़ेरिया
ओठ पर धरे केहू गुलाब के पँखुरिया
टाँकि गइल सात रंग बिंदिया लिलार के।

(भोलानाथ गहमरी)

भोलानाथ गहमरी के गीत–संसार, प्रकृति आ प्रेमपूरल जीवन के सुघराई आ मनोहारी प्रतीति के संसार हऽ। लय, गेयता, संगीत, रागबोध से भरल उनका गीतन में लोकज संवेदन का कारण एगो चटक क्षेत्रीय रंग आ अपनापन आ गइल बा। 'बयार पुरवइया', 'अँजुरी भर मोती' आ 'लोकरागिनी' में घर–अँगना, खेत–खरिहान का साथ–साथ प्रेम के लौकिक आ अलौकिक दूनों रूप देखे के मिली। जहाँ उनकर गीत छायावादी, रहस्यवादी प्रेम भावना के छोड़ि के लोकज रूप धइले बा, ओम्मे दोसरे आकर्षण आ गइल बा–

महुवा के फूल झरे पलकन के छँहियाँ
सारी रात महके बलमु तोरी नेहियाँ
XXX XXX XXX
कीचड़ से नीलकँवल दियना से कजरा
चिटुकी भर नेह से सँवर जाला जियरा।

(भोलानाथ 'गहमरी')

छायावादी रहस्यलोक आ 'बलमुआ', 'पियवो' का संसार से बाहर निकल के जहाँ भोजपुरी गीत देश, समाज, खेत–बधार आ बेवस्था के आपन विषय बनवले बा, उहाँ ओकर भाव–भूमि लोकज हो गइल बा। एही से एह गीतन में आर्त्त आ त्रस्त ज के सुख–दुख, आस–निरास, पीरा

आ आक्रोश मुखरित भइल बा। एह गीतन में भोजपुरी के साहित्यिक बाकि प्रकृत रूप प्रगट भइल बा। सुराज का बाद आमजन के दारुण स्थिति भोजपुरी गीतन में कुछ एह तरह से प्रकट भइल कि ओ से गहिर निराशा आ अवसाद के झलक साफ लउके लागल–

हमनी का आह से जे धुआँ उठी ओकरा से
लोक काँपि जइहें सरग भरि जइहें
गाँव-गाँव मड़इन से आगि उठी लपलप
देखत-देखत में महल जरि जइहें।

(रामविचार पाण्डेय 'बिनिया–बिछिया')

बटिया निरेखत नयन पथराइल
हमरी दुअरिया सुरजवा ना आइल
कवनी नगरिया रे रहिया घेराइल
बापू के सपना के टूटल गुमान!
टूटि गइल थून्ही कोरो, ढहली मड़इया
फाटल करेजा पर लगान के चढ़इया
मनवाँ में पीरा बा नयनवाँ में लोर बा
केने बा समाजवाद जेकर भइल सोर बा!

(जगदीश ओझा 'सुन्दर', जुलुम भइले राम)

जगदीश ओझा 'सुन्दर' अपना गीत–संसार में गँवई समाज का साथ–साथ पूरा देश के आंतरिक दुर्व्यवस्था के चिन्दी–चिन्दी उघार देत बाड़न। 'जुलुम भइले राम' कविता–संग्रह में अइसन कई गो मार्मिक आ मन के झकझोरे वाला गीत बाड़न स, जवना में जथारथ के खाली जस के तस नइखे परोसल गइल, बलुक ओकरा तह में घुसि के असलियत के उघारे के कोसिस कइल गइल बा। नोंचात–चोंथात आ चूसल जात आम आदमी एह गीतकार के अइसन हड्डी अस लागत बा जेके जुल्मी आ शोषक कुक्कुर लपटि के नोचे में लागल बाड़न–

केहू माँगे घूस केहू माँगे नजराना
केहू माँगे सूद मूरि, केहू मेहनताना
कुकुर भइले जुल्मीजन, हाड़ भइल जिनिगी
नदी भइल नैना, पहाड़ भइल जिनिगी।

(जगदीश ओझा 'सुन्दर')

एम्मे शक नइखे कि एह दौर के गीतकारन के सर्वाधिक प्रिय विषय प्रकृति रहल बिया। गँवई परिवेश के करीबी दर्शन अपना आप में सुन्दर आ ललित बा, बाकि अपना संवेदना आ अनुभूति के लोक व्यवहार आ अनुभव से जोरि के ओकर प्रभावपूर्ण प्रस्तुति कइल कठिन बा। भोजपुरी गीतन में ई प्रभावान्विति, एगो खास किसिम के चमक का साथ उभरल बा–

ललकी थरियवा में दियना के जोति लेके
उतरल आवेला बिहान।
सनन सनन जब बहेले बेयरिया
टटिया के ओटवो उड़ावेले चुनरिया
बदरा के देखि-देखि बिहरेला प्रान रे

(प्रभुनाथ मिश्र, 'हरियर हरियर खेत में')

रितु-अनरितु में कवन विधि तुलिहें
गरमी के दिन में गुलाब कइसे फुलिहें
संग-संग सनके लागी तपति बयार हो...
कवन वन गइलै?

(रामजियावन दास 'बावला', 'गीतलोक')

कारिख का कोखी से लाल किरिनि के जनम कहाई
धुरियाइल धरती का आँचर में मोती बिटुराई
दमकी हीरा दिन दुपहरिया सरग-पताल सिहाई
जीतत चली जिनिगिया रन, मन मउवति के मुरुछाई।

(अविनाश चंद विद्यार्थी, 'सुदिन')

निमिया के गछिया से फूस के मड़इया पर
उतरेला सोना अस भोर

(रामनाथ पाठक 'प्रणयी')

फजीर के अँजोर के प्रतीकात्मक ढंग से चित्रित करे के परंपरा भोजपुरी गीतन में सुरुवे से बा। भोजपुरी गीतकारन के अभिजात नगर जीवन के बनावटी दुनिया, संवेदना आ रस से हीन जिनिगी में कवनो रुचि नइखे। ऊ जवन देखत सुनत अनुभव करत बा ऊ दुनियाँ खेत–बारी, नदी, पहाड़ के गति से बनल दुनियाँ हऽ। ऋतु परिवर्तन का साथ सजे–सँवरे, जरे–झउँसे वाली प्रकृति से ओकर अटूट रिश्ता बा। बोवाई, रोपनी, सोहनी आ कटिया–दँवरी में लागल खेतिहर मजूरन के उछाह, उमंग, चिन्ता–फिकिर आ पीड़ा के ई कवि अपना हिया का आँखि से देखत बाड़न स। कभी–कभी आधुनिकता का चकाचौंध में मजा लूट रहल लोगन के देखि के ओकरा भीतर खीझि अउर असंतोषो, उभर जाला, बाकि आखिरस फेरु ओही गँवई संसार का कारुणिक नियति के साक्षात्कार कइल, जइसे ओकर मजबूरी बा आ एकरा चलते आक्रोशो बा–

कुहूँकत-कुहुँकत बीति गइले जुगवा
गरजि-गरजि अब गाउ रे कोइलिया।

(प्रभुनाथ मिश्र)

सटल पीठ से पेट जहाँ पर
जहाँ भूख से उठल करुन स्वर
दाल भात पर नजर परल बा
दूलम सतुआ साग कोइलिया,
ई गरीब के बाग कोइलिया।

(रामनाथ पाठक 'प्रणयी')

जनजीवन के दुर्दशा आ दुख के चित्रण करत खा भोजपुरी कवि ओकरा उल्लास, उमंग, उछाह और सुघराई के नजरअंदाज नइखे करत, काहें कि ओकरा जथारथ में ईहो बा। जवानी, प्रेम आ हुलास परिस्थिति का मुताबिक अपना जनवादियन लेखा खाली भूख आ रोटी आ कल्पित क्रांतिधर्मिता के ई कवि अपना गीत में नइखन स थोपत, इहाँ त सुघराई आ प्रेम अपना तिताई का साथ सोझा आवत बा, प्रेम, विरह, गरीबी आ दुख के अभिव्यक्त करे में प्रकृति ओकर आलंबन–उद्दीपन बनत बिया–

जड़वा के रतिया, गरीबवन के छतिया
पछुवा बहेला बिछीमार।
XXX XXX XXX
अँगिया में धधकत बा अगिया गरिबिया के
अँखिया में छलकत बा लोर।
XXX XXX XXX
चुपके चोर चोरा ले भागल सरबस माल जवानी
टूटल नीन, नेह के घइला फूटल, ढरकल पानी।
XXX XXX XXX
दिन भर उड़ेला मैना
थाकि जाला दूनो डैना
दुनियाँ छिपल बाटे जलवा पसार के
घरवा में घूमे गोरी सँझवत बार के!
(रामनाथ पाठक 'प्रणयी')

रागात्मक अनुभूति के कोमल व्यंजना आ कल्पनाप्रवण भावुकता भोजपुरी के पुरनका अधिकांश कवियन में रहल बा। कहीं–कहीं ई बौद्धिक चेतना आ ज्ञानात्मक संवेदना से लसि के उभरल बा, त कहीं निछक्का रागात्मक आ संवेदनात्मक रूप में। संदर्भ–चित्र, भाव–चित्र आ रूप–चित्रन से सजल एह गीतन में गीतकार के आत्मानुभूति, गहिर भावबोध आ अभिव्यक्ति–कौशल देखे लायक बा। भोजपुरी काव्य भाषा के साहित्यिक रूप एह तरह के गीतन में अउर निखरि गइल बा–

घटा हटा निकले रथ ताने धनु सतरंगी
किरन-रास खींचे रवि पहिया नाचे जिनगी
उड़े धजा विहग पाँति फर-फर बन, मग-संगी।
(अनिरूद्ध)

बाहर के साँकल के पुरवाई झुन से बजा गइल
आँगन के हरसिंगार दुअरा के महुवा जस
चू-चू के माटी पर अल्पना सजा गइल।
(पाण्डेय कपिल, 'भोर हो गइल')

मधुवन झउँसि गइल फुलवन के
झाँवर भइल सुरतिया
कुंअना गइल पताल,
ताल-तलइन के दरकल छतिया
सिकुरि-सिकुरि अझुराइल नदिया
गतरे गतर सेवार के।
पानी अतरल धार के।
(जगन्नाथ, 'पाँख सतरंगी')

इन्द्रधनुष में सात रंग कूँची से भरे चितेरा
जाल डाल सागर में डोरी खींचे चतुर मछेरा
के वंशी के सुर फूँकेला भौंरन के गुंजार में।
(गणेशदत्त 'किरण', 'अंजुरी भर गीत')

गोरकी बिटियवा टिकुली लगा के
पुरुब किनरवा तलैया नहा के
चितवन से अपना जादू जगा के
ललकी चुनरिया के अँचरा उड़ाके
तनिक लजा के आ हँस-खिलखिला के
नूपुर बजावत किरिनिया क निकलल!
(रामेश्वर सिंह 'काश्यप')

लोकधर्मी भावभूमि पर, लोकराग में ठेठ लोकज ढंग से रचाइल–बिनाइल गीतन के त बाते कुछ अउर बा। एम्मे भोजपुरी के आपन संस्कार आ पहिचान झलकत बा। भाषा के सुभाव का लेहाज से ई गीत जइसे बेमेहनत के सहजे बहरिया गइल बाड़न स। एह गीतन में ठेठ शब्दन के सुघर सार्थक प्रयोग अउर असर डालत बा–

छनियाँ पर लतरल बा झिंगुनी तरोइया
दुअरा बरधिया के जोर
अठिया बँड़ेरिया गुटुरगूँ परेउवा
बचवा भइल अँखफोर।
(बलदेव प्रसाद श्रीवास्तव)

भरल घइलवा सनेहिया के ढरकल
दूधे नहाइल नगरिया
बीचे बजरिया में छवि के हेराइल
रस में गोताइल नजरिया
झूम उठल मस्ती में गँवई सिवान रे।
उतरल तलइया में गोर-गोर चान रे!!
(जगन्नाथ, 'पांख सतरंगी')

जड़वा के खेतवा पर चढलि जवनियाँ
गेहुवाँ पर बरसल सोनवाँ के पनियाँ
बुँटवा में तिसिया धधाइल रे
आइल बसंत रितु आइल रे!
(राहगीर, 'भोजपुरी के गीतकार')

नइहर मोर लइसे जलभर बदरा
मोरे ससुरे ओइसे लहरे सिवान हो!
अपने आपन करीं केतना बखान हो
सासु मोरि धरती, ससुर आसमान हो!
(हरिराम द्विवेदी, 'नदियो गइल दुबराय')

अँगना में तुलसी के बिरवा परल घवाइल बा
पुरवा का लहरा में कइसन दरद सनाइल बा
अमरइया के छाँह ठाढ़ हो गइल काढ़ के फन!
कहाँ निरेखीं आपन सूरत, दरक गइल दरपन।
(भगवती प्रसाद द्विवेदी)

जगमग जरेले किरिनिया के बाती
अँगना में आवेला अँजोर।
चनिया के चदरा चनरमा बिछावे
जोन्हिया के अँग-अँग गहना गुहावे
गोरकी के बढ़ि जाले आजु बड़कई
बुलुक बुलुक बुलुकावेले करियई
अँखिया से आवेले अँसुइया के धरिया
ओसिया ओही क हवे लोर!
(मुख्तार सिंह 'दीक्षित')

गोबरा से लीपल अँगनवा निहारे
ए राजा, अबकी कमइया मुआर

फाटत करेजवा के सबुर धरइहऽ
ए रानी हमनी के हईं बनिहार!
(मधुकर सिंह)

शिल्प आ भाषा के बिनावट का दिसाईं सतर्क गीतकारन में परंपरा से कुछ अलगा हटि के प्रगति, प्रयोगधर्मिता आ नया अभिव्यक्ति देबे क छटपटाहट लउकत बा। हिन्दी में आइल नवगीत के नवधारा के प्रभाव का कारन ई गीतकार अपना रचना में बिम्ब, प्रतीक आ संकेत का जरिये गीत में नया रंग भरे के उतजोग कइले बाड़न। हिन्दी में ई काम कहीं शहरी शब्द–संजोजन से आ कहीं लोकज शब्द आ मुहावरन का प्रयोग से संभव भइल, बाकि भोजपुरी में गाँव, प्रकृति आ जनजीवन का भाव–भंगिमा के नया लय, नया शब्द–योजना, प्रतीक आ रूप–चित्र का साथे परोसला का कारण एह गीतन में अभिव्यक्ति के एगो नये सुघराई प्रगट भइल–

ललकी किरिनया के डेंगिया में बइठल
जुड़वा खोलत मुसुकाय
जुड़वा तोपाइल दहकत देहियाँ
अगिया पियत भहराय
सँसिया के बहे जे बयार
सखि रे धरती के भरे अँकवार!
(उमाकांत वर्मा, 'गीत जे गूँजल')

पुरुब क्षितिज पर/फूल भोर के खिले
गगन उजराये
फूल साँझ के जूड़ा में खिले
बने इंजोरिया, गाये...
किरिन पाँख में ले लपेट
चिरई फुनगी पर जाये!
(विश्वरंजन, 'एक पर एक')

पोंछ गइल आँतर के/गढ़ुवाइल बात
सिकहर पर झूल रहल/बसियाइल रात
झाँक रहल गीतन के रागिनी अरूप!
छितराइल सुधियन के एक पसर धूप!
(पी0 चंद्रविनोद, 'केतना बेर')

किलकारी नदियन के
गोद में पहाड़ी के
थथमल बा रूप के हिरन!
आँगन में पसरेला अँजुरी भर धूप
मरुआइल चंद्रमुखी/मरुवाइल रूप
सूरज पर पहरा परे!
फूल हरसिंगार के/मन का चउतरा पर
चुपे चुपे रात भर झरे!
(परमेश्वर दुबे 'शाहाबादी')

गाँव होखे या कस्बा आ शहर–ओकर विसंगतिपरक आ अभावपूरित, अमानवीय माहौल साधारण आदमी के दुख, परेशानी आ चिन्ता के अउर बढ़ा देले बा। गाँव अब पहिले वाला गाँव नइखे। ओकर भोलापन, सोझबकई, आपुसी भाईचारा धीरे–धीरे बिला रहल बा। प्रकृति आ ओकरा सुभाव से रँगल पुरनकी रागात्मक संवेदना आ ओसे जोराइल अपनापा, शहरी कुप्रभाव आ राजनीतिक छल–छहंतर का आँच से झुलस रहल बा। अइसना में भोजपुरी गीत के 'थीम' लय आ उद्देश्य काहें ना बदलित? ओकरो पर ओइसहीं प्रभाव परल–

तरकुल के छाँह भइल जिनिगी!
रेत भइल नदी के कहानी
डभकत बा दिन जइसे अदहन के पानी
चूल्हा के धाह भइल जिनिगी!
(सत्यनारायण, 'काव्या' 93)

जिनिगी का बखरा में घाव के अगोरिया
कबहूँ अन्हार घेरे कबहूँ अँजोरिया
राति राति जोगवल कुँवार
सपनवाँ दुअरिये तँवाला!
(रिपुसूदन श्रीवास्तव, 'काव्या' 93)

महँगी के बहँगी पर देह के सुखौता
बेकल जवानी पर जीभि के सरौता
हाथ का तिजोरी में, दउलत पसेना के
पेट में बा लंका-दहन!
(परमेश्वर दूबे शाहाबादी, 'उरेह'–5/6)

सपना के होला जहाँ होलिका दहनवा
मनवाँ में खउलेला प्रीति अदहनवा
मयगर ऊ अँचरा के छाँव कहाँ रे,
दउर-दउर खोजीला गाँव कहाँ रे!
(कुमार विरल, 'पाती'–6)

मन गिरगा भटक रहल लूह चले ताल में
सपनन केपाँख फँसल कवन महाजाल में
सोझहीं धनकत बाटे पुलुई जजात के!
(अशोक द्विवेदी, 'पाती'–6)

देवता घूमत बा उघार खोरी-खोरी
गोड़ तर फाटेला दरार चारू ओरी
मुट्ठी भर बीया के हो गइल तबाही
आसा के खेती में लागलि बा लाही
आँखी से आँसू ना गिरल करे ठार!
(आनन्द संधिदूत, 'एक कड़ी गीत के')

भोजपुरी कविता जेंतरे अपना ठेठ शब्द संस्कार आ मुहावरेदारी का संगे भोजपुरी के भाषिक तेवर; नाटकीयता आ सांकेतिकता के इस्तेमाल से, अपना गीत–'संरचना देखि के– ओकरा बिनावट से निसरत अर्थ गांभीर्य आ व्यंजना देखि के। दुख आ पीड़ा के ओकरा कारन आ परिवेशगत विसंगति का साथे उकेरे में भोजपुरी के गीतकार सफल रहल बाड़न। लोकधुन के काव्य रूप होखे आ नया संरचना–शिल्प के, गीत रचत खा भोजपुरी गीतकार के काव्यानुभूति जमीनी जथारथ आ लोकमुहावरन से अपना के संपृक्त क के आपन आकार ग्रहण करेले।

अपना भागे कुदिन तबाही
जलन घुटन ठहराव
ठंढा सूरज धनकत गाँव!
(गंगा प्रसाद अरुण, 'पाती'–22)
कोख के करेज कहीं कुहुँके पलुहारी पर
धनियाँ के ध्यान जाके अटकल बनिहारी पर
अजबे ई मनवा परल पसोपेस में!
(दक्ष निरंजन शंभु, 'एक पर एक')
जाड़ा गरमी बरखा न जनतीं
गोहूँ ओसवलीं त भूसा बनलीं
काहें बरध सब खेतवा चरलें
हम भइलीं कउड़ी के तीन
केकरे नाँवे जमीन पटवारी
केकरे नाँवे जमीन!
(गोरख पाण्डेय, 'भोजपुरी के नवगीत'–7)
समय बहेंगवा बेलगाम
मोर फाटल फाँड़ न बूझे
एह अन्हार जंगल में कवनो
ऊजर राह न सूझे
चिरई केतनो आस जोगावे बाकिर
रोजे जाल फँसे!
(अशोक द्विवेदी, 'पाती')

छोट–मोट आदमी के नियति बा कि ऊ जवन आस–बिश्वास आ भरोस लेके आपन जांगर तूरेला, बेवस्था का बिरोधाभासी घटाटोप में, घेराइ के जहाँ के तहाँ पहुँच जाला, कबो–कबो त ओकर कूल्हि सपना जथारथ का चकाचउँध से छिन्न–भिन्न हो जाला। एह कारुणिक स्थिति के भोजपुरी गीतकार अलग–अलग कोण से देखे आ देखावे के कोसिस कइले बा लोग। अपना जमीन आ काव्य–परंपरा से अंदरूनी रिश्ता बना के कुछ कहे का प्रक्रिया में जदि प्रयोगधर्मिता आइलो बा तबो गीत के कड़ी आ संगति टूटल नइखे। सजग कलात्मक रचाव का कारन ई गीत अउर अर्थगर्भ आ असरदार हो गइल बाड़न स। गीत में जहाँ कहीं नाटकीयता आ कटाक्षपूर्ण व्यंग्य व्यंजित भइल बा, उहाँ जथारथ का विसंगति के उघारत ई असर कुछ अउरी बढ़ जाता–

धीरे-धीरे शहर गाँव में, देखा कइसन धँसे लगल हौ
सास के मुँह पर नई बहुरिया उलटे पल्ला हँसै लगल हौ!
(कैलाश गौतम, 'पाती',22–23)
लोकतंत्र अबरा के मेहर
ई मेहर सबकर भउजाई
सुनि लऽ भाई!
(सत्यनारायण, 'कविता' 4)
काम बाटे कतना ले बीने के बरावे के
रतिया बिछावे के अँजोरिया सुखावे के
हाँके के बा तरई उड़ावे के बा चान
हमें सोचहूँ न देत बाटे पेट के पहाड़!
(आनन्द संधिदूत, 'पाती'–6)
घर लूटे क साजिश होत बा दुआरे
मुखिया चुपचाप कहीं बइठल पिछुवारे
अँगना क लोग भइल काठ क गिलहरी!
(कमलेश राय, 'पाती' 22)
उपवन-उपवन बगिया-बगिया
नाच-नाच गावे कागा
कोइल नजर बचा के भागल
ना केहू पीछा आगा
गरम हवा के गश्त तेज बा
अमराई के छाँव तले।
(सूर्यदेव पाठक 'पराग', 'कविता'–6)

भोजपुरी गीत के अपना भावभूमि, प्रतिभा, दृष्टि आ रचना–कौशल से नया–नया भंगिमा आ ऊँचाई देबे में कतने पुरान आ नया गीतकार लागल बाड़न, ओह सब लोगन के एह छोट आलेख में समेटल कठिन बा। गीत के भाव–भंगिमा बनावे में जुटल एह लोगन में माहेश्वर तिवारी, पाण्डेय आशुतोष, ब्रजभूषण मिश्र, प्रकाश उदय, रामेश्वर प्रसाद सिन्हा 'पीयूष', रिपुंजय निशान्त, दयाशंकर तिवारी, शम्भुनाथ उपाध्याय, हरिवंश पाठक गुमनाम, आनन्द संधिदूत, कमलेश राय, गंगा प्रसाद 'अरुण', भगवती प्रसाद द्विवेदी आदि के नाँव लिहल जा सकेला।

भोजपुरी के पत्र–पत्रिका खासकर 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका', 'पाती', 'समकालीन भोजपुरी साहित्य' आ 'कविता' स्तरीय ढंग के गीत प्रकाशित कर रहल बाड़ी सन। भोजपुरी गीतकारन के नजर अब आज के जिनिगी के जद्दोजहद, संघर्ष, विचार–दर्शन आ ओह अमानवी स्थितियो पर जा रहल बा, जेमे आदमी के जुझला–जोतइला आ आत्मसंघर्ष का संगे–संगे ओकर असहाय अवस्था, किंकर्त्तव्यविमूढ़ता आ संवेदनहीन मनःस्थिति आ–जा रहल बा। एम्मे शक नइखे कि कुछ खास राजनीतिक विचार–आग्रह में रचाइल गीतन में, सत्यानुभूति आ मौलिक संवेदन का बजाय, बनावटी जथारथ आ पूर्वाग्रही सोच के उरेह गीत का आंतरिक संगति में नइखे बइठ पावत। एह नाते अइसन रचनाकार 'गीत' के दिसाईं विरोधी रुख अपनावत हिंदी के अतुकान्त कविता का सपाटबयानी का ओर मुड़ रहल बा। बाकिर, अरसा से भोजपुरी कविता के सजावे–सँवारे में लागल समर्थ गीतकार एहू खातिर चिन्तित लउकत बाड़न कि अत्यधिक आधुनिकता के मोह, प्रयोगशीलता आ चमत्कार–सृजन का चक्कर में भोजपुरी संस्कृति आ भोजपुरी के काव्यात्मक भाषाई–खासियत मत छूट जाव; जन–जन का कंठ से प्रवाहित– सुनवइया के आंदोलित करे वाला ऊ राग–रागिनी, धुन आ लय मत तिरोहित हो जाव, जवना खातिर भोजपुरी जानल–पहिचानल जाले। ●●

सवैया छन्द आ एकर बिधान

सौरभ पाण्डेय

देवनागरी लिपि के अनुशासन में स्वर भा व्यंजन अक्षर वर्ण कहाले सऽ। कवनो व्यंजन–अक्षर स्वर के सङे भा बगैर स्वर के संजोग के लघु भा गुरु हो सकेला। कहे के माने ई, जे हर स्वतंत्र व्यंजन अक्षर, मने ऊ अगर संजुक्ताक्षर ना भइल तऽ, लघु वर्ण के होलन सऽ। आ ई जानले बा जे स्वर दू तरीका के होलन सऽ, लघु आ गुरु। एहीसे, व्यंजन का सङे स्वर के, भा कवनो दोसरो व्यंजन के, संजोगवे अकसरहाँ अक्षरन के लघु भा गुरु होखे के कारन होला। लघु–गुरु के भिन्न–भिन्न बाकिर निश्चित आवृती से पद्य–शास्त्र में गण बनेलन सऽ। कवनो बिसेस गण के भा कुछ गणन के एगो निश्चित बेवस्था से काव्य के पद (पंक्ती) बनेला। गण के एही निश्चित बेवस्था से अलग–अलग गण–समूह बनेला। जेकरा क्रमशः यगण, मगण, तगण, रगण, जगण, भगण, नगण, (यमाताराजभानसलगा) के नाँव दियाइल बा। इन्हनिये में से कवनो बिसेस गण के एगो निश्चित आवृती आ जरूरत के मोताबिक लघु आ गुरु के श्रेणी के बात हो रहल बा, जवना से पद (पंक्ती) के निर्माण होला। अइसन–अइसन एके तरी के चार पद के 'सम तुकान्त समूह' सवैया छन्द के कारन होला। कहे के माने ई भइल जे वर्ण पर निर्भर भइला के कारन सवैया छन्द वर्णिक छन्द कहाला आ हर सवैया छन्द में चार पद होला आ उन्हनीं के सरूप समतुकान्त होला। सवैया के एक पद (पंक्ती) में 22 से 26 ले वर्ण होलन सऽ। एक पद में अतना संख्या में वर्ण होखे त ऊ छन्द वृत्त कहाए लागेला। एह हिसाब से सवैया वृत्त होलन सऽ।

सवैया छन्द वैदिक छन्द ना होके बाद के भासायी बिकास के प्रतिफल हवन सऽ। एकर बिकास कालांतर में भइल आ एकर जनम अप्रभंश भासा, जेकर दोसर नाँव अवहट्ट हऽ, में भइल कहाला। भासा बिकास के रीतिकाल में ई छन्द खूबे प्रचलन में आइल। घनाक्षरी भा कवित्त लेखा ई सवैया छन्दओ मुक्तक श्रेणी के छन्द हवन सऽ। एह कारने, चार पद के सवैया में रचनाकारन से अपेक्षा रहेला के उनकर एकरूप भाव–स्फोट शब्द के रूप में चार पंक्ती (पद) में समा जाये के चाहीं। जवना तरी कवित्त भा घनाक्षरी के वृत्त के वाचन–प्रवाह एगो बिसेस लय में निबद्ध होला, ओही तरी सवैया छन्दओ लयमूलक वृत्त होलन सऽ।

सवैया के पद (पंक्ती) में सवैया के गण के अनुसार कूल्हि शब्द निबद्ध होलन सऽ। एहसे, कौ हाली अइसनो होला जे दीर्घ मात्रिक अक्षर तक के लघु मात्रिक लेखा उच्चारन करे के पड़ जाला। काहें जे गण के विन्यास के हिसाब से ओह जगहा लघु मात्रिक वर्ण बड़ुए। एहीसे हर ऊ भासा, जवन वाचिक परम्परा के निर्वहन करेले, में सवैया के पद खूब निकहे से लिखा जाला। कहे के मानी ई, जे वाचिक परम्परा के भासा में सवैया छ्न्द के रचनाकर्म कइल असान होला। अपना भूभाग के भासा भोजपुरी, अवधी, मैथिली, मगही आदि अइसने भासा हई सऽ। एक समय पद्य के भासा ब्रज भा बृज भासा रहल बा। ईहो वाचिक परम्परा के भासा हऽ। बाकि हिंदी वाचिक परम्परा के भासा ना हऽ। वाचिक परम्परा के भासा वाचन–प्रवाह के क्रम में शब्दन के अक्षरन के वर्तनी भा सरूप भाव के अनुसार स्वर आ ओही अनुसार आपन मात्रा बदल लेलन सऽ। एकर बड़हन लाभ रचनाकारन के वर्णिक छन्द के रचना करे के समै मिलेला। काहें जे वर्णिक छन्द के गण के अनुसार उनकर रूप यथासंभव बदल के उच्चारित हो सकेला। आ शब्द ओइसहीं सधात जालन सऽ। एह तरी देखल जाव, त वाचिक भासा में भावे ना, गणओ के विन्यास के अनुसार शब्द के रूप बदलल आसान होला। होला ई, जे कवनो शब्द के दीर्घ मात्रिक अक्षर अगर सवैया के पद के गण के लघु वर्ण प आवऽता, त ओकर उच्चारन शब्द के दीर्घ अक्षर के अनुसार ना होके गण के लघु के अनुसार हो जाला।

एके उदाहरन के हिसाब से देखल जाव। एगो शब्द लीहल गइल – 'सारे'। इहँवाँ, 'सारे' के 'रे' पर अगर बलाघात कम कऽ दियाव, त 'रे' के लघु रूप उच्चारित होई। एही तरे, 'नहीं' शब्द बा। एहके 'नहिं' लेखा लिखल जा सकेला। 'नहीं' के 'हीं' के 'हिं' करत उच्चारन कऽ दियाला। एही तरी, भोजपुरी भासा के वाक्य के काल–क्रिया समापन सूचक 'बा' के कम बल देत ओकर लघु रूप उच्चारित कइल जा सकेला। बाकिर एह बात के खूब निकहे बूझ लेबे के बा, जे ई सभ मात्रा–पतन के उदाहरण ना हवे सऽ, जवना के गजलकार लोग गजल विधा में खुल के प्रयोग करेलन। मात्रा–पतन आ गण के अनुसार दीर्घ मात्रिक अक्षर के लघु मात्रिक उच्चारण कइला में फरक बा। गण के अनुसार उच्चारन खलिहा वर्णिक छन्द में मान्य बा। मात्रिक छन्दवन में अइसन कवनो कोरसिस मान्य ना होई आ बेजायँ कहाई।

एही लगले अब एगो सवाल उठऽता, जे का शब्द 'सारे' के 'सा' प बलाघात कम कइल जा सकेला? एहके जवाब एह शब्द 'सारे' के बुनावट में अलोत बा। जहँवाँ 'सा' के लघु भइल एह शब्दवे के रूप बिगाड़ दीही। काहें, जे 'सारे' के उच्चारन 'सरे' अस होत बुझाई। एह तरे त मूल शब्द 'सारे' के बदलल रूप 'सरे' सुनाए लागी, आ श्रोता के ई बुझइबे ना करी जे ई कवन शब्द हऽ। एहसे, अइसन कइल कवनो तरीके सही ना कहाई। आ, ई शब्द के आत्मा सङे खेलवाड़े कइल कहाई। कवनो शब्द के कवना आ कइसन अक्षर प के मात्रा कम बल दियात उच्चारित हो सकेला, एह बिन्दु प आगा सवैया के उदाहरण में समझावल जाई।

सवैया के बिधान प चर्चा के पहिले एगो अउरी बिन्दु प चर्चा कइल जरूरी बा। शब्द के जब कारक के विभक्ती से संजोग होला, आ ओकर रूप बदल जाला, त शब्दन के ओह बदलल रूप के 'पद' कहल जाला। ई 'पद' कविता–छन्द के पंक्ती भा पाँत वाला 'पद' ना हऽ। एह

दूनो 'पद' में बड़हन अंतर बा। हमनी के रचना के पद (पंक्ती) आ शब्द के बदलल रूप वाला 'पद' में फरक के खूब निकहे बूझ लेबे चाहीं। इहँवाँ 'पद' ओइसना शब्द के कहल जा रहल बा, जे गण के अनुरूप आपन कारकीय रूप बदल लेला। जइसे, एगो शब्द लीहल जाव – 'मन'। एकर एगो कारकीय रूप हो सकेला 'मनहीं', जेकर माने होला 'मन में'। एही के एगो अउरी कारकीय रूप हो सकेला 'मनहिं', जेकर माने होला, 'मन के'। ई 'मनहीं' भा 'मनहिं' शब्द 'मन' के 'पद' रूप हऽ। अइसना पद के वाचिक परम्परा के भासा में खुल के प्रयोग होला। आ सवैया जइसन वर्णिक छन्द में त एकर खूब पयोग होला।

एक बात अउर, जवन सभ प्रकार के शास्त्रीय छन्दन में मान्य बा। ऊ ईऽ, जे कारक के विभक्ती के एक–अक्षरी चिन्ह लघु अइसन बेवहार में आ सकेला।

जइसे,

कर्म दृ 'के'। एहके बलाघात कम कऽ के 'क' लेखा उच्चारित कइल जा सकेला।

करण – 'से' के 'स' अइसन उच्चारित हो सकेला।

अपादान दृ 'से' के करण वाला 'से' अइसन 'स' लेखा उच्चारित कइल जा सकेला।

सम्बन्ध – 'के' खातिर 'क' उच्चारित कइल जा सकेला।

अधिकरण – 'में' के 'मँ' कइल जा सकेला। 'पर' के 'प' त भोजपुरी में कहले जाला जवन कि एक मात्रिक भा लघु में बा।

भोजपुरी के मूल रूप में कर्ता के भा सम्प्रदान के बिभक्ती के प्रयोग ना होखे। उच्चारने के कारन कारक के विभक्तियन के चिह्न छंद–रचना के समै लघु रूप में प्रयोग होली सऽ। एही लगले, संजोजक शब्द (जइसे, त, जे, आदि), सर्वनाम के एक–अक्षरी शब्द (जइसे, ऊ, ई, आदि) के लघु रूप कइल जा सकेला।

अब ऊपर कहल बातन आ बिन्दु के आलोक में सवैया के उदाहरण देखल जाव। इहँवाँ 'मानस' के बालकाण्ड के पहिल्का छंद उदाहरन खातिर प्रस्तुत हो रहल बा, जवन दुर्मिल सवैया में बड़ुए। दुर्मिल सवैया के सूत्र होला – [सगण (लघु–लघु–गुरु) X 8]

अवधेसके द्वारें सकारें गई सुत गोद कै भूपति लै निकसे।

अवलोकि हौं सोच बिमोचनको ठगि–सी रही, जे न ठगे धिक–से।

तुलसी मन–रंजन रंजित–अंजन नैन सुखंजन–जातक–से।

सजनी ससिमें समसील उभै नवनील सरोरूह –से बिकसे ।

पहिला पद के विन्यास देखल जाव –

अवधे (लघु लघु गुरु) स के द्वा (लघु लघु गुरु) रें सका (लघु लघु गुरु) रें गई (लघु लघु गुरु)

<——————————1——————————>
<——————————2——————————>
<——————————3——————————>
<——————————4——————————>

सुत गो (लघु लघु गुरु) द कै भू (लघु लघु गुरु) पति लै (लघु लघु गुरु) निकसै (लघु लघु गुरु)

<——————————5——————————>
<——————————6——————————>
<——————————7——————————>
<——————————8——————————>

एहपद के विन्यास देखल जाव, त शब्द–संयोजक होखो भा कारक के विभक्ती होखो, एही के दीर्घ मात्रिक भइला के बावजूद लघु रूप में उच्चारित कइल जा रहल बा। काहें जे ऊ सगण के साँचा (विन्यास) में ओह जगहा प बाड़न सऽ, जहँवाँ लघु वर्ण आ रहल बा। जइसे, दोसरका सगण में 'के' भा छठा सगण के 'कै'। बाकिर, जवना चीजु प धेयान बरबस जा रहल बा, ऊ हऽ तिसरका सगण में 'द्वारे' के 'रे' आ चउथा सगण के 'सकारे' के 'रे'। ई दूनो 'रे' आपरूपी गुरु बाड़न सऽ। बाकिर, सगण के साँचा में 'रे' के ओह दूनो जगहा के वर्ण लघु बा। एहसे, दूनों 'रें' के उच्चारन लघु के अनुसार हो रहल बा।

एक बात ! एह छूट के जेहमें गण के माँग के अनुसार गुरु वर्ण के लघु रूप में उच्चारित कइल जा रहल बा, एकरा 'मात्रा–पतन' नत कहल जाव। काहें जे, मात्रा–पतन के कवनो नियम सनातनी छन्दन में मान्य नइखे। एही से इहँवाँ बेर–बेर बुझवावे के कोरसिस हो रहल बा जे गण के लघु स्थान प परल अक्षर के दीर्घ वर्ण में भइला के बावजूद ओकर उच्चारन लघु रूप में होला। ई वर्णिक छन्दन के बिसेसता हऽ। आ ईहे बिसेसता मात्रिक छन्दन के लगे नइखे।

एगो उदाहरन नरोत्तमदास के लिखल मत्तगयंद सवैया के लीहल जाव, जेकर सूत्र होला – [भगण (गुरु–लघु–लघु) X 7. गुरु + गुरु] –

सीस पगा न झगा तन में प्रभु, जानै को आहि बसै केहि ग्रामा।

धोति फटी–सि लटी दुपटी अरु, पाँयउ पानहि की नहिं सामा।।

द्वार खरो द्विज दुर्बल एक, रह्यौ चकि सौं वसुधा अभिरामा।

पूछत दीन दयाल को धाम, बतावत आपनो नाम सुदामा।।

पहिला पद –

सीस प (गुरु लघु लघु) गा न झ (गुरु लघु लघु) गा तन (गुरु लघु लघु) में प्रभु, (गुरु लघु लघु)

<——————————1——————————>
<——————————2——————————>
<——————————3——————————>
<——————————4——————————>

जानै को (गुरु लघु लघु) आहि ब (गुरु लघु लघु) सै केहि (गुरु लघु लघु) ग्रामा (गुरु गुरु)

<——————————5——————————>
<——————————6——————————>

<——————————————————7————————————>

<—————————8———————————>

धेयान से देखल जाव, त पँचवाँ भगण में सूत्रके हिसाब से गड़बड़ बुझा रहल बा। इहँवाँ 'जानै को' भगण ना हो के मगण (मातारा, गुरु–गुरु–गुरु, 222, SSS) बुझा रहल बा। बाकिर, वाचन–प्रवाह (पढ़े के गति) के अनुसार सवैया के पढ़ल जाई, त 'जानै को' के 'जान क' पढ़ल जाई। एही तरी, सँतवाँ भगण में 'सै केहि' के उच्चारन 'सै कहि' पढ़ल जाई। एही आलोक में आगा के तीनों पद के देखल आ पढ़ल जाई।

एही क्रम में, एह सवैया के दोसरका पद देखे जोग बा –

धोति फटी–सि लटी दुपटी अरु, पाँयउ पानहि की नहिं सामा

इहँवाँ 'धोती' के 'धोति', 'फटी–सी' के 'फटी–सि' आ 'नहीं' के 'नहिं' लिखल गइल बा। एकरा ओह शब्दन के वर्तनी में दोस लेखा जन देखल जाव। बलुक ओह गण के अनुसार भइल उच्चारन के अनुसार ओह शब्दन के अक्षर प बलाघात के अनुसार वर्तनी में भइल बदलाव के रूप में देखे के चाहीं।

रसखान के निकहा प्रसिद्ध सवैया के उदाहरन लीहल जाव, जवन किरीट सवैया में बा। किरीट सवैया के सूत्र होला – [भगण (गुरु–लघु–लघु) X 8]

मानुष हों तो वही रसखानि, बसौं बृज गोकुल गाँव के ग्वारन।

जो पसु हौं तौ कहा बसु मेरौ, चरौं नित नंद की ध ेनु मँझारन।।

पाहन हौं तौ वही गिरि कौ जु धर्यौ कर छत्र पुरंदर कारन।

जो खग हौं तो बसेरौं नित, कालिंदी–कूल कदंब की डारन।।

पहिला पद के विन्यास –

मानुष (गुरु लघु लघु) हों तो व (गुरु लघु लघु) ही रस (गुरु लघु लघु) खानि ब (गुरु लघु लघु)

<————————————1————————————————>

<——————————————2———————————————>

<————————————————————3——————————————>

<——————————————————4—————————————>

सौं ब्रज (गुरु लघु लघु) गोकुल (गुरु लघु लघु) गाँव के (गुरु लघु लघु) ग्वारन (गुरु लघु लघु)

<—————————————————5————————————————>

<——————————————————6———————————————>

<——————————————————7———————————————>

<———————————————8————————————————>

असहीं आगा के पदन के विन्यास कके उन्हनीं के सूत्र प समझल जा सकेला।

सवैया के गण आधारित रूप देखल जाव, त मुख्य–मुख्य नाँव के नीचे लिखल सवैया कूल्हि प्रचलित बाड़न सऽ।

भगणाश्रित (भगण के आवृति प) मुख्य रूप से छौ गो सवैया बाड़न सऽ –

(1) मदिरा [भगण X 7+ गुरु]

(2) मत्तगयंद [भगण X 7 + गुरु + गुरु]

(3) चकोर [भगण X 7 + गुरु + लघु]

(4) किरीट [भगण X 8]

(5) अरसात [भगण X 7 + रगण]

(6) मोद [भगण X 5 + मगण सगण गुरु]

सगणाश्रित (सगण के आवृति प) मुख्य रूप से पाँच गो सवैया बाड़न सऽ –

(1) दुर्मिल [सगण X 8]

(2) सुन्दरी [सगण X 8 + गुरु]

(3) अरविन्द [सगण X 8 + लघु]

(4) सुखी [सगण X 8लघुगुरु]

(5) सुखी [सगण X 8लघुलघु]

जगणाश्रित (जगण के आवृति प) मुख्य रूप से चार गो सवैया बाड़न सऽ –

(1) सुमुखि [जगण X 7+ लघु+ गुरु]

(2) मुक्तहरा [जगण X 8]

(3) वाम [जगण X 7+ यगण]

(4) लवंगलता [जगण X 8+गुरु]

तगणाश्रित (तगण के आवृति प) मुख्य रूप से तीन गो सवैया बाड़न सऽ –

(1) मंदारमाला [तगण X 7+ गुरु]

(2) सर्वगामी [तगण X 7+ गुरु गुरु]

(3) आभार [तगण X 8]

रगणाश्रित (रगण के आवृति प) मुख्य रूप से एगो सवैया बा –

(1) गंगोदक [रगण X 8]

यगणाश्रित (यगण के आवृति प) मुख्य रूप से दू गो सवैया बाड़न सऽ –

(1) महाभुजंगप्रयात [यगण X 8]

(2) वागीश्वरी [यगण X 7+लघु गुरु]

मगणाश्रित (मगण, गुरु–गुरु–गुरु, 222, SSS) आ नगणाश्रित (नगण, लघु–लघु–लघु, 111, ।।।) दूनों तरह के सवैया के स्वर आ गेयता के अनुसार आवृती सही ना बनी। अगर अइसना प सवैया छन्द के रचना भइबो कइल, त बनल वृत्त पढ़ला प अरुचिकरे होखी।

एही क्रम में ई बात बतावल जरूरी बा जे 'उपजाति सवैया' तक के खूब प्रचलन रहल बा। कहल जाला जे उपजाति सवैया के पहिला पहिल शास्त्रीय प्रयोग गोसाईंजी (तुलसीदास) कइले रहनीं। उहाँ का ''कवितावली'' में इन्हनीं के प्रयोग कइले बानीं। उपजाति श्रेणी के सवैया के माने होला गण के हिसाब से मिश्रित पद के सवैया। एहमें दू भिन्न–भिन्न सवैया के नियमन के प्रयोग होला। केशवदासओ एह दिसाईं निकहा प्रयोग कइले बानीं। बाकिर, आजु के हिसाब से अभ्यासी लोगन द्वारा शुद्ध सवैया प धेयान दिहल जरूरी बा। ••

■ एम-२/ए-१७, ए.डी.ए. कॉलोनी, नैनी, इलाहाबाद–211008 (उप्र) संपर्क संख्या – 9919889911

'का का कहीं'

शारदा पाण्डेय

चहलो पर सभके अनुकरण ना कइल जा सके। काहें कि सभके प्रकृति आ प्रवृत्ति अलगा होखेले। प्रशंसा कइल, अभिभूत भइल असम्भव बा बाकिर ई कहल कि जदि गुन रउआ देखतानी आ प्रभावित बानी तऽ रउओ ओइसहीं काहें नइखीं बनि जात? एकर कारण ईहे बा। एही से प्रशंसात्मक भाव आ दृष्टि के कबहूँ ना तऽ उपेक्षा करे के चाहीं ना व्यंग्य करे के चाहीं। कुछ लोग एह भाव के नासमुझ पावेला। व्यंग्य सुनला के अपेक्षा कुछु ना कहि के चुप रहला में ढेर भलाई सोचेला। धीरे–धीरे अइसन स्थिति में बड़ाई करे वाला भाव के सोता सूखत जाला। आदमी उपेक्षाशील बनि जाला आ फेरू ईहे उपेक्षा ओकरा प्रकृति में घुलत जाले। एसे संवेदनशीलता के बनवले रहे के प्रयास करत रहे के चाहीं।

हमार महतारी अपना रूप गुन आ व्यवहार के चलत सभे में आदर–श्रद्धा आ प्रशंसा के पात्र भइली। रूप तऽ अइसन कि लागी कुन्दन के सजीव तरासल प्रतिमा होखो। जे अपना अँजोर से सबकर आँखि अपना ओर खींचे में समर्थ रहली। उज्जर लिलार, अपराजिता नियर भारी नवल पलक, टूसी नियर नाक, लाल गुलाब के पँखुरी नियर ओठ। ओकरा बीच से मुस्करात मोती नियर दाँत के चमक अतना शांत शीतल कि तनिकी देर खातिर मन थिरा जाए। ई रूप शांति–आदर आ सम्मान देवे के भाव जगावे, ओकर दँवक जरावे वाला ना चन्दनी अनुतोष नियर, शांत शीतल दीपशिक्षा नियर। आँखि हटे के ना चाहे।

कहाला कि केहू संसार में 'सरबे गुनवा आगर' ना होला। ई मुहावरा कबो झूठ प्रशंसा भा व्यंग्योक्ति खातिर प्रयोग में लिहल जाला। बाकिर कबो–कबो कवनो सिद्धान्त के अपवाद लउकेला, जवन मन में आश्चर्य के भावना भरि देला। कुछु अइसने स्थिति अपना 'माई' के संदर्भ में हमरा ना अवरूओ लोगन के बेर–बेर अनुभव भइल बा। अवगुन जोहलो पर ना मिली, बुझाई कि देवयोनि से भटक के कवनो देवी मूर्ति धरती पर अवतरित हो गइल होखो। सभ के उचित सम्मान–स्थान–प्रेम दीहल उनुकर धर्म रहल। उदारता अइसन कि सीमित आमदनी में, कुछ लुटावे से हिचक ना। बाबूजी कबो संकेत करिहें त जबाब मिली 'जाहीं में काढि ताही में बाढ़ि।' आ साँचो बुझाई कि घर में अँजोरे अँजोर भरल बा। अभाव ना लउकी। सभ हँसत रही। दुःख जइसे उनुका आँखि के परिधि में आके अंतर्ध्यान हो जाई। नीलकण्ठ बने के स्वभाव रहल। बुझाई कि आँखि के अँजुरी में सभके पीर समा जाई। सोझा वाला के बोझ हलुका जाई। सभके ओही बरगद के छाँह में सुख भेटाई। बहिन जी एक बेर कहली कि, 'अइसहीं हाल रही त कुछु बाँची ना। आ बाबूजी से कहियो दिहली।' माई कहली, 'बबुनी पेट के भुला सकीले हाथ जनि रोकु।' हमनी के अचरज से भरि जाइब। कवना बल पर अतना विश्वास।

गाँवे जाए के पहिले बाबू जी अपना पसंद के खूब सुन्दर लाल मखमली पाट के साड़ी आ रंग मिलावत तीन गो सिआवल बेलाउज लेके अइलन। माता जी के देहि पर गइल त जइसे रूप खिलि गइल। ओही घरी हाता में से कुबुल्ली के माई (महाराजिन) अइली। हमनी के जोजू से चलि अइनी। गाँवे जात समय देखनी, माता जी लाल बेलाउज में कुछु डलली आ बेलाउज तहिया के हाथ में लेले चलि अइली। उत्सुकता से भरल हम पाछा लागि गइनी। देखनी कि ऊ गँवे से 'कुबुल्ली के माई' के कोरा में ऊ बेलाउज डालि के चलि दिहली। दोसर बेलाउज गाँव में छोटकी माई (काकी) आ बहिन जी के दान हो गइल। लवटला पर ई सूचना हम बाबू जी के पहुँचवनी, त बाबूजी बड़ा मधुरे मुसकइलन आ माता जी गँवें से कहली, 'हमरा लगे तऽ कवनो कमी नइखे बाकिर ओकरा तऽ जरूरत रहल हा। बबुनी–बहुरिया के दीहल त हमार धरम हऽ। उनुका पसन परि गइल रहल हा।'

हम अपने आँखि में छोट हो गइनी। बाबूजी साड़ी ना पहिरला के कारण बूझि गइले आ माता जी अपने राग में मगन।

गरमी के दिन रहे। पढ़ि के अइनी त देखनी कि सभले उपरली चकरकी सीढ़ी पर जमादारिन बइठल बिआ आ माता जी ओकरा कपार में तेल जाँतऽतारी। हमरा के देखि के जमादारिन आ माता जी दूनू जानी सकपका गइल लोग। ब्राह्मी आँवला केश तेल के एक लीटर वाली बोतल माता जी जमादारिन के थम्हवली आ अपने उठि के नहाए चलि गइली। हम भीतर से बाहर तक जरि गइनी अतना सामाजिक न्याय हमरा ना बुझाइल। उमिर रहल होई बारह–चउदह बरिस। पूरा दिन हम माता जी से ना बोलनी। ऊ खायक परोसली तऽ खइबो ना कइनी। एगो सन्नाटा घर में छा गइल रहे। साँझ खा बाबूजी अइलन तऽ रोज नियर तेल लगावे के कहलन। ऊ गरमी में गुलरोगन आ आँवला के तेल लगावत रहलन, सुनि के हम खड़े रहि गइलीं। बाबूजी फेरू कहलन त भीतर के आगि लाई जोरला के रूप में बहरिआये लागल। बाबूजी कहलन, 'बुचिया तोरा भ्रम हो गइल होखी। पहिले के बाँचल देले होइहें।'

बाकिर हम जुटल रहनी। कहनी कि, 'रउआ तेल के बोतल मँगवा दीं, हम लगा देब।'

माता जी आके कहि गइली, 'तेल नइखे। बुचिया ठीके कहतिआ।'

बाबूजी अचकचा गइले– 'पूरा बोतल काहें दे दिहलू? कवनो शीशी में कऽ के दे दिहतू।'

माता जी सरलता के प्रतिमूर्ति बनल कहली, 'का करीं। ओकर कपार बथत रहल। ऊ छटपिटात रहल हऽ। हमरा ओह घरी ना बुझाइल। ओकर बाथा देखि के ना सहाइल। ऊ कुछु ना कहलस। हमहीं ओकर कपार दबावे लगनीं।'

बाबूजी आश्चर्यचकित रहलन, 'तूँ ओकर कपार दबवलू?'

'तऽ का करतीं, ऊ रोवत रहल। ओकरा से बोतल छुआ गइल, ओकरा तेल कीने के सामरथ नइखे, ई जानि के बोतले दे दिहली। ऊहो अदिमिए नूं हऽ!'

बाबूजी देखत रहि गइलन। कहलन, 'कवनो बात नइखे मलिकाइन, तूँ असली संत बाड़ू। तहरा तनिको संकोच ना लागल। तेल दोसरा महीना आ जाई।'

ओह घरी बाबूजी के चेहरा पर एगो अजबे तेज, आ कि संतोष, आ कि गौरव बोध चमकि गइल, हम ओके ना बता सकीले। बाकिर हमरा रोआई आ गइल। माता जी पूरा महीना करू तेल के बोतल सोराही के पानी में धरिहें आ राति खा बाबूजी के सिर पर आ तरुवा में मलिहें। एगो अवरू घटना कहला बिनु नइखे रहल जात। घटना अनेक बाड़ी सऽ।

जनवरी के महीना रहे 'संक्रांति' नहाए के बहाना 'चनरी' बहिनिया आइल त पूरनमासी तक जाए के कवनो लक्षण ना लउकल। ओकर आपन भाई प्रयागे में रहत रहलन; ओजू खाली भेंट करे के नाँव कऽ आइल आ फेरू हमरे घरे। हमनी के मन में प्रश्न आइल तऽ अवसर ताकि के बाबूजी से कहलीं। माता जी चनरी बहिनिया के सुतला के बाद खुदे आके कहली, 'भाई–भउजाई से निभाउ नइखे। ससुरा से रूसि के आइल बाड़ी। आपन अदिमी बा ना। रोज के खोभसन सहल बड़ा कठिन होला। नइहर में केहू बोलावे ना। देखीं, नइहरे के ऊँच से अदिमी ससुरा में ऊँच होखेला, आ ससुरा के इज्जते से नइहर में इज्जत होखेला। एजू से कवनो करनियो ना जाला। महतारी–बाप बा ना। केकर भरोस करसु? रउआ हमरा खातिर बस अतना कऽ दीं कि उनुका विदाई में एगो लुगा–कुरती आ मिठाई कऽ दीं। खिचड़ी के नाँव पर एजू से कुछु भेज दीं। हमरा कुछु अवरू ना चाहीं। जइसे अपना बेटी–पतोह के करऽतानी एगो बहिन इनिको के मानि लीं। आ बात सँवार दीं। भगवान चहिहें तऽ इनिको दिन फिरी।'

बाबूजी कहलन, 'दोसरा के मामिला में ना परे के चाहीं। आपन परिवार निबाहल कठिन होखेला आ तूँ दोसरा के गिरहे बान्हतारू।'

माता जी उत्तर दिहली, 'हमरा खर्चा में से कटौती कऽ दीं। बाकिर उनुका के निभा दीं।'

बाबूजी चुपा कइले। माता जी खूब नीमन करनी–धरनी कइली। अपना लगे से कतना रुपया अलगा से दिहली ई केहू ना जानल। बाकिर खोंइछा में दस गो रुपया–चाउर–हल्दी आ गूर के भेली डलली। उनुका भाई के चुपके से बोलवली आ निहोरा कइली, केंवाड़ी के ओट से, कि 'जाईं ससुरा पहुँचा आईं, माघ के नहान बीति गइल। कवनो बात के जरूरत पड़ी तऽ हमरा से कहब। रउआ गइला से इनकर मान–जान बढ़ि जाई। अब से हर माघ इनिकर हमरा संगे बीती।'

अतवार के छुट्टी रहल, ऊ मानि गइले। जात खानी चनरी बहिनिया अतना रोवल कि पूरा घर के लोग द्रवित हो गइल। बुझाइल जे ऊ आपन बहिन हऽ आ पहिली बेर ससुरा जा तिया। चनरी बहिनिया बाबूजी के गोड़ लागे गइल त बाबुओ जी के हाथ अनासे ओकरा सिर पर आशीर्वाद नियर परल। चनरी बहिनिया के भाई के आँखि से लोर ढरकि गइल। उनुका संगे–संगे माई हमरा भइया के लगा दिहलस।

भगवान के अतना कृपा भइल कि चनरी बहिनिया के ओजू गइला पर जइसे सभ के केहू ओकर प्रतीक्षा करत रहल। भइया छोट रहलन, उनुकर विदाई कइल लोग। लवटि के अइला पर चनरी बहिनिया के भइया माई के गोड़ छुवे के आग्रह कइलन। बाकिर माता जी बरिज दिहली। ऊ आपन सीमा–दुःख बतवलन। माता जी हँसि के कहली कि, 'हमरा के एगो अवरू ननद मिल गइल। केकर अइसन भाग्य होई?'

तब से चनरी बहिनिया के संगे नेवता–हँकारी चले लागल। जब अगिला माघ आइल त चनरी बहिनिया के ले आवे भइया गइलन। देखलन कि बहिनिया के मुँह पर चमक–हुलास भरल रहे। घर के लोग हाथों–हाथ लेले रहल।

बहिनिया आइल। माई ओकरा खातिर देवता हो गइल रहे। भाई–भउजाई के प्रति ओकर मन आकाश नियर साफ हो गइल रहे। दबंगई से कहे कि, 'हमरा नइहर नियर केकर नइहर बा?'

तनिको केहू के बेरामी–हेरामी सुनाय तऽ बहिनिया पूरा प्राण लगा के सेवा के प्रस्तुत आ पूरा घर निश्चिंत।

आजु तऽ माई आ चनरी बहिनिया दूनू जनी नइखे लोग। बाकिर जिनिगी भर उनुकर साथ गंगा–जमुना नियर रहे। हमनी खातिर ई इतिहास हो गइल बा। हजारन बरिस से हमार ऋषि–मुनि लोग 'सत्यं वद, धर्म चर' के पाठ पढ़ावत आइल बा। किताबिन में लिखाइ के आ आचार्य लोगन से व्याख्यायित होइ के ई सरल पाठ अवरू जटिल, दुरूह आ कर्म में कठिन हो गइल बा। बाकिर के समुझावो कि कुछ लोगन के जीवन में पढें आ करे के खातिर ई कथन धर्मवाक्य ना रहे, उनुका साँसे में सनाइल आ व्यवहार में रचल–बसल स्वाभाविक मूल प्रवृत्ति के रूप में ई समाइल रहेला। उनुका प्रयास ना करे के परेला। सोचीले माई त कबो पाठशाला ना गइल, नीतिशास्त्र के पुस्तक ना देखलस, मानवता के तथाकथित बड़ अनुरागियों के सत्संग ना कइलस। बाकिर कइसे ओकरा बुझा जात रहे कि केहू के हँसत देखे खातिर आपन लोर पी लऽ। केहू के बचावे खातिर अड़ि जा। जिनिगी त जाहीं के बा। ओमे सभके आपन बना के जीअल, केहू के दुःख दूर कइल, ईहे धर्म हऽ। साँच के कवन डर? अनजानतो केहू के कठोर मत बोलऽ, नाहीं त ओकर रोआँ दुखा जाई। दुःख–सुख त सभ पर आवेला।

हमनी के तऽ आपन लाभ–हानि के, स्वार्थ के तरजूई पर जोखि के कवनो काम करीले। बाकिर माई के ओह देहि में रहत, सीमित साधन के जीअत आत्म विस्तार के जवन विशाल फलक लउकल ओइसन कवनो साधुओ में जल्दी ना लउकी। ●●

■ १४२, बाघंबरी गृहयोजना, भारद्वाजपुरम्, प्रयाग-६

आनन्द सन्धिदूत के दू गो गीत

[एक]

एक बूँद सम्मान के सउदा
मन-समुद्र में ज्वार उठल बा।
कौन बड़ा का हम-हमार में
कूर खेत-संग्राम मचल बा।

तंग करे बाजार कि बोलऽ
भाव हिमाले, सरसों के।
हम असत्य से बचीं तऽ
हमसे बदला काढ़े बरसों के।
बदला बा- मन अहंकार में
कड़कत तिरछा काँच धँसल बा।

तलख हृदय जुड़वावे खातिर
का-का-ना उतजोग करीला।
कभी 'फ्रेन्ड रिक्वेस्ट' त कबहीं
देवता आ भगवान गढ़ीला।
लागे ध्यान कहीं ना, जियरा-
चंचल बालक नियर बिकल बा।

कोंपल देख समाज-वृक्ष के
मन पापी के हँसी न फूटे।
एतने कमी बनल उत्पीड़न
मन चिन्तन पर लाठी टूटे।
एगो हम चिन्तनरत बाकी --
सब उधार ले, हँसी हँसल बा।

[दू]

पाप छुपा के होखे वाला
असामाजिक काम कहाला।
ऊहे अगर डिठार करीं तऽ
क्रान्ति अउर बिद्रोह जनाला!

देहीं जुग के, अपना मन के-
काम करे खातिर प्रोत्साहन।
धीरे ढील करीं ऊपर से, लादल
नियम अउर अनुसासन।
बहुत कसल कानून से जग में
अक्सर पाप जघन्य हो जाला।

देहीं समय निबन्ध तोड़ के
दुनियाँ ओह में गीत तलासे
सप्तक का आगे अष्टम स्वर
साध, बिकास-बिरोध बिनासे।
पहिले जवन ढिठाई ऊहे
बाद में अनुसंधान कहाला।

होई अगर प्रयोग त कुछ
गलती होई कुछ सहियो होई
कुछ नीमन पाई तऽ कुछ नीमन
अपना हाथे से खोई।
एही गलत-सही का हाथे
एहिजा राम-रहीम गढ़ाला। ●●

पदारथलाल की गली, वासलीगंज, मिर्जापुर

शिवपूजन लाल 'विद्यार्थी'

चल ऽ समय के साथ चल ऽ !
मिला हाथ से हाथ चल ऽ !

खुद के बौना जिन समुझ ऽ
उठा गरब से माथ, चल ऽ !

सोना बनि निखर ऽ तुँहऊँ
दुख-अभाव के आँच जलऽ !

सोन-किरनिया जगा रहल
आलस-कोटर से निकलऽ !

जग के बदले से पहिले
खुद अपना के तूँ बदलऽ ! ●●

C/o सुरेन्द्र वर्मा, नीलकंठपुरम,
बरईपुर कंदबा, वाराणसी-६

रामयश 'अविकल'

झूठ बोलला से अतना पिरीत काहें
साँच बतियो लगे उनका तीत काहें?

बेहयाईं, लथेरई के हद हो गइल
ऊ बतावेले हरलो प' जीत काहें?

जल से अँजुरी भरे त पियासो मिटे
ऊ चटावेले रहि रहि के सीत काहें?

दुश्मनी दोस्ती के निबाहल गजब
दुश्मने बनि के, आ जाला मीत काहें?

उनकर कविता उजाड़ल खड़ंजा लगे
हमसे पूछे ले, 'गावेलऽ गीत काहें? ●●

पकड़ी गैस एजेन्सी के दक्षिण, आरा (बिहार)

शशि प्रेमदेव के दू गीत

[एक]

हमनी का टोला कब पहुँची बिहान
बोलऽ, ए राजा जी ?
कब होई गाँधी क सपना सेयान
बोलऽ, ए राजा जी ?

के बान्हि लेले बा सूरूज के घोड़ा ?
बनि के झोपड़ियन के राहे क रोड़ा-
बाटे उतान खाड़ तहरे मकान !
बोलऽ, ए राजा जी।। कब होई...

भइलऽ मगरमच्छ, रहलऽ तूँ गरई !
चमकल ना हमहन के किसमत के तरई !
कइसन ई रीति-नीति? कइसन विधान ?
बोलऽ, ए राजा जी।। कब होई...

हमनी का बखरा सुराज नाहीं आइल !
कहियो के पापी, दगाबाज नाहीं आइल !
हमनी का बखरा काहें बीपत निछान ?
बोलऽ, ए राजा जी।। कब होई...

अब तऽ ए बबुआ, अनेति ना सहाई !
अभियो से चेतऽ ना तऽ थेघ ना भेंटाई !
कहवाँ लुकइबऽ जब आई तूफान ?
बोलऽ, ए राजा जी !! कब होई...

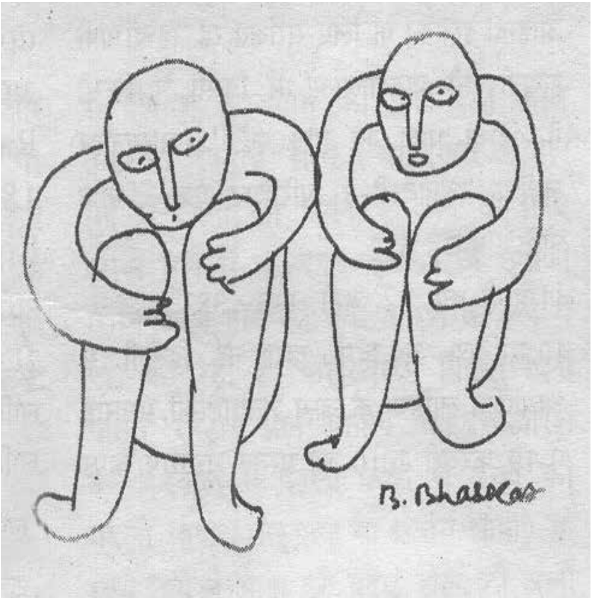

[दू]

लेंडुरी का भावे बिकाइ जाइ देसवा !
अइसन जनाता
बिलाइ जाइ देसवा !!

जवने पहरूवा अगोरे तिजोरी
ऊहे करत बा खजाना क चोरी
थाना का सोझा लुटाइ जाइ देसवा!! अइसन.

गाँधी, सुभाष, भीमराव क दुलरूवा
हाथे कसइयन का लागल बछरूवा
छूरी से कहिओ रेताइ जाइ देसवा !! अइसन.

चउवा, इनार, खरिहान, नीम, हाता...
तूरि-तूरि माई आ माटी से नाता
जाके शहर में हेराइ जाइ देसवा !! अइसन.

देसवा बिलाइल तऽ कुछुवो ना बाँची
खुस होई बीजिंग आ बिहँसी कराँची
दुनहुन का बीचे पिसाइ जाइ देसवा !! अइसन. ●●

■ अंग्रेजी प्रवक्ता, कुँवर सिंह इन्टर कालेज
बलिया - २७७००१

लघुकथा

पंच लोग के फैसला

विनोद द्विवेदी

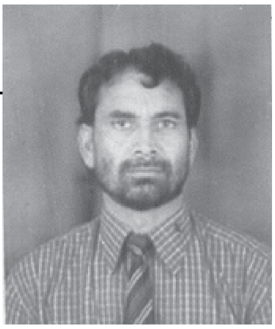

एके जगह रहत–रहत, एकरस जिनिगी जीयत मन भर जाला त सामरथ भर सभे जतरा–देसाटन करेला। बतख–बतखिनी एक्के पोखरा में रहत–रहत उबियाइ गइल त एक दिन देसाटन करे निकल गइल। बन झाड़ पार करत करत गड़हा–पोखर खोजत आखिर में अइसन निर्जन वीरान में चहुँपल लोग कि निम्मन ताल–सरोवर त फइलाँवाँ, एगो गड़हियो ना लउके। साँझ हो चलल रहे। थकल भादल एगो पातबिहीन पेड़ का जरी सुस्ताये लागल लोग।

“इहाँ त, कतों ना पानी लउकत बा ना ठंढा हवा। अन्हार हो आइल। आज रात कइसहूँ बिताइ के फजीरे वापस लवटल ठीक बा।' बतख, बतखिनी के ढारस देत जमीन पर ढहि गइले।

रात होते फेंड़ का खोंढ़र से निकल के एगो उरूवा बोले लागल। बतखिनी के नीन टूटि गइल। कहली– “सुनऽ तानी जी?”

“हँ हो सुनत बानी। ई उरूववा त एकसुरिये चिचिया रहल बा। अब नीन ना आई। जहवाँ इन्हन के बास रही ऊ वीरान ना रही त का आबाद रही? ई देस सचहूँ रहे लायक नइखे।” बतख भुनभुनाइल आ बतखिनी का पाँखि में मूड़ी ढुकांइ के महँटियावे लागल।

भोरे उरूववा नीचे उतरि आइल” छिमा करिहऽ भाई, हमरा कारन तोहन लोग के दिक भइल।” “कवनो बात नाऽ भाई।” कहि के बतख–बतखिनी आपन राह धइल लोग। बतख कुछुवे आगा बढ़ल तले उरूवा चिचिहाइल, “अरे–अरे, तूँ हमरा मेहरारूओ के कहाँ लेले जात बाड़ऽ?’

“पगलाइल बाड़ का? ई त हमार बतखिनी हई।’ बतख रिसियाइल बोलल।

फेर का? बढ़ गइल तकरार–हमार मेहर त हमार मेहर! बतखिनी का सकदम में बकारे बन्द। निकहा भीड़ जुट गइल। आखिरकार पंच बदाइल। पंच लोग का सोझा उरूवा ऊहे रट लगवले रहे, “बतखिनी हमार पत्नी हवे!” पंचो लोग फेरा में। आपुस में खुसुर फुसुर कइल लोग. .... ‘बतखवा त सहिये कहत बा, बाकि इहवाँ उरुववे के न हमहन का सँगे रहे के बा! ई परदेसी त चल जाई। आखिरकार आपुस में तय कके फैसला सुनावल गइल, “बतखिनी उरुवा के मेहरारू हवे! बतख के चुपचाप बिना हल्ला गुल्ला कइले उहवाँ से चल जाए के चाहीं।”

बतख जब रोवत गावत जाए लागत त उरूवा ओकरा पाछा लागल निगिचा पहुंचल “तूँही नऽ रतिया खा परबचन करत रहुवऽ कि ई देस बीरान काहें बा? अब जान लऽ कि ई बीरान आ उजड़ल एसे बा काहें कि इहवाँ के पंच हरमेसा उरूवने का पक्ष में फैसला सुनावेलनऽ। ••

जौहर शफियाबादी के गजल

तहरो अँखियन के मर गइल पानी
सुनके अँखियन में भर गइल पानी ।

लोर के मोल का उनुका सोझा
आके अँखियन में डर गइल पानी ।

नरक नाला-नदी रहे, बाकिर
जाके गंगा में तर गइल पानी ।

धर्म के नाम पर लड़ाई बा
लाज से गिर के गर गइल पानी ।

दान अँजुरी से करके लवटल जे
ओकरा अँजुरी में भर गइल पानी ।

मोल मोती के का रहल जौहर
जहिया ओकर उतर गइल पानी । ••

निबंध

सब्दहि मोल न तोल

डॉ. अर्जुन तिवारी

कहल जाला कि ':खग जाने खगही के भाषा,' एही से साफ झलकता की भाषा सम जीवधारी के बीच एगो सेतु, एगो कड़ी हऽ। भाषा शब्द से बनेला। शब्द ना रहे त सभे गूँग, बकलोल, मौनी बाबा हो जाई आ ओकर जिनगी निरर्थक होई। 'बाचामेव प्रसादेन लोकयात्रा प्रवर्तते' के सार्थकता बा' शब्द के ज्ञान मतारी–बाप के गोदी, में मिलेला एकरा के सीखल जाला, पावल जाला, रटल जाला' अंग्रेजी के प्रथम थिसारस बनाने वाला रोजर साहब शब्द नोट करे खातिर डायरी राखीं। ओही में रोजाना शब्दवा के नोट करीं। बार–बार ओही के पढ़ीं, नया नया शब्द जुटाई आ रटीं। एह तरह से शब्द के संकलन, ओकर अर्थ, उपयोग के वैज्ञानिक विधि से इस्तेमाल करे में उहाँ के महारथ हासिल हो गइल।

शब्द के ज्ञान आ सही ज्ञान के मतलब सही समय पर सही सटीक शब्दन के उपयोग हऽ। ई तबे होला जब अनेक शब्द के पूँजी पास में होखे। शब्द के सम्पति धन रूपी सम्पति से बहुत ज्यादा महत्वपूर्ण वा एही से पहिले 'निघंटु' आ 'अमर कोश' रटवावल जात रहल हऽ। अपना संस्कृत में कहल जला "एकः शब्दः सम्यक् ज्ञातः सुष्ठु प्रयुक्तः स्वर्गलोके काम धुग् भवति" 'क्षीयन्ते खलु भूषणानि सततं, वाग्भूषणं भूषणम्'। मुक्तिबोध जी लिखले बानी–' तब (आजादी के पूर्व) हमारे पास ईमान का डंडा, बुद्धि का बल्लम, अभय की गैंती, ह्रदय की तगारी थी, हमें बनाने थे आत्मा के, मनुष्य के नये–नये भवन, हमने अभिव्यक्ति के सारे खतरे उठाये।'

शब्द पर अधिकार हो गइला पर आदमी भाषाधिकारी, वाक्य विशारद, वागीश, वागीश्वर, वाग्मी, विट, शब्द चतुर, साहबे–जबान, सुवला, सुवाग्मी कहला। जीवन के सार्थक बनावे खातिर शब्द के उपासक बने के पड़ेला तबे पाणिनि बनल जा सकेला।

शब्द शक्ति

अपना इहाँ 'अक्षर' के ब्रहम आ 'शब्द' के ज्योतिरूप सनातन परम ब्रहम कहल गइल बा। देवाधिदेव महादेव महेश्वर के 'माहेश्वर सूत्र' से उत्पन्न शब्द साक्षात् शिवजी के बरदान ह। 'नाद', निनाद', ध्वनि, 'स्वर', 'रव' 'घोष के चलते संसार जाग्रत बा। शब्द ना होखे त आपन दुनिया के का होई, ई सोचके मन सिहर जाला। संसार में शब्द के ज्योति ना लहलहाइत त तीनो लोक अंधकार में डूब जाइत। ज्ञान–विज्ञान, सभ्यता–संस्कृति, गति–प्रगति, चेतना–अचेतना समके अँधेरा में ढकेल के जड़ जगत के शून्य बनाने के होखे तऽ शब्द के अस्मिता के नकारल जा सकेला। अपना संस्कृति में एही से शब्द ब्रहम के गुणगान बा। वेद, प्राण, उपनिषद, समधर्म ग्रंथ, काव्य शास्त्र में शब्दे के ब्रहम आउर नित्य मानल गइल बा। शब्दे के चलते जीव–निर्जीव, जीव–जगत के रूप निर्धारित भइल, सभके सम से सम्बंध कायम भइल। सभ के जाने मे चाहीं की मनुष्य के स्वभाव, उत्कण्ठा, जिज्ञासा, दूरदर्शिता के कारने, 'शब्द' उपजेला, जनमेला, निखरेला। आदमी के विराट् जगत् से जोड़े वाला ई शब्दे हऽ हर शब्द के पीछे विशाल जगत के अनुभव छिपल बा। शब्द में मानव मात्र के व्यवहार, अनुभूति, अभिव्यक्ति के समन्वय जइसन कवि ग्वाल के कहनाम बा –

शब्द अर्थ संगम सहित भरे चमत्कृत भाय।
जग अद्भुत में अद्भुतहि सुखदा काव्य बनाय।

शब्द में अपरम्पार शक्ति बा। जीभ से निकलल शब्द जीवन बना सकेला त जीवन बिगाड़ियो सकेला जइसन कि रहीमदास जी कहले बानी–

रहिमन जिह्वा बावरी कह गई सरग पताल।
आपु त कहि भीतर रहे, जूती खात कपाल।

नीमन शब्द बोलके लोग अपना राजा, अधिकारी मंत्री के मुट्ठी में कर लेलाः "उसके गले में खुदा की अजीब बरकत है दो लपज बोल के दुनिया खरीद लेता है।" जिनका लगे 'शब्द' बा ऊ बिगड़लो काम के सँवार लेले। ई समझे के चाहीं कि जवना तरह कमान से निकलल तीन ना वापस लौटे ओही तरे मुँह से निकलल बात वापस ना आ सके। शब्द में भक्ति के आभास एह से होला कि एगो शब्द के चलते महासंग्राम होला आ दूसर शब्द के चलते शान्ति के राज्य स्थापित होला। 'गलती हो गइल, माफ करीं।, 'रउवा बड़, हम छोट, छोट पर दया करीं, 'धन्यवाद' अइसन शब्द आजो कान में मिश्री घोलेला' सभे जानता कि मीठी बानी बोल के मरिचा के व्यापारी लहलहा उठेला आ कडुवी, तीखी, तीते बोल के मिठाई, शहद के व्यापारी मक्खियो के अपना इहाँ ना बोला सके। भोजपुरी भाई सभ शब्द के महिमा खूब जानेला। ऊ सभ हर काम के शुरूआत' ओम, 'ऊँ शिवायः नमः' रामें आ 'राधे' से करेला। दुकानदार तउलत समय 'रामे एक, रामे दू रामे–तीन' या 'ओम–एक, ओम–दू, ओम–तीन' से नाप–जोख करिके आपन भाग्यलक्ष्मी के रिझावेला वकील, जज, प्रोफेसर, साहित्यकार शब्द, अर्थ, रस, छंद, अलंकार के चलते अजर–अमर हो जाला–

शब्द जीव तिहि अर्थ मन, रसमय सुजश सरीर।
चलत चहुँजुग छंद गति अलंकार गम्भीर।।

शब्दन के मोह संसार

कहल जाला कि 'किताबन में एगो दुनिया बसल बा।' आजु काल्ह के भाषाशास्त्री कहेले कि 'शब्दन में एगो दुनिया बसल बा'। देखल जाव त बुझा जाई कि हर शब्द के आपन अलग भूगोल आ इतिहास बा, अलग समाज आ संस्कार बा। कुछ शब्द बेधेला, कुछ सालेला आ कुछ चकनाचूर कर देला। कुछ शब्द राहत देला, मन गद–गद हो जाला।

जख्म तलवार के गहरे भी हों मिट जाते हैं
शब्द तो दिल में उतर आते हैं भालों की तरह।

'शब्द' के एगो विशिष्ट शास्त्र होला। 'शब्द' समय के साथ बनेला, कभी त इतिहास के गर्त में गुम हो जाला आ कभी दिन पर दिन चमचमात रहेला। आजुकाल्ह 'सेल्फी' के धूम मचल बा, एकर आपन पहचान बा, इतिहास–भूगोल बा' कुछ शब्द त प्रेमी–प्रेमिका के दिल में बसेला आ कुछ कहल–सुनल जाला। 'हलो' शब्द पर शोधपरक विवेचन भइल बा' ग्राहम बेल के गर्लफ्रेंड के नाम 'हलो' रहे। जब ऊ टेलीफोन के खोज कइले त सबसे पहिले 'हलो' शब्द कहके आपन बात शुरू कइले। अब त सब कोई, एही शब्द से आपन बात कहेला। 'हलो' के बाद 'ओ.के.' के प्रयोग होला। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति एंड्रूज जेक्सन' आल करेकट' शब्द के संक्षेप में ओ.के. कहले आ ई अब पूरा प्रचलन में बा। इहो सुनल जाला कि अमेरिका के रेलवे स्टेशन पर कार्यरत क्लर्क 'ओबाडिया केली' सब पार्सल बंडल पर आपन नाम के पहिलका अक्षर 'ओ' आ 'के' लिख देव। एह तरह देखादेखी 'ओके' शब्द पूरा संसार में धूम मचा दिहलस।

'शब्द' अचूक औषधि हऽ, जेकरा से रोग दुरदुरावल जा सकेला आ बोलावलो जा सकेला। भोजपुरी के आदि कवि कबीर दास के कहनाम बा–

सब्द सब्द सब कोइ कहै, सब्द के हाथ ना पाँव।
एक सब्द औषधि करै, एक सब्द कर घाव।।
एक सब्द सुखरास है, एक सब्द दुखरास।
एक सब्द बेधन कटै, एक सब्द गलफाँस।।

साँचो समझीं त शब्द सोना, चाँदी, हीरा, जवाहरात से बढ़ के अनमोल रतन हऽ–

सब्द बराबर धन नहीं, जो कोइ जानै बोल।
हीरा तो दामों मिलै, सब्दहि मोल न तोल।।

अपना पूर्वज कबीरदास से प्रेरित होके हम भोजपुरी शब्द–अर्थ पर चिन्तन–मनन करीले। हमरा बड़ा आश्चर्य भइल, जब हम अंतर्राष्ट्रीय आक्सफोर्ड डिक्शनरी के पन्ना पलटलीं रउओ सभ अखेयान करब त पाइब कि 'लावा' के अंग्रेजी 'Parchedrice, 'छाछ के अंग्रेजी 'Butter Milk' सौतेला भाई 'के 'Half Brother' 'फुआ, मौसी, चाची के अंगेजी Aunt दिहल बा। एह शब्दन पर विचार करीं सभे। चाउर भुँजला पर भूँजा होला, जवन गरिष्ठ हऽ भारी हऽ। 'लावा' त पथ्य के रूप में दियाला जवन हलुक होला। सही में एकर अंगेजी 'Parched Paddy' होखे के चाहीं बाकिर अन्धानुकरण से अबहिंयों 'Parched Rice' चलऽता। 'छाछ' में ना त Butter बा ना Milk बा। ई त दही के मथल द्रवीभूत सुपाच्य पेय हऽ एकरा के 'Liquified Curd' कहला में का गलती बा। अंगेजी के संस्कार में Half Brother के भाव बा। ओकरा के Step Brother कहला से के रोकता! अपना इहाँ फुआ, मौसी,चाची में बड़ा अंतर बा। भारतीय संस्कृति में ई तीनू के अलगे महत्व बा। सबके एके शब्द में पुकारल दिमाग के दिवालियापन बा। हम तऽ भोजपुरी भाई सभ से निहोरा करतानी कि शब्द के गूढ़भाव के परखीं जइसे तुलसीदास 'कथा राम के गूढ़' पर गहन खोजबीन कइनीं। ••

एन-१०/२६ के-१, जानकीनगर, बजरडीह, वाराणसी,
मो० : ०८७६५८४७०८५

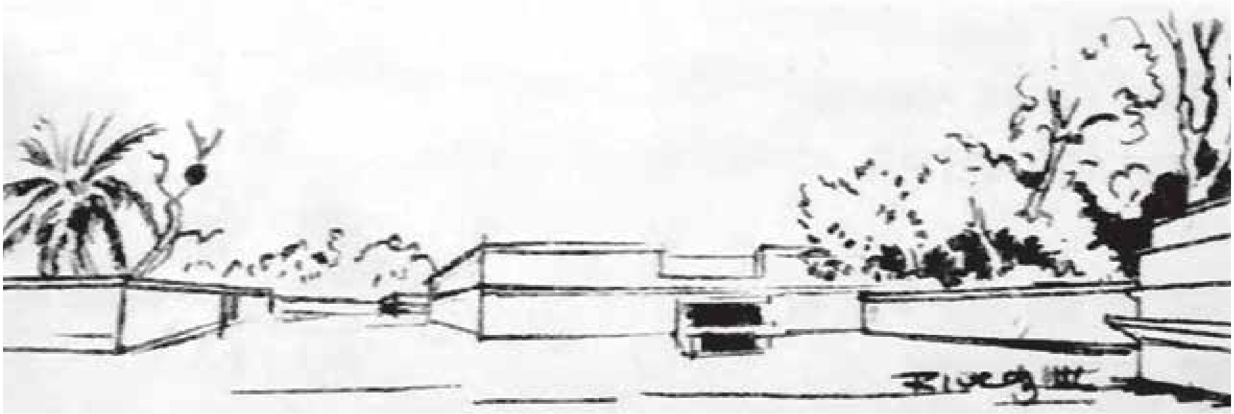

सफरनामा

विजयशंकर पाण्डेय

विपिन भरसक प्रपास कइलन कि बँगला में कहीं अर्पिता के रहे कऽ सबूत न मिले। तबो कहीं न कहीं औरत के रहे कऽ सबूत मिल गयल। चूड़ी, लिपिस्टिक, ब्रेसरीज, निरोध बिस्तर के नीचे पड़ल रहे। खून के घूँट पी के हम रह गइलीं। बिपिन कई बार पुछलन "गर्विता तू काहें बहुत गम्भीर देखात हऊ?' हम टाल गइलीं।

विपिन कऽ नोकरानी पूछलेस "मेम साब तुमसे एक बात पूछना माँगता है।"

–"हाँ पूछो क्या बात है"?

"तुम विपिन साब का जनाना है कि किछु और? साब बोलता था कि उसका बियाह नईं हुआ है। ओ कुँवारा है। ओ अर्पिता के सँगे विवाह का बात कोरता था। और संगे बिस्तर पर सोता था। और एकटा इबार्सन कोरे निए छे। बोहत पापी आछी शाला। तोमार दिकेर हिन्दुस्तानी ऐसा माफिक होता है? शाला बोदमाश। इसको बंगाली लोग छोड़ेगा नहीं। बोका चोदा कहीं का।"

हम चुप–चाप सुन लेहली। फँसल बिलइया घर में रोवे।

विपिन–अर्पिता कऽ हाथ पकड़ले हएन, अइसन एक फोटो अर्पिता हमके दिहलिन, ओकरे सँसे। अउर कई फोटो दिललिन। समुन्द्र के किनारे कऽ 'जू' में कऽ, पाँच सितारा होटल में कऽ। अउर एक विपिन क चिट्ठी जवने में साधे जिये–मरे कऽ बात कइले रहलन। पत्र लिखले रहलन कि "हमार कोई शादी नाहीं भयल हौ। बचपन में शादी भयल रहल, जवन बहुत पहिले टूट चुकल हौ। चिट्ठी अंग्रेजी में लिखल रहल। ओके अर्पिता बहुत सम्भार के रखले रहली। कलकता से लौटले के बाद जौनपुर आके अम्मा–बाबू जी के विपिन के चिट्ठी अउर फोटो देखउलीं। ओन लोग देखतै रह गइलन। ओनके सामने अन्हार हो गयल। काटा तऽ खून नाहीं। दिमाग चक्कर खाये लगल। मुँह से कवनो बकार न फूटे। सासु जी के आँखी से आँसू के धार रूकबे न करै। रह–रह के खटिया पर सूत जाँय। हाय रे विपिन ई तू का कइलै?

'हम लोग के जहर देके तब तू ई काम कइले होते।'

बाबू जी टुकुर–टुकुर ताकत रहलन। बार–बार फोटो देखैं।

दू दिन जौनपुर रुकले के बाद हम राबटगंज आ गइलीं। माई–बाऊ के बाबा के विपिन कऽ हाल बतौलीं। एक सप्ताह के अन्दर हमार विपिन से तलाक क पेपर राबटगंज न्यायालय में पेश हो गयल।

ओह दिन भोजन के बाद जब हम बाबा अउर रामेश्वर जी के (अपने ससुर) दूध देवे गइलीं, तब हमार बाबा कहलन "देखा रामेश्वर भइया ई हमार पोती हौ, राबटगंज डिग्री कालेज में हिन्दी के प्रवक्ता हौ।" रामेश्वर जी देखतै रह गइलन। हमरे हट जाये पर बाबा से कहलन "रजनीकान्त भइया गर्विता क बियाह विपिन से हो जात त बड़ा अच्छा होत। पुरानी रिस्तेदारी नई हो जात। सोने में सोहागा। लड़का–लड़की दूनो क जोड़ी बहुत अच्छी होई। विपिन अंग्रेजी क प्रवक्ता, गर्विता हिन्दी क। एक ही विद्यालय में। जइसे गर्विता सुन्दर, सुशील, बिदुषी हइन ओइसहीं विपिनो बाड़न। दूनो कऽ जीवन बहुत सुखमय व्यतीत होई"

बाबा के दूध क गिलास देहले के बाद हम भाई के बगल में आके अपने चारपाई पर सूत गइलीं। हमके कब गहरी नींद आ गयल, पता नहीं।

विपिन त पहिले से हमरे ऊपर लट्टू रहलन। ओनके मन क मुराद पूरा भयल। हमार शादी तय हो गयल। हमके कवनो एतराज ना रहल। बाबा हमसे पुछले रहलन। हमार रुख देख के निरणय लेलहन। हम लोगन के खूबै धूम–धाम से विवाह भयल। हाथी, घोड़ा, बग्गी, कार, मोटर साइकिल से सजल बराती। ओ समय गाँव क बहुअरि लोग गीत गावत रहलिन...

"विपिन भइया हथिया सँवारल, सिंगारल,
सोनवन लसल लगाय।
शशिकान्त भइया हथिया दुवारे भीर लागल,
लै, लै कुँवारी क दान।
पूरब खोजलीं बेटी, पच्छिम खोजलीं,
खोजि अइली देश संसार,
तोहरे सरीखे बेटी बर नाहीं मिलैलैं
अब बेटी रहबू कुँवार

विदाई के समय माई हमार सुनैना की तरह समझौले रहलिन "अपने पति के देवता के तरह मानै। अपने सास–ससुर के माई–बाप के तरह मानै। सबके खाये–पिये क ख्याल रखिहै। अइसन लगत रहल, जइसै मैना पार्वती के समझावत होयँ।

हम विपिन के गाँव पन्द्रह दिन रहके राबटगंज आ गइलीं प्रेम पूर्वक एक वरिस क समय बीतल। दैव योग से एक बारिस बीतत–बीतत विपिन क केन्द्रीय विश्वविद्यालय कलकत्ता में अंग्रेजी के प्रवक्ता पद पर नियुक्ति हो गइल। विपिन कलकत्ता चल गइलन। हम अकेले राबटगंज सास–ससुर के साथे रहे लगलीं। सास–ससुर कभी गाँव कभी राबटगंज आवल–जायल करें।

छुट्टी में विपिन कलकत्ता से राबटगंज आ जायल करैं। तीन–चार साल में विपिन क रवैया बदल गयल। साल–साल भर घरे न आवैं हमरे चिट्ठी देवे पर अपने के बहुत व्यस्त बतावैं। "गर्विता हम इहाँ आके बहुत दुःखी हई, तोहरे–बिना मन नाहीं लागत" अइसहीं जवाब आवे। जब कभी आवैं तऽ एके–दू दिन में भाग जायँ।

चौथे साल बाबू जी के कहले पर हम खुदे कलकत्ता पहुँच गइलीं। विपिन के चिट्ठी लिख दिहले रहलीं कि

"दस जनवरी के हम दिल्ली–हावड़ा ट्रेन से सुबह आप किहाँ आवत हईं।"

दस जनवरी के केन्द्रीय विश्व विद्यालय के बँगला नं0 चौदह रवीन्द्रनाथ टैगोर लेन में आठ बजे पहुँच गइलीं। रविवार क दिन रहल। विपिन आराम से देर तक सुतल रहलन। कालबेल क आवाज सुनके अर्पिता समझलिन कि दाई हौ। दरवाजा खेललिन त सामने हमके देखके अचरज में पड़ गइलिन। पुछलिन "आप कौन? मैं गर्विता, विपिन की पत्री। हम कहलीं। अर्पिता सन्न रह गइलिन। बस एतने कहलिन "आइए अन्दर आइए।" हमके सोफा पर बइठा के अर्पिता अन्दर जाके विपिन से बोललिन 'ओहो देखे केऊ एसे छे। निके के आपनार पत्नी बोले छे! उठा देखा। कोई औरत आइल हइन। अपने के आप क पत्नी बतावत हइन। विपिन के जइसे काठ मार देहलेस। ओनके पैर के नीचे क जमीन खिसक गइल।

अर्पिता के विपिन समझौलन" तुमीं निजे के बोलो कि सर के निगरे थिसिस देखा नोर एखन एसे छी।" (तू अपने के बतावऽ कि हम अवहियै अइलीं हँऽ) सर के अपन थिसिस दिखावे बदे)।

फिर कुछ संयत होके हमसे कहलन "गर्विता आवे क सूचना काहें नाहीं दिहलू? हम स्टेशन पर आ जाइत)

– हमार चिट्ठी नाहीं मिलल का?

– कब भेजले रहलू ?

– तीन तारीख के स्पीड पोस्ट से। कहाँ लटक गइल। अर्पिता ई कहके चल देहले रहल सर आभी जाच्छि, परे देखा कोरिबो। एके कहतै

बहुत तेजी से अर्पिता नव दू ई ग्यारह हो गइल रहल। विपिन क हालत देखतै बनत रहल। ए रूम से ओ रूम में भीजल बिलार की तरह दुबकल फिरत रहलन। ओनके समझ में न आवे कि का करीं का न करी,'इधर कुवॉ, उधर खाँई।'

हमके तऽ दाल में काला समझ में आ गयल रहल। लेकिन कौनो सवाल नाहीं कइलीं। ओन लीपा–पोती करत रहलन। पन्द्रल दिन बँगला नं0 चौदह में रहलीं अर्पिता के विषय में चरचा नाहीं कइलीं। लेकिन एनकर सब सूचना पा गइलीं।

विपिन समझत रहलन कि 'गर्विता अउर अर्पिता के बेवकूफ बनाइत ओनके बाँये हाथ क खेल हौ लेकिन ओन नाहीं जानत रहलन कि अर्पिता बंगाली लड़की हौ। ओके मूरख बनाइब टेढ़ी खीर हौ।

ऊ दाँत खट्टा कर देवे वाली लड़की रहल। हमके त हमार मतारी जवन समझाये रहलिन, उहै दिमाग में नाचै। दू दिन बाद हमार चिट्ठी विपिन के मिलल तब ओनके विश्वास भयल।

ए घटना के चार दिन बाद विपिन के विद्यालय चल गइले पर, अर्पिता हमरे पास आइलं। अपने विषय में सब कुछ सच–सच बता दिहलेस।

"विपिन हमको बोला हाय कि ओ शादीशुदा नहीं हाय। हमारा थिसिस पूरा होने पर आमार संगे विवाह कोरने का प्रामिस किया है।"

"तुम्हारे साथ विपिन ने बहुत गलत किया है" हम कहलीं। कलकत्ता न्यायालय में अर्पिता विपिन के खिलाफ धोखाधड़ी, नारी शोषण, बलात्कार क मुकदमा चला दिहलिस। जाँच के बाद सी.ओ. विपिन के गिरफ्तार करके जेल भेज दिहलन।

जेल में विपिन गइलन तब ओनकर हाल देखतै बनत रहल। तनिको मोका मिलत तऽ आत्म हत्या कर लेतन। एतना आत्मग्लानि अउर पश्चाताप होत रहल कि बयान नाहीं कयल जा सकत।

बैरक में जातै बंगाली कैदी एनके अपर टूट पड़लन। मारो शाले बोका–चोदा को। बंगाली छोकरी के साथ बलात्कार किया होय। टीचर हाय। पढ़ाता था। उससे शादी कोरने को 'प्रामिस किया था। इसको वाइफ हाय। वाइफ आया था। जेल के दिवान बड़ी मुश्किल से विपिन के बचौलन। बगल के बंगला में रहे वाली रंजना देवी जवन हमार सहेली हो गयल रहलिन विपिन क सब हाल चाल बतावल करें। विपिन के जेल जाये क सूचना हमके रंजना दिलहिन।

अर्पिता क मुकदमा फास्ट ट्रैक में चलल। नौ महीना में फैसला आ गयल।

"कनविक्ट विपिन इज ए लिटरेट मैन आफ मिसचिवियस नेचर। ही हैज बीन ब्लैकमेलिंग एण्ड चीटिंग अर्पिता। एण्ड इक्सप्लाइटिंग हर सेक्सुअली। ट्रैडिसन आफ टीचर एण्ड प्यूपिल हैज वीन डिमिनेस्ट एण्ड इनसल्टेड बाई हिम। देयरफोर सेवेन ईयर रिगरस इप्रेजनमेंट इज एवार्डेड टू हिम। हिज आल ओरिजनल सर्टिफिकेट आफ एजूकेशन शुड बी टेकेन बाई यूनिवार्सिटी एण्ड केप्ट इन कस्टडी, सो दैट जस्टिस इज जस्टिफाइड।"

"अभियुक्त विपिन एक पढ़ा लिखा शातिर स्वभाव का आदमी है। अर्पिता को धोखा देकर इसका यौन शोषण करता रहा है। गुरू–शिष्य परम्परा को लज्जित किया हैं अतएव इसे सात साल के सश्रम कारावास की सजा सुनाई जाती हैं इसके शिक्षा के मूल प्रमाण पत्र विश्वविद्यालय जब्त कर ले। ताकि न्याय हो।'

हमके खटिया पर लम्बी–लम्बी साँस लेत देख के माई समझ गइलिन कि कवनो डरावना सपना हम देखत हई"। कई बार हिलाये का बाद हमके होश आयल।

– का बात हौ गर्विता? माई पुछलिन।

– फिर डिटेल में माई के हम आपन सपना सुनौलीं।

••

विजयशंकर पाण्डेय, गुंजन कुटिया, नारायणी बिहार कालोनी, चितईपुर, सुन्दरपुर, वाराणसी २२१००५

कहानी

नरियर बाबा क भूत

सुमन सिंह

ओह दिने खूबे डेरवावन, भकसावन अन्हरिया रात रहे। भादो क महिन्ना झिमिर–झिमिर बुन्नी पड़े। जब टीशन से हमहन क उतरलीं जा त गोड़ कहँवा पड़त ह, जनइबे ना करे। उप्पर ले दई बरीस के नरक कय देले रहलन। गचका–हिल्ला हेलत, लुग्गा–फट्टा करिहांय ले खोंसले, अंदाजे डहरी चलल चल जात रहलीं जा। आगे –आगे 'ई' तोहार बाबा चलत रहं पाछे–पाछे हम। तले ए बचवा साँच कहत हई, काली माई कीरये कवनो पाछे से तुरतुराय के कहत ह कि 'अले हले मिथइया हमनियो के देबी कि ना।' हमार करेजा धक्क से रह गयल कि ई के ह पिछवां जे हमरे झोरा में रखल मिठाई के बारे में जान गयल। मिठइया के बारे में त तोहार बब्बो न जानत रहलन। डरन हमके कँपकँपी लेस दिहलस। हमसे एक हाथ के दूरी पर तोहार बाबा रहलन। हम उनके लग्गे चहुँपे खातिर धउरे लगलीं। धौरत जायीं, हाँफत जायीं बाकिर उनके लग्गे चहुँपिए न पायीं...।'

'अन्हार न रहल त कइसे देखात रहल कि बाबा एक हाथ के दूरी पर हउवन ?' गोल–गोल आँख कइले गोलू आजी के टोकलन।कथा के भयानक रस में से वाचक अउर श्रोता दुनू एक झटके में बिना बूड़ले बहरे आई गइलन। गोलू क बिच्चे में टोकल आजी से ढ़ेर कथारस में पोरे–पोर डूबे क तैयारी करत लइकन के बाउर लगल।

'हरे गोलुवा ढेर दिमाग खराब मत कर चुप मार के कहनी सुन। नाही त दुई थप्पड़ मारब न, त गेना नियन पलटिया खईबे। जान जो...। 'आँख तरेरले थप्पड़ मारे खातिर भुजा उठवले बड़का भइया सिंटू क क्रोध चरम पर रहे।

'ढ़ेर लड़े क मन करत ह त दुआरे जा सं। हमहन के सांती से कहनी सुने दा सं। हं आजी, आगे का भयल ?' सबसे बड़की दीदी विभा कहलीं।

'ए बाची हो, कहत हईं न कि कहनी ना ह, ई हमरे आंखी के सोझे घटल रहल। केहू दोसर कहत त हम ना पतियतीं बाकिर एहि आंखी से देखलीं, एहि काने से सुनलीं। जान जा लोग ई कुल्ह में तनिको झूठ ना ह।' आजी अपने कान अउर आँख के छू–छू के आँखिन देखल, कानन सुनल घटना के सत्यापित करे क भरपूर कोशिश में लगल रहलीं बाकिर गोलू माने के तैयार ना रहलन कि घुप्प अन्हरिया रात में आजी के बाबा एक हाथ के दूरी पर देखात रहल होइहन। उनके आंखी में संदेह देख के सबही के शंका रहल कि ऊ रंग में भंग कय दिहन। उनके सब भगावे लगल रहे। बाकिर ऊ टस से मस होवे के तैयार ना रहलन। केहू तरे मना–चोना के आजी से दोबारा कहनी सुने खातिर सब एक चित हो गयल।

'त जान जा कि ओह घरी जब पाछे से मिठइया, मिठइया क हाला होवे लगल त हम डेरा के धौरलीं बाबा ओरी बाकिर बाबा मिलते ना रहलन। धौरत रहलीं कि तब्बे देखलीं कि समनवा केहू सफेद लुग्गा पहिरले मोटरी –गठरी नियन बइठल ह। ओके देखते हम सुन्न हो गइलीं। तोहरे बाबा के गोहरावे लगलीं 'ए जी, ए जी, सुनी, तनी सुनी बाकिर कंठ जनात रहे के रुन्ह गयल रहल। बोलिये ना निकले। गोड़ एक –एक मन क हो गयल रहल,उठबे न करे। सांस–परान अटक गयल रहल। काली माई मनवलीं, सत्ती माई मनवलीं बाकिर ऊ सफेदकी गठरिया हिलबे न करे। पाछे से कुल मिठईया, मिठईया कय के चिचियाएं सं, आगे सफेदकी मोटरी टस से मस ना होखे। अउर ऊ उफ्फरपड़ऊनू तोहार बाबा भेटाइबे ना करें...।' आजी के कहनी कहत –कहत हुक्का क तलब होवे लगल। ऊ एहर–ओहर देखे लगलीं। अबहीं उठहीं के रहलीं कि विभा भाग के गइलीं अउर हुक्का बोझ के ले अइलीं।

'फीर का भयल' विभा आगे सुने खातिर आकुल–ब्याकुल रहलीं।

'तमखुआ तन्नी से बढ़ा देले रहतू बीभा बाची। चला कवनो बात ना ...त ओह समय त हमार डरन सांस –परान टंगायल रहल। हम लगलीं देवता पित्तर मनावे, जोर–जोर से चिचियाये लगलीं कि एकबएक दयितरा बाबा क होस पड़ गयल। त ए बाची जइसहीं दयितरा बाबा क नाव लिहलीं हऊ सफेदकी गठरिया पुलिया में कूद गयल... छपाक....।'

'काहें, अन्हारे कइसे देखा गयल कि ऊ पुलिया में कुद्दल।'

'अरे निस्तनिया चुप रहबे कि ना,कि हम जायीं बरतन मांजे।'

'ना हो आजी मत जा, तू भगबे कि ना इँहा से गोलुआ... कह देत हईं एतना जोर से मुक्का मारब कि जा के ओही पुलिया में गिरबे।' बड़का भइया क क्रोध एना पारी फफाये लगल रहल बाकिर गोलू अपने जगह से हिललन ना।

'ए आजी आगे का भयल ?' बड़का भइया आजी क चिरौरी करत आगे बढ़े क निहोरा कइलन।

'त ओह समय लगल कि दयितरा बाबा हमरे सोझा खड़ा हउवन अउर कहत हउवन..बिना पांछे देंखने हमरे संगे संगे चल आवँ। ऊ नाक में बोलत रहलन हम जान गइलीं कि इहे दयितरा बाबा हउवन...।'

'काँहे दयितरा बाबा नाक में बोलेलन ?' गोलू फिर आपन गोल –गोल आँख नचावत बिच्चे में बिघ्न डाल दिहलन।

'रुक तोके एना पारी बतावत हईं, चल बहरे चल।' बड़का भइया गोलू क कान खींचत बहरे भगावे लगलन बाकिर गोलू अंगद के गोड़ नियन गोल में जमल रहलन। बड़का भइया क कुल कोसिस बेकार हो गयल त हार के फिरो गोल में शामिल हो गइलन अउर आजी से कहनी आगे बढ़ावे क निहोरा करे लगलन।केहूतरे फिरो कहनी शुरू भयल।

'त दयितरा बाबा के कहले प हम बिना पाछे देखले उनके संगे –संगे आगे बढ़े लगलीं कि फिरो पाछे से मिथाई –मिथाई कय के कुल्ह चिचियाये लगलन स।पता

ना हमके का भयल कि हम पाछे पलट के देख दिहलीं ...।' कहनी कहत–कहत आजी चुपाय गइलीं अउर लगलीं आपन बांह सुहरावे।

'देखा लोग रोवां–रोवां खड़ा हो गयल।' गोल के बाँह आगे कय के देखवलीं।साँचो उनकर रोवां–रोवां खड़ा रहल। विभा छू के सत्यापन कइलीं।

'साँचो हो आजी, देखा त अबहियों ले डरन तोहार रोवां खड़ा हो जात ह। आगे का भयल ? जब तूँ पीछे घूम के देखलू त ?' विभा के संगे–संगे सबही क उत्सुकता चरम प रहे।

'जइसहीं पाछे घूमलीं कि देखत का हईं कि भूतन क लायन लगल ह। कवनो के मूड़ी ना ह, कवनो क गोड़ ना ह त कवनो क हाथ ना ह। ए बचवा, जवन मुड़ीकटवा रहे ऊ सबके ले आगे रहल बाकिर कुल लूल –लंगड़ रहलन स। कवनो सोगहक ना रहलन। उनहन ओरी तकते हमके घुमटा आवे लगल अउर हम ओही लयिनिया पर बेहोस होके गिर पड़लीं।'

'अच्छा त लयिनिया ओरी ले आवत रहलू, तब्बे न हेतना कुल कटल–पीटल भूत–परेत भेंटा गयिलन। केतना अदमी के त कटाईल, खून से सनायिल हम अपने एहि आँख से देखले हयीं। एगो अदिमी त हमरे अंखिया के समनवे खच्च से कटा गयल। ओकर भुर्जी–भुर्जी कुल लयिनिया पर छींटा गयल रहे। ओके देख के त हम महिन्नन सुतलीं ना।' विभा के आंखी में रेलवे लाईन पर कट के छिंटाईल रक्त–माँस क लोथड़ा घूमत रहल।

'ए बीभा तू चुप रहबू कि ना, आजी हो आगे सुनावा, फिर का भयल ?' बड़का भइया कहनी में बार –बार के व्यवधान से त्रस्त हो गयल रहलन।

'जब हम बेहोस होके गिरे लगलीं त जनायिल कि दयितरा बाबा कहत हउवन कि,कहले रहलीं हं न कि पाछे मत देखिहा बाकिर मनलु ह ना, जा अब त ई कुल तोहके छोड़िहन ना, खाय–चबाय जयिहन। दयितरा बाबा क एतने बतिया सुनली कि बेहोस हो गइलीं। जब आँख खुलल त देखत का हईं कि घरे खटिया प पड़ल हईं। गाँव भर क मेहरारू भरल हईं। सुक्खु ओझा बोलावल रहलन। खूब ओझाई भयल बाकिर भुतवा छोड़बे ना करं। कई बरीस ले बेराम रहलीं, जयिसहीं अंखिया मुदीं कि लगे कुल भुतवा समने खड़ा हउवन, तुरतुराय के मिठाई मांगत हउवन। उन्हन के देखते फिरो बेहोस हो जायीं। तब सब कहल कि दयितरा बाबा क मनौती माना। हमार सास मनौती मनलीं, गाजा–बाजा संगे पूजा भयल तब जाके कुल भूत पीछा छोड़लन। कहनी खतम, पइसा हजम। जा लोग अब हमके काम करे दा।' आजी विभा के कान्ही प हाथ धय के ठाढ़ भईलीं। अबहीं झाड़ू लेके अँगना बहारे जाते रहलीं कि गोलू झट्ट से सवाल दाग दिहलन।

'तू त कहत रहलू ह कि कहनी ना ह, साँच ह। तब फिर कहनी कइसे हो गयल?' गोलू कब्बे से साँच पर आंच बनल रहलन अउर आजी के नाक में दम कइ देले रहलन। आजी हाथ क झाड़ू पटकत गोलू के दुआरे ले दौड़ा अईलीं मारे बदे बाकिर आजी के चिढ़ावत–रेघावत ऊ सिवान ओरी भाग गइलन।

आजी ओइसे त एह घर में चउका–बासन करँ, झाड़ू–बुहारू करँ। इनार से पानी भर के ली आवें, मालिक–मलिकाइन क सेवा–टहल करँ अउर इनकर सेवा–टहल घरे क लइका–लइकी करें। हुक्का भर के,इनार से पानी खींचे में मदद कर के, दुकानी से तमाखू लियाए के रोज इनसे एक कहनी क मांग होखे। जब ले ना सुना दें तब ले श्रोता लोग परिकरमा करें। चिरौरी–बिनती करें। रोज के कहनी में सब सांस रोकले शालीन श्रोता के भूमिका में रहे बस गोलू एहर–ओहर क सवाल कय के रंग में भंग कय दें। गोलू श्रोता–मंडली क सबसे छोट बाकिर सबसे चतुर अउर नटखट सदस्य रहलन। सवाल पूछ–पूछ के सबही के चिढ़ा दें। सब उनके गोल से भगावे लगे,डांटे लगे। एहि कुल से उनकर आजी से पटरी ना बइठे, उनकर हुक्का–तमाखू चोराय के एहर –ओहर रख दें। धोवल बरतन में धूर फेंक के भाग जांय। झाड़ल–धोवल अँगना में कनई सनल गोड़ से लंगड़ी खेले लगें। कहनी सुनत के बेरी बड़का भइया, दीदी लोगन से पड़ल मार–डाँट क बदला ऊ आजी से लेवें। जेतने आजी के ऊ तंग करें ओतने उनके घरे के लोगन से मार–डाँट पड़ल। एक दिन त हद हो गयल। कोनवा वाले ओसारी में दिनवो में अन्हार रहे। दुपहरिया के समय तनी–मनी अँजोर रहे। आजी जब काम पर अइलीं त गोलू कहलन कि जा आजी तोहके छोटकी अम्मा बोलावत हईं कोनिया वाले ओसारी में।

'काहें?' आजी संशय में पड़ल रहलीं।

'हम का जानी ,जा अम्मा से पूछा।ष्कहके मुस्कियात गोलू दुआरे चल दिहलन कि कुछुवे देर में ओसारी ओरी से आहि माई, आहि बाबू, भूत–भूत करत कमकरिनिया आजी भागत–कुद्दत अइलीं। सब डेरा गयल कि का भयल। ओसारी में गइले पर पता चलल कि एगो लाल कपड़ा लपेटले केहू बइठल ह। ओकर करिया नरमुंड दूरे से आँख फड़ले घुइरत ह। पहिली नजर में सब देख के सोकता गयल बाकिर जब बाबा जाके ओके उठा के ली अइलन त पता चलल कि नरियर क ऊपरी हिस्सा जवने में आँख नियन बनल रहेला ओही के करिया रंग से रंग के ठिल्ली के ऊपर धय देवल गयल रहल अउर ठिल्ली के लाल कपड़ा से एतरे ढ़ँकल गयल रहे कि पते ना चलत रहल कि ऊ ठिल्ली ह। लगत रहल कि करिया मुंह वाला ,धंसल आँख वाला अदिमी नियन केहू दम साध के, आलथी–पालथी मार के बइठल ह। ई हरकत गोलुवे क हो सकेला से, मय घर सहमत रहे। गाँव भर में गोलू खोजाये लगलन बाकिर रात ले ऊ कत्तो ना भेटइलन। जब रात के नौ बज गयल त ऊ भुसउल से निकल के अपने बाबा के खटिया प 'धप्प' बोल के कूद गयिलन। एक–दू थपरा खइले के बाद उनके खाना खाये के मिलल अउर किरिया खिआवल गयल कि अब ऊ अइसन कुल काण्ड ना करीहन। गोलू ओह समय त आंस चुआवत, कान पकड़ के किरिया खाय लिहलन बाकिर सबेरे होत कमकरिनिया आजी के पीछे–पीछे घूम के पूछे ना भुलइलन कि ,काहो आजी नरियर बाबा के भूत से डेरइलू ह कि ना....।' ●●

अस्सिटेंट प्रोफेसर(हिन्दी–विभाग) हरिश्चन्द्र पी. जी. कॉलेज , वाराणसी–221002

गाँव–जवार से
माटी के महक

(भोजपुरी भूइं रतनगर्भा हवे। सन्त, महात्मा, विचारक, भाषाविज्ञानी, गणितज्ञ, संगीतज्ञ, साहित्यकार, पत्रकार, वीर सैनिकन आ राजनेतन के जनम-करम के भूमि भोजपुरी क्षेत्र का गौरव आ गरिमा के देस-विदेस जनले-पहिचनले बा। छपरा, आरा, सीवान, बक्सर, गाजीपुर, मऊ, देवरिया, गोरखपुर के दिल का रुप में धुकधुकाए वाला जिला बलिया त, महर्षि भृगु बाबा, गर्ग, गौतम आ दर्दर जइसन मुनियन के तपोपूत धरती हवे। मंगल पांड़े का जरिये आजादी के बिगुल बजावे आ चित्तू पांडेय आदि का जरिये, आजादी के - घोषणा आ पहिल झंडा फहरावे के सौभाग वाला ई जनपद कला, संस्कृति, साहित्य, विज्ञान, कृषि आ राजनीतिक अगुवाई का दिसाईं अपना सतत् कर्म आ निष्ठा से कीर्त्ति-अरजन कइले बा।

राष्ट्र का निर्माण में अपना प्रतिभा, ज्ञान, कौशल आ निष्ठा से योगदान देबे वाला भोजपुरी जनपदन के, प्रतिभाशाली, विद्वान, संस्कृतिकर्मी, वैज्ञानिक, अर्थशास्त्री, प्रशासनिक अधिकारी आ अकादमिक लोगन का बारे में, भोजपुरियन के जाने के चाहीं- खास कर ओह लोगन का बारे में, जेकरा अपना भूमि, भाषा आ समाज से जुड़ाव आ आत्मीयता बनल बा। हम अपना एह विचार के ध्यान में राखत, एह नया स्तम्भ में एही माटी के महक का रूप में भोजपुरिया गाँव-जवार से अपना प्रतिभा आ मेहनत से आगा बढ़ल कुछ खास लोगन के परिचय वाली दुसरकी कड़ी दे रहल बानी - संपादक)

व्यक्ति विशेष/आचार्य विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

२० जून १९४० के भोजपुरी गँवई अंचल -भेंड़ियाहारी (रायपुर भैंसहीं), देवरिया (उ०प्र०) में जनमल श्री विश्वनाथ प्रसाद तिवारी हिन्दी के ख्यात कवि ,आलोचकन में गिनल जाले। गोरखपुर विश्वविद्यालय से एम० ए०, पीएच० डी० के बाद अध्यापन। रचना, आलोचना आ विमर्श के प्रतिष्ठित साहित्यिक पत्रिका ''दस्तावेज'' के लगातार सम्पादन से उनका रचनात्मक व्यक्तित्व में चार चान लागल। रहन -सहन, बात - ब्योहार में सरल आ सादा तिवारी जी अपना अनवरत साहित्य साधना का जरिये देश -विदेश आ दुसरो भाषा समाज में कीरति पवले बाड़न।

अध्यापन कार्य खातिर उत्तर प्रदेश सरकार से 'शिक्षक श्री' सम्मान पावे वाला तिवारी जी के रचना कर्म देश आ भाषा के सीमा तूरेला । तबे न ,अपना देश में 'हिन्दी गौरव' सम्मान आ 'व्यास सम्मान' का साथे ,उनके रूस के राजधानी मास्को में 'पुश्किन' सम्मान मिलल । उ०प्र०हिन्दी संस्थान 'साहित्य भूषण' सम्मान दिहलस। 'दस्तावेज' पत्रिका का सम्पादन खातिर 'सरस्वती' सम्मान पावे वाला तिवारी जी के अटूट साहित्यिक निष्ठा उनका सिरजन से जानल जा सकेले । 'आखर अनन्त','चीजों को देख कर', 'साथ चलते हुए', 'बेहतर दुनिया के लिये', 'फिर भी कुछ रह जाएगा' जइसन कविता संग्रहन का साथ, गद्य साहित्य आ आलोचना में उनकर केतने चर्चित कृति बाड़ी सन । 'छायावादोत्तर हिन्दी गद्य साहित्य,' 'नये साहित्य का तर्कशास्त्र', 'अज्ञेय और उनका साहित्य', 'समकालीन हिन्दी कविता', 'गद्य के प्रतिमान', 'हजारी प्रसाद द्विवेदी' अउर यात्रा संस्मरण का रूप में, 'आत्म की धरती', 'अन्तहीन आकाश', 'एक नाव के यात्री' जइसन किताब उनका अनवरत लेखन के साखी बा ।

श्री विश्वनाथ प्रसाद तिवारी जी हिन्दी कवियन आ आलोचकन पर लगभग सोरह गो पुस्तकन क सम्पादन कइले । छोट बड़ संपादित पुस्तक मिला के ढेर होई । उड़िया अनुवाद में दू गो कविता संकलन बा। आचार्य हजारी प्रसाद जी पर लिखल उनका किताब के गुजराती आ मराठी में अनुवाद भइल बा ।

तिवारी जी के अपना मातृभाषा भोजपुरी से गहिर लगाव बा । मिलला पर ऊ भोजपुरिये में आत्मीय भाव से बतियावेले। गोरखपुर विश्वविद्यालय में हिन्दी विभागाध्यक्ष के रूप में काम करत खा, हिन्दी का एगो प्रश्नपत्र लोकसाहित्य आ लोकभाषा का रूप में भोजपुरी साहित्य के मंजूरी दियावे में सहजोग त कइबे कइले, विश्व भोजपुरी सम्मेलन का देवरिया, भोपाल आ मुम्बई अधिवेशनन में सक्रिय भागीदारी कइले । 'पाती' पत्रिका के संपादक का रूप में हमरा अनुरोध पर, ऊ अपना प्रतिष्ठित पत्रिका 'दस्तावेज' के ६५ वाँ आ ६७ वाँ अंक भोजपुरी लेखन पर केन्द्रित कइले आ हजार प्रति निःशुल्क वितरित करवले । भोजपुरी का बढ़न्ती में उनकर ई जोगदान हमरा खातिर ना भुलाये जोग घटना रहे ।

श्री विश्वनाथ प्रसाद तिवारी जी वर्तमान में 'साहित्य अकादमी' के अध्यक्ष बानी । उहाँ के स्थायी निवास ऊहे बेतियाहाता, गोरखपुर बा, जहाँ से 'दस्तावेज' निकलेले। तमाम तरह के बिचार-सिद्धान्त आ राजनीतिक खेमेबाजी से परे, निरपेक्ष भाव से हमेशा सार्थक करे के प्रवृत्ति, तिवारी जी के विशिष्ट बनावेले। ••

व्यक्ति विशेष/डॉ0 रिपुसूदन श्रीवास्तव

२४ अगस्त, १६४० ई० के भरतपुरा, गोपालगंज में। स्व० विन्ध्याचल प्रसाद (पिता) आ स्व० चन्देश्वरी देवी (माता)। मुजफ्फरपुर से दर्शनशास्त्र में स्नातक (प्रतिष्ठा) आ स्नातकोत्तर परीक्षा, 'बिहार विश्वविद्यालय', मुजफ्फरपुर से पी-एच०डी० आ 'राँची विश्वविद्यालय', राँची से डी०लिट् के उपाधि।

'लंगट सिंह महाविद्यालय', मुजफ्फरपुर में आ 'बिहार विश्वविद्यालय' में रीडर आ प्रोफेसर के पद पर अध्यापन करत विश्वविद्यालय स्नातकोत्तर विभाग के आचार्य आ अध्यक्ष के रूप में ३१ अगस्त २००० ई. के सेवानिवृत्त।

डॉ० साहेब अध्यापन के साथ अपने विश्वविद्यालय के विभिन्न प्रशासनिक पदन पर बहुमूल्य योगदान देहनी। 'राष्ट्रीय सेवा योजना' के कार्यक्रम पदाधिकारी, कुलानुशासक, संकायाध्यक्ष (छात्र-कल्याण), संकायाध्यक्ष (मानविकी), सदस्य, सीनेट आ सिंडिकेट, प्राचार्य, लंगट सिंह महाविद्यालय, मुजफ्फरपुर जइसन पद सम्मिलित बा।

'भारतीय दर्शन परिषद्' आ 'इंडियन फिलॉसिफकल कांग्रेस' के अध्यक्ष, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से इमेरिटस फेलोशिप। बुल्गारिया के सोफिया विश्वविद्यालय में 'विजिटिंग प्रोफेसर'। विभिन्न विश्वविद्यालय में अपने नियुक्ति खातिर चयन समितियो में कार्य कइनी।

श्री रिपुसूदन जी 'बी०एन०मंडल विश्वविद्यालय', मधेपुरा (बिहार) के कुलपति आ बिहार के 'उच्च जाति आयोग' के सदस्य के रूप में महत्त्वपूर्ण योगदान दिहली।

वर्तमान में अपने 'रामकृष्ण मिशन', मुजफ्फरपुर के अध्यक्ष, 'संस्कार भारती', उत्तर बिहार प्रान्त के अध्यक्ष, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के सदस्य आ अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष बानी।

दर्शनशास्त्र के हिन्दी में तीन आ अंग्रेजी में छव गो किताब प्रकाशित बा। दर्शन के विद्वान भइला के साथ हिन्दी भोजपुरी साहित्य में महत्त्वपूर्ण दखल। हिन्दी कविता के तीन गो किताब प्रकाशित।

डॉ० श्रीवास्तव के लगाव भोजपुरी भाषा-साहित्य में शुरूए से रहे जे एल०एस०कॉलेज, मुजफ्फरपुर में अइला के बाद, डॉ० प्रभुनाथ सिंह, डॉ० ललन प्रसाद सिंह आ सिपाही सिंह 'श्रीमंत' का सँगे परवान चढ़ल। आ 'विश्वविद्यालय भोजपुरी परिषद' के स्थापना भइल।

डॉ० टी०बी० मुकर्जी, तत्कालीन कुलपति, बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर के भोजपुरी के प्रति उत्साही भाव देख के १६७२ ई० में भोजपुरी भाषा-साहित्य के पाठ्यक्रम में सम्मिलित करवलीं। स्थायी रूप से प्रवक्ता के नियुक्ति होखे तक इहाँ का दर्शनशास्त्र के साथ-साथ भोजपुरी पढ़इबो कइलीं। 'बिहार विश्वविद्यालय भोजपुरी पद्य-संग्रह' आ 'बिहार विश्वविद्यालय भोजपुरी गद्य-संग्रह' के संकलन आ संपादन में महत्त्वपूर्ण भूमिका रहल। अपने एह दुनों पुस्तकन के विद्वतापूर्ण संपादकीय भूमिका लिखले बानी। एकरा अलावे 'हीरा-मोती' आ 'आगे-आगे' जइसन काव्य संकलन के संपादन कइलीं। भोजपुरी में 'आग भइल जिनगी' (कविता संग्रह) आ 'आजु के भोजपुरी साहित्य' (निबंध संग्रह) प्रकाशित भइल बा ।

‘राज्य शिक्षा-शोध एवं प्रशिक्षण परिषद’ बिहार के द्वारा भोजपुरी पाठ्यक्रम खातिर बनावल गइल समिति में अपने के महत्त्वपूर्ण योगदान रहल बा। पाठ्यक्रम निर्धारण के साथ पाठ्य पुस्तक निर्माणो में भूमिका रहल। अपने १६६६ ई. में ‘भोजपुरी’ के संविधान के अष्टम अनुसूचि में सम्मिलि करे आ साहित्य अकादमी, नई दिल्ली से मान्यता खातिर राष्ट्रपति से मिलेवाला शिष्टमंडल में शामिल रहीं।

वर्त्तमान में रिपुसूदन श्रीवास्तव जी ‘भारतीय भोजपुरी साहित्य परिषद’ आ अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष बानी।

•• प्रस्तुति : डॉ० ब्रजभूषण मिश्र

भोजपुरी साहित्य अकादमी, मध्य प्रदेश के दू दिवसी साहित्यिक आयोजन

भोजपुरी संस्कृति आ साहित्य के संरक्षन - संवर्द्धन खातिर भोजपुरी साहित्य अकादमी (भोपाल) हरेक साल कुछ यादगार अकादमिक स्तर के आयोजन करेले ।मध्य प्रदेश संस्कृति परिषद ,भोपाल का ओर से भोजपुरी साहित्य अकादमी के निदेशक श्री नवल शुक्ल व्यक्तिगत रुचि आ निष्ठा से भोजपुरी कला -साहित्य का सृजनात्मकता के गरिमापूर्ण एकेडमिक प्रस्तुति देबे के कोसिस करत लउकेलन ।बितला तीन बरिस के भीतर भोजपुरी कला साहित्य के आयोजन, निदेशक आ उनका टीम के सार्थक कोसिस के प्रमाणित करत बा ।

विगत 30 सितम्बर 16 आ 01 अक्टूबर 2016 के दू दिवसी साहित्यिक आयोजन में तीन गो सत्र राखल गइल रहे । पहिल सत्र ‘कविता -पाठ’ के रहे ,जवना के अध्यक्षता डा० अशोक द्विवेदी कइलन । एह सत्र में शामिल भिन्न क्षेत्र का प्रतिनिधि कवियन में सर्वश्री तारकेश्वर मिश्र राही, कमलेश राय, भालचन्द्र त्रिपाठी, सुरेश काँटक, प्रकाश उदय, बलभद्र, कृष्णदेव चतुर्वेदी, उदय प्रताप हयात, मिथिलेश गहमरी, आ अक्षय कुमार पाण्डेय के नेवतल रहे ।

दुसरा सत्र ‘भोजपुरी कविता में विस्थापन’ विषय पर बतकही -विमर्श क रहे, जवना क अध्यक्षता प्रो० बद्रीनारायण कइलन । तिसरा सत्र ‘भोजपुरी लोकगीत आ कविता में प्रतिरोध’ विषय पर बतकही-विमर्श खातिर रहे, जवना के अध्यक्षता डा० रामनारायण तिवारी कइलन । बतकही सत्र में श्री अरुणेश शुक्ल, डा० आशा सिंह, डा०सुधीर रंजन, सुश्री अर्चना सिंह आदि वक्ता लोग आमंत्रित रहे, ओइसे कविता पाठ में शामिल कवि कथाकारो लोग एम्मे भरपूर हिस्सेदारी कइलस। कुल मिला के ई विशिष्ट आयोजन कुछ मामला में, आपन छाप छोड़े में सफल रहल ।

कहानी

टर्निंग प्वाइंट

कृष्ण कुमार

लोग कहेला–

"अपसर करे न चाकरी, चपरासी करे न वर्क।
दास मलूका कहि गये, सब कुछ करत कलर्क।

जे करी से खइबे करी। साँचहु अगर एगो चतुर किरानी होखे त कमीनी में पांचि गो अपसर के तड़िया सकऽता। ऊ बुर्ज बना ली। बिना हाथ–गोड़ चलवले बेल से अंगूर तूर ली। एह में दू राय नइखे। बाकिर उहे अगर ईमानदार हो जाओ तऽ दूनों टाइम के खरची जुटावे में तरेंगन लउके लागेला। रघुवंश बाबू के उहे हाल रहे। अपना मेहनत, लगन आ ईमानदारी के बदौलत सभ अधिकारी के दिल जीत लेलें। प्रशंसा के पात्र बन गइलें। कलर्क से हेड कलर्क हो गइलें। बाकिर अपना खातिर तीन–तेरह ना कइलें। समूचा जीवन फटेहाल रहि गइलें। एह बीचे घर के जिम्मेदारी आ पइसा के कमी से कई एक बेर उनका सोझा फांकाकसी के नौबत आइल। कबो उनका बुझा कि मुफलिसी उनका जीवन के कुंठा के राह प ले भागी। तबो अपना ईमानदारी आ धीरज से ऊ पीछा ना हटलें। कहसु– "सांच के डाढ़े मेवा फरेला। ओकरा कवनो कष्ट ना होखे। जे दोसरा के खुशी देला, ओकरे खुशी मिलेला।"

समय बदले के साथे किस्मत बदलल। कसहूँ जीभ–पेट जाति के शहर में एक कट्ठा जमीन किनलें। तीन गो बेटी बिअहलें। एगो बेटा रहन। उनका के पढ़ा–लिखा के इंजीनियर बना देलें। रघुवंश बाबू अबले नौकरी के समय ढ़लान पर आ गइल रहे। पूरे एक साल के नोकरी शेष रहि गइल। अब उनका बुझाइल, ऊँट पहाड़ से नीचे उतर रहल बा। सोचलें–दुखे–सुखे बेटा–बेटी के पढ़ा–लिखा के बिआहि देनी। सभे अपना घरे–दुआरे बिहरऽता। जिनिगी आपन ढ़ेर रंग देखवलसि। घरनी संगत छोड़ि भगवान के प्यारी हो गइली। उतार–चढ़ाव जिनिगी में लागल रही। एह सभ से जान कबो बांचे के नइखे। बाकिर अबहिं ले आपन घर ना बनवनीं। अब एह सरकारी क्वार्टर के कवनो भरोसा बा। नोकरी छुटी, क्वार्टर छूटी। मुश्किल से सरकार दो–चार महीना के मोहलत दिही। एह से अब कसहूँ आपन घर बनावल जरूरी बा। तब ऊ अपना एह सोच के काम रूप देवे खातिर जी–जान से लगि गइलें। बरिआर जुनून, जोश आ जज्बा के साथ एह काम के फतेकरे के जोगाड़ भिड़वलें। घर बनावल दाल–भात के कवर ना हऽ कि टप से मुंह में डलनी आ बे दंतिअवलहुं घोटि चलनी। ढ़ोढ़ी सरकि जाला। बेटा–बेटी से हलुक होखे में कबरि के चूर हो गइलन रघुवंश बाबू। थइली खाली हो गइल रहे। बेटी के बियाह के नाम पर अपना देहिं प आ अंत दांव में अपना नोकरी के पी.एफ. से लोन लेलें। उधार–पाईच कइलें। एको अधामति से बाजि ना अइलें। बाकिर लक्ष्य पाइये के दम ले लें। 'दरबे से सरबे, चहबे से करबे' ई उदाहरण चरितार्थ भइल उनका साथे। आ रिटायर होखे से ठीक एक महीना पहिले घर चक–चका गइल। दू गो बेड रूम, किता के बाहर एगो रूम, रसोईघर, पूजा घर, स्नान घर, ड्राइंग रूम देखि बड़ा अहलादित भइलें। टेलीफोन विभाग के मुलाजिम रहन। बेटा–बेटी, हीत–नाता, ऑफिस के स्टाफ सभका के नेवति के बड़ी धूम–धाम से गिरह–प्रवेश कइलें। सजाह भोज–'भात के तइयारी रहे। उनका बुझाइल, जइसे मंजिल भेंटा गइल होखे। बाकिर सभका गइला के बाद उनका घर भकसावन बुझाये लागल। बुदबुंदइलें– "बिन धरनी धर भूत के डेरा.....।" आजु धरनी रहती तऽ कतना अगरइती। धरनी के धरांठ घोरावे लागल। जेहन में कचोट सुनगल। सुखल घाव हरिअरा के बन–बना गइल। मन के भीतरी बेचैनी ठांठ मारे लाडाल। उनका सारी रात नींद ना आगल। नया घर कटवावन बुझाये लागल। चक्करघिन्नी से उबरे खातिर मन के बन्हलें। सोचले– अब त चउथापन में घरनी बसावल ठीक ना होई। लोग–बाडा मजाक–खिल्ली उड़इहें। बाकिर एगो काम हो सकऽता, बेटा के बदली अगर एह शहर में करा दे तानी तऽ घर सवसन हो जाई। उनकी बाल–बच्चन के साथे हमहूँ अझुराइल रहबि। टाइम पास हो जाई। तब हमरो रिटाएमेंट ना अखरी। एह काम खातिर बेटा–पतोहि से राय–सलाह कइलें। ऊ लोग बेहिचक तइयार हो गइल, "ई तऽ निम्मन काम सोचऽ तानी। बाकिर बदली करावल अतना आसान काम नइखे। बड़ी रोवेया लागी। दौड–धूप करे के परी। एड़ी–चोटी के पसेना एक हो जाई...।"

तब रघुवंश बाबू, बेटा से स्पष्ट कहलें, "एह में तोहरा कुछुओ नइखे करे के। हमरा लगे सभ जोगाड़ बा। एह से ई काम तू हमरा माथे छोड़ि दऽ। हम सम फरिआ लेबि.।"

तब बेटा अमित के बदली के जोगाड़ में भिरलें रघुवंश बाबू। जिला मुख्यालय से लेले राजधानी तक कौड़ि देले। उनकर बेटो उनके विभाग में रहलें। एहसे जे केहु अपसर–हाकिम परिचित रहलें, सभकर गाल सुहरवलें। 'जिन ढूंढा, तिन पाइँआँ..." वाली हालात भइल। आखिर में उनका सफलता हाथे लागल। पेट–बथाई दे के अपना शहर में बेटा के बोला के अहथिर हो गइलें। अब उनका बुझाइल कि घर बनावल सुफलान हो गइल...।

सवसन हो के फरहर मन से सभे रहे के सोचेला। बाकिर सांच कहीं तऽ ई ना हो पावे। विधना जवन चाहेला उहे होला। रघुवंश बाबू अब ले रिटाएर रहन। बाकिर सुबाहित सालो–माथा ना लागि पावल कि उनका जिनिगी में खलल के भाइरस पनपे के काम लागि गइल।

ओह दिन सोमार रहे। नहा–धोआ के पूजा–पाट कइलें रघुवंश बाबू। पूजा–घर से निकलले कि एगो अप्रिय वाकेया उनका साथे घटि गइल। दुधमुंहिया पोतिया पूजा–घर के बहरी ठीक दुअरिये लगे पैखाना कऽ के बगलिआ गइल रहे। तब पतोहि श्रद्धा टी. वी. देखे में मसगूल रही। उनका जाने में ऊ बेटिया ई काम ना कइले रहे। एह से ऊ असथिराह रही। सोचले रही– पूजा कऽ के बाबू जी उठिहें तऽ उनका के जलखई कराइबि। बेटिया नीचवा खेलते बिया, तले ई सिरिअलवा देखि लीं। रघुवंश बाबू धरती ओरे ध्यान ना देलें। सोझ–सामने देखल गोड़ बढ़वलें। गंदगी पर गोड़ परते मन झनकि गइल। आग–बबूला हो गइलें, "ई तोहार बात एकदमे ठीक नइखे। अइसे लापरवाह ना रहल जाला। बेटी के अनेरिआ अस छोड़ि के टी. वी. देखे में भुलाइल बाडू। बहुते बाउर करतऽतारू....।"

श्रद्धा बड़ घर के बेटी रहली। कनखी से एक नजर ससुर ओरे तकली। फेरू मूड़ी नीचे झुका लिहली। बाकिर मुंह से राम–रहीम कुछुओ ना। सीधे मउनिया बाबा के रूप धइली। बाकिर तबो ना माफ कइलें। रघुवंश बाबू। खिसी भूत हो गइलें। जलखई ना कइलें। मुंह फुला के बिछावना धऽ लेलें। देवर त रहन ना कि देहि झोरी–झारी के श्रद्धा मनावसु। आ बीच बिचवानी भी करे वाला केहु ना...। विधवा आ विधुर के मनावल टेड़ खीर हऽ। कतनो पतोहि मनुहार करत रहि गइली, बाकिर उनकर एको बात सुने खातिर तइयार ना भइलें। रघुवंश बाबू। ऊ सारा दिन कुछुओ ना खइलें। सांझि के बेरा डिउटी से छुटि के घरे अइलें अमित। श्रद्धा दिन के घटना उनका काने पिअवली। थोर देर सोचलें अमित। केरू कहलें, "बस–बस रहे दऽ ऊ बतकही। जइसन ऊधो ओइसन माधो, उनका चुरूकी ना इनका कान.....। ढ़ेर गीत ना गावल जाला। झटपट खाना बनावऽ....।"

ततलबजे निम्मन भोजन तइआर क देली श्रद्धा। खाना–पानी लेले बाबू जी के मोजाहिम भइलें अमित। श्रद्धा भी उनका साथहीं रही। बाबू जी के पारा अबहीं उतरल ना रहे। खलिहा पेटे खीसी तनी टंठि कबरेला। डपटलें, "हटावऽ हमरा सोझा से खाना। हमरा भूख नइखे। भूख लागी तऽ हम अपने मांगबि...।"

"सुनीं बाबू जी, अइसे ना खिसिआइल जाला....।"

"तब कइसे...? बतावऽ...।"

"हम का बताईं...! हम रावा के बतावे जोग नइखीं नू...! आजु ले बेटा बाप के बतवले बा। गलती नन्हकी पोतिया, कइले बिआ, श्रद्धा कइले बाड़ी आ हम कइले बानी। एह बात पर राउर खिसिआइल ठीक बा। बाकिर ई बताईं हई सोझा आइल अन्न देवता अपने से का गलती गइले बाड़ें? इनका से काहे रंज हो तानी? खाईं.....खाईं। बुढ़ापा के शरीर बा। ना खाइबि तऽ देहिं झांझर हो जाई। सभ रोग हमला करे लगिहें सऽ। हम राउर चरन छू के माफी मांगऽ तानी। अबकि पारी श्रद्धा के माफ कऽ दीं। भविष्य में अइसन गलती ई कबो ना करिहें। हम रावा से वादा करऽ तानी...।"– ई कहत दूनों बेकति तड़ातड़ बाबूजी के गोड़ पड मुड़ी पटकल लोग।

तब बेटा के बतकही दिमागे लागल रघुवंश बाबू के पिघललें। अइसे खिसि में ऊ जे कहसु। दिनहिं से उपासे रहल। खरखरा के भूख लागल रहे। पसन से खइलें।

श्रद्धा के रोज–रोज के रोटिन तइ रहे। खाटि प से उठते कामन के रैली लागि जात रहे। होत पराते भोरहरिआ के जलखई बनावल। तब दुधमुंहिया बेटी के गोदी में लेले बेटा के स्कूल छोड़ल फेरू अमित के टिफीन, पानी के बोतल देके ऑपिस भेजल। तब ससुर के पनपिजाड़ करावत रहली। फेरू दिन के खाना। कपड़ा–लाता के सफाई। तब आपन स्नान–ध्यान आ भोजन। सांझि होत–होत थाकि के चूर। तबो राति के खाना बनावत रही। सभका के खिआ–पिआ के तब अंत में अपने खात रही। अकसरूआ, ललकोरी मेहरारू। सुते के बेरा तक कुछ ना कुछ दहिने–बायें करे के परत रहे। रात एगारह बजे बेसुघ होके बिछावना पऽ गिरत रही। एक दिन तऽ भोरहरिआ में अइसन भइल कि ऊ उठिये ना पवली। ऊ उठे के बहुते कोशिश कइली बाकिर सफल ना हो पवली। हारि–थाकि के अमित फेमली डॉक्टर के बोला ले अइलें। खून के जांच भइल। तब पता–चलल की श्रद्धा के शरीर में हीमोऽलोबिन बहुते कम हो गइल बा। अपना शरीर के देखभाल के प्रति ऊ आमतौर पर उदासीन रहत रही। उनका परिवारिक प्राथमिकतन में अपना सेहत के चिंता सबसे नीचे रहत रहे। अपना स्वास्थ्य के देखभाल संबंधी का मन के ऊ फिजूल खर्ची भा लक्जरी मानत रही। बाकिर देहिं प चूअल तब ई बात उनका बुझाइल। दवा–बीरो भइल तऽ ऊ ओह दिन बिछावना प से उठली।

गँवे–गँवे वक्त, दिन, हाप्ता, महीना में बीत गइल। घर में जवन कलह के बीआ ओह सोमार के बोआइल रहे, अब ले ऊ अंकुरि के पता फोर लेले रहे। भले ओह दिन रघुवंश बाबू मानि गइलें। खइलें–पिअलें। बाकिर बीतत समय के साथे ससुर–पतोहि में मनभेद घटल

ना। दोगिनिआत, चौगिनिआत गइल, लइकी पसन करे के बेरा श्रद्धा के चब्बी गाल, अंगुठियवा बाल, खाड़ नाक, कटीला नैन–नक्श देखि के आपन पतोहि बनावे के जवन छवि अपना मन में गढ़ले रहले रघुवंश बाबू ओह सभ में अब उनका खोट बुझाये लागल। ओसहीं श्रद्धा के भी नजर में ओनइस बुझाये लगलें रघुवंश बाबू। बुढ़ापा तऽ अपने उमिर के ऊ दहलीज हऽ जहंवा अपना होखला के मुकम्मल एहसास में फेरू ना लवटल जा सकें अनुभव आ इयादन के ऊ भारी–भरकम गठरी साथे रहि जाला जवन आजु के बदलल दौर खातिर बेमतलब मान लिहल जाता। नया विचार से डेराये वाला लोग अरस्तू के जहर पीये खातिर मजबूर कइलें आ मीरा के असमय मृत्यु के गोदी में जाये के परल। समाज–परिवार में कई गो कत्ल अइसनो होला, जवना के खंजर पर हाथ के निशान तनिको ना लउके...।

अपना जीवन के बुनियादी जरूरिआत खातिर पेंशन पावत रहन रघुवंश बाबू। स्वास्थ्य भी ठीके–ठाक रहे। बाकिर पतोहि से संवादहीनता के टीस उनका मन के हमेशा सालत रहे। बेटा अमित कानपातर रहन। बीतत समय के साथे धरनी के बात पतिआये लगलें आ बाबूजी से दुरिआए लगलें। बल मिलल श्रद्धा के तब रघुवंश के बावस्ता करे के फिराक में पूरा जोड़–तोड़ से लागि गइली श्रद्धा...।

पूस के दुपहरिया। दिन अतवार। सभकर छुट्टी। खा–पी के सभे घाम के आनन्द लेत रहे। रघुवंश बाबू नीचे अपना कोठारी में आराम करत रहन। ओह दिन पूरा खुश रहन अमित। अवसर तलासत रही श्रद्धा। उनका बुझा गइल कि लोहा गरम बा। अब हथउरी चलावे के बेरा हो गइल। उनका चंदवरदाई वाली कविता इयाद परल–

"चारि बांस चौबिस गज, अंगुल अष्ट प्रमान।

एते पर सुलतान है, मत–चूको चौहान।"

तब देरी ना कइली श्रद्धा। अमित के कान में प्रेम से जहर पिआवे के काम लगा देली, "बाबूजी के डांक के बेमारी हो गइल बा। इनका के कवनो निम्मन डॉक्टर से देखवा दीं। सारी राति खांसत–हॉफत बाड़े, हमरा नींद में खलल परि जाता। दिन भर गदहा लेखा खटऽ आ राति भऽ इनका 'खांई....खांई' के पाछा जागऽ। खँासत–खँासत पलंग के पीछा थूक–खंखार फेंकि दे तारे। सागवानी टेबुल पर आग भरल बोरसी राखऽ तारें। केहु के आइल–गइल इनका पाछा गोसकिल भइल बा। हम इनका से आजिज आ गइल बानी। ना होखे तऽ बाहर वाली कोठारी में इनका रहे के इंतजाम कर दिहल जाउ। ई एक दिन के बतकही नइखे। कबले ई बुढ़वा जीही, कवनो जानल नइखे...।"

अमित श्रद्धा के मुंह ताकत रहि गइलें बाकिर एह बारे में 'हं...ना' कुछुओ ना कहलें। संजोग खराब भइला पऽ गगरा में परात भुलाला आ हाथी पऽ बैठल अदिमी के कुकुर काट लेला। छव साल के बेटा ऋषि ओइजे रहे। ऊ लोग तऽ ई सोचल कि एकरा का बुझात होई, ई त लइका बा। बाकिर अंग्रेजी में कहाला, "A Child is a father of man."

ऋषि बड़ा तेज दिमाग के लइका रहे। कान खड़ा कऽ के बतकही सुनले रहे। ऊ ददे के जोरे सुतत रहे। मम्मी के बात सुनि के सोचे लागल–बाहर वाली कोठारी में दादा सुते लगिहें, तऽ हमार का होई? मम्मी–पापा के त ना, बाकिर हमरा बड़ा दिक्कत हो जाई। हम कइसे बाहर सुतबि? हमरा के कथा–कहानी आ गीत के सुनाई? केकरा जोरे सटि के सुतबि? दादा के कंबल में बढ़िया नीन आवेला। मम्मी–पापा के वैलवेट रजाई में तऽ हमरा निनिये ना आई...!

लइका के मन बादशाह। दादा के स्नेह प्यार के गरम संबंध के गरमहटि ओकरा के उदबेगलसि। बड़ा फेरा में ऊ परि गइल। ओह राति ठीक से ऊ खइबो ना कइलस। दादा जोरे सटि के सुतल। आ मम्मी–पापा के दिने के सभ बतकही हिरिगा–हिरिगा के बतवलसि। ऋषि के बात सुनि सनाका खा गइलें रघुवंश बाबू। उनका बुझाइल कि हारटफेल हो जाई। गोड़ के नीचे के धरती घसकत बुझाइल। मने–मन बुदबुदाए लगलें, "जेवना घर के बनावे खातिर एड़ी–चोटी के खून–पसेना एक कइ दिहनी, ओहि घर में हमार हई हाल। जेकर माई पूड़ी पकावे ओकरे धिअवा ललचे। ना.....ना, ई त एकदमे बरदास करे जोग नइखे। ओह दूनों परानी के हमरा से दिक्कत बुझाता, तऽ ऊ लोग सरवेन्ट रूम में जा के सुतो। हम काहे जाइबि? जान दे देबि बाकिर जीअत जिनिगी ओह लोग के एह सोच के पूरा ना होखे देबि। अबहीं खटपरू नइखीं भइल....।"

ओह राति नीन ना आइल रघुवंश बाबू के। होत पराते तऽ अमित बेचैन रहलें। ऑफिस जाये के चक्करघिन्नी में अझुराइल रहन। एह से कुछुओ ना कहलें रघुवंश बाबू। सारा दिन मधुआइल रहि गइें। बाकिर ओह राति खइला–पीयला के बाद अमित के साथे छत पऽ चढ़ि गइलें। बाप–बेटा में बतकही होखे लागल, "तोहरा के पढ़ा–लिखा के इंजीनियर बनवनी। तोहरा खातिर मुंह–पेट जांति के एह शहर में घर बनवनी। आ तू अइसन काहे हो गइलऽ...।"

"कइसन हो गइनी...?"

"ई तऽ अब तुहीं नू जनब...।"

"हम कुछुओ नइखीं जानत आ ना बदलल बानी। अइसे जे रावा मन में आवे से सोचीं एह खातिर रावाँ आजाद बानी। ई तऽ रावा मरजी के बात बा। रावा बात–साफ–साफ बताईं, हम ओकर जवाब रावा के देबि...।"

कबो–कबो अपने जामल अपना जान के गरगह बनि जाला। अमित ई ना जानत रहन कि ऋषि काल्हु के सम बात बाूजी के बता देले बा। ऊ सोचलें कि श्रद्धा त छत प सभ बात हमरा से अकेला में कहले बाड़ी। बाबूजी त नीचे घर में सुतल रहनं तब ई कइसे जनलें? चूंकि नया घाव रहे एह से ओनहूँ ध्यान आपन दउरवलें अमित। एह से भर मतलब ऊ बाबूजी के जोरे तीसी पेरत रहि गइलें बाकिर एको ठोप तेल ना चुअल। आखिर में अमित मुंह लटका के कहलें, "ई तऽ राँवा ठीके कहऽतानी, बाकिर बताईं, हम कइसे दोषी बानी। हम दिन भर बाहरे रहऽ तानी, रउआ ससुर–पतोहि घरे बानी। जबले राँवा बताइबि ना, तबले हम का जानबि? रउआ बाबूएजी बानी आ श्रद्धा घरनिये बाड़ी। पुतवो मीठ, भतरो मीठ, किरिआ केकर खाईं? रावा चुनचान के निम्मन सुधर लइकी से बिआह करववनी, एह में हमार कवन गलती बा? रउआ के कुछ कहिये नइखीं सकत आ ना उनका के कुछुओ समझा सकऽतानी। दूनों आदमी अपना मन के राजा बानीं सभे। हमरा से कवनो गलती भइल होखे तऽ बताईं, हम अपना में सुधार करबि...।"

मन मरलें दूनों आदमी छत पर से नीचे उतरलें आ अपना–अपना बेड रूम में चलि गइलें।

नोनिअवा के बेटी वाला हाल–ना नइहरे सुख ना ससुरे। बेल से गिरले बबूल पऽ अटकलें अमित। ऑपिस के काम से दिन भऽ के हारल–थाकल, ऊपर से बाबूजी आ धरनी के खोभसन। श्रद्धा अड़ि गइली, "छत पऽ वाप बेटा के बीचे का पंचइती होत रहल हा? होना हो हमरे बारे में कुछुओ बतकही भइल होई...।"

"कुछुओ ना...। राम...राम...! ई का कहऽ तारू। तोहर तऽ नामो ना लिआइल हा। छी..छी...! ई तोहरा मनसापाप घेरले बा...।"

"झूठ मति बोलीं। आजु रावाँ साफ–साफ बतावे के परी। रोज–रोज छत पऽ जा के बाप–बेटा के बतकही काहे ना होत रहे? अइसन आजुए काहे भइल हा...?"

"किरिआ खा के कहऽतानी, तोहरा बारे में रामो–दईब कुछुओ ना बात भइल हा।"

"हमार देहिं छुइ के किरिआ खाईं, तब हम पतिआइबि। हमरा रावा पऽ भरोसा नइखे...।"

अमित घरनी के देहिं छू के किरिआ खात कहलें, "देख, तोहार किरिया खा के कहऽतानी, बाप–बेटा के बीचे कुछुओ सलाह–मोसविरा ना भइल हा। खाली तोहरा शक–सुबहां के बेमारी घइले बा, तऽ एकर दवाई दुनिया–संसार में कतिहं नइखे। तोहरा दूनों आदमी से हम आपन दसो नोह जोरि के अरज करऽ तानी कि अइसन ना कइल जाला। हमरो के जीए दऽ लोग। ऑपिस के हाल उहे बा आ घर के ओहू से बीस। अइसे करबू लोग त हम झटकाहे सुगर–बी.पी. के चपेटा में चपेटा जाइविं। फेरू राज भोगिहऽ लोग। अब चुपचाप रहऽ आ हमरा के सुते दऽ। दिन भऽ के जोताइल बानी...।"

"ठीक बा। रावाँ सुतीं। हम कुछुओ नइखीं कहत। बाकिर काल्हु संझि ले बुढ़ऊ के सुते–बइठे वाला इन्तजाम बहरसी वाली कोठारी में कसहुं रावाँ क देवे के बा। हमरा बहुते दिक्कत होता। देखिं, खाईं...खाईं करऽ तारें। सुरहुरी कबरल बड़हिन...।"

"अब देखऽ, दोसर अधेआय स्टार्ट कइलू। हम अबहीं घर से भागिजा तानी आ तोहनी लोग पलरि के फैलांव से रहऽ लोगं ना रही बांस ना बाजी बंसुरी...।"

"भगला से जान ना नू बांची। रावा घर के मेठ–मालिक बानी त रउए नू इन्तजाम करे के परी। हम अबला जाति का करबि? मरद–मानुस नूं ई कर सकऽता। खिसिआत काहे बानी...?"

"देखऽ, पट्टी मति पढ़ाव? हमहूँ ढ़ेर घाट के पानी पिअले बानी। तू अबला नइखू, सबला बाड़ू। बाकिर तोहरा लगे विचार नइखे। तऽ कान खोलि के सुनि लऽ, ततलबजे अतना छोट करम हमरा से कबो पार ना लागी कि हम महल में सुतीं आ बाबूजी बहरसी। बाबूएजी के जमीन किन के ई घर बनावल हऽ। जाड़ा के दिन बा। तनिका विचार करऽ...। जानऽ तारू, ऑपिस से एल.टी.सी. लेले बानी। फगुआ के टूर से घुमि के अइला के बादे ई काम होई। तले दिनों गरम हो जाई। ढ़ेर राति बीतल। अब चुपचाप महटिआवऽ...।"

अरबी में एगो कहाउत हऽ, "तलवार के घाव झुरा जाला, बाकिर जीमी के घाव कबो ना मिटिके। हमेशा जिअतार रहेला...।" संबंध–नाता निभावे खातिर बड़ा हिम्मत आ धैर्य के जरूरत होला। ई ह्रदय के समर्पण मांगेला। छल–कपट के हलुक आंच में कपूर लेखा उड़ि जाला। जब संबंध खिसिआ जाला तऽ जिनिगी कवनो सुखाइल पोखरा के पेन्दी के दरार लेखा भगन्दर हो जाला। हर विवाद के साथे कवनो संबंध–नाता दरके लागेला। खुशी के चदरी संबंधन के धागा से बिनाला। कुछ लोग नियरा–पासे रहि के भी कोसहन ओहटा होखे के उबाउपन ले आवेला। आ कुछ लोग मोरंग रहि के निअरा के एहसास करावेला। कुछ संबंध चुप्पी के मकान में बंद होला आ कुछ संबंधन में अहं के दीवार होला। बेटा से बतकही भइला के बाद रघुवंश बाबू के ओह राति बुझाइल, जवना खिड़की से साफ, नरम आ प्रेम से लबरेज हवा आवत रहे, ओह से गंदा, गरम आ उदवेगल आ अकरावन हवा आ रहल बा। उनका अपना पारिवारिक संबंध के अहमियत खतरा के चक्रव्यूह में घेराइल महसूस भइल। डूबि के सोचे लगलें–दुनिया एकदमें बदल गइल। का रहे, का हो गइल? एगो समय

रहे, जब माई–बाबू के ईश्वर के समान समझल जात रहे आ बेटा–बेटी के साथे उनकी संबंध सबसे पवित्र आ मधुर होत रहे। अइसने प्रेम भाई–बहिन के बीचे रहत रहे। समय करवट मरलसि। एगो माई छव गो बाल–बच्चन के पाल सकऽतिया बाकिर एगो बेटा अपना माई के नइखे राखि सकत। समय में आगि लाग गइल। एगो उमिर के बाद बेटा बदलि जाता। जब भौतिक सुख अधिका हो गइल। घर के चहारदीवारी के भीतरी व्यापारवाद समा गइल। संबंध, पइसा आ सुख के मोल बिकाये लागल। ममता–दुलार के छांह क्रेश के भेंट चढ़ि गइल। 'लिव इन रिलेशन' समूचा संस्कारन के धज्जी उड़ा रहल बा। जब मरद–मेहरारू के संबंध शर्त के बल पऽ पनपता तब बाकी संबंधन में ईमानदारी आ समर्पण के भावना कहां से आई...? सोशल राइट्स सैकड़न संघतिआ से मेल–जोल करावऽता बाकिर ओकर सही पहचान शक के घेरा में घेराइल बा। बूढ़–पुरनिया के बुनियाद के ई सभ करम खिझावऽ ता। जब दुनिया अतना बदलि गइल त ओह में हमार बेटा–पतोहि कइसे ओह से अछूता रहि जासु। अब हम ओह लोग के सहानुभूति से वंचित हो गइनी। हमरा बुढ़ापा के परेशानी पऽ ओह लोग के तरस नइखे आवत, उल्टे ओठर बतकही करऽ तारें। खून–पसेना एक क के जवना घर के बनवनी ओही घर से हमरा के बहरिआवे के प्लान बनावऽ तारें। सेयान झूठ बोल सकऽता, बाकिर लइका त कबो ना...! सांच त लइकन के स्वभाव होला। ऊ निश्छल होलें सऽ। शत्रु–मित्र में भेद करे के ना जानें लें सऽ। दूनों के देखि के मुस्कालें सऽ। दूनों के गोदी में जाये खातिर आतुर लउकेलें सऽ। अपना मन से गढ़ि के अतना झूठ बात ऋषिआ कहिये नइखे सकत! एहि दुःख के दरिआव में डुबकी लगावत–लगावत ना जाने कब रघुवंश बाबू के आंखि सटि गइल...।

हम रावा के बता दीं कि रघुवंश बाबू अपना लेखा निराला, स्वभिमानी शख्स रहन। निहायत मस्त मौला आ बड़ा भावुक। संबंध बनावे आ तूरे में उनका तनिको देरी ना लागत रहे। स्वभाव में किंचित उतेजना रहे। बाहर से गैर के चोट बरदास क के आ गइल रहन रधुवंश बाबू। बाकिर घर में अपनन के चोट से उनका के भीतरी से झकझोर देले रही। ओह राति जब उनकर पोता ऋषि, बेटा–पतोहि के सलाह से उनका के वाकिफ करवलसि, ओही समय ऊ सोच लेले रहन कि एह तरीका के जलालत के जिनिगी जीअला से तऽ निम्मन मरि गइल बा। बाकिर भीतरी से ऊ बहुत कमजोर ना रहन। दू साल के उमिर में ही उनका बाबूजी के साया उनका सिर से उठि चुकल रहे। तब से अनेक तकलीफन से गुजरे के कारण दुख झेले के उनकर आदत परि गइल रहे। बाकिर बेटा–पतोहि के खोभसन उनका जीवन के टर्निंग प्वाइंट साबित भइल। ई घटना उनका के भीतरी से अतना ना झकझोर देलस कि उनका लागे लागल कि उनका कुछ करे के चाहिं। अब हीलाहवाली से काम ना फरिआई। लौकिक संबंध के बूते अब ई जीवन पार लागे वाला नइखें जिनिगी में रूहानी ले आवे खातिर अलौकिक संबंध बनावे के परी। उनका मानस के चौपाई मने–मन इयाद आइल–

"सुत वित नारी भवन परिवारा, होहिं जाहि जंग बारहि बारा।।"

आ होत परात एह काम के उतजोग में लागि गइलें। अवसर तलासत रहन।

फगुआ खातिर ऑपिस में छुट्टी भइल। सभे अपना घरे–दुआरे पराइल। बगल गीर के घरे रघुवंश बाबू के पोखता इंतजाम कऽ के बीबी–बच्चन के साथे अमित भी एल.टी.सी. पर अपना जतरा खातिर निकललें। ओही दिने सांझि के बेरा गधबेर होखे से पहिले रघुवंशो बाबू अपना जतरा पऽ पेयान कइलें। बगलगीर से साफ–साफ कहलें, "शहरे में एक आदमी से भेंट कऽके लगलाहे लौट आइबि।"

बाकिर आजु तक ऊ ना लवटलें। बगलगीर उनकर राह ताकऽता...।

अमित परिवार के साथे घुमि–धामि के अपना जतरा से आधा राति के बेला में लवटलें। अपना घर के रंगरोगन देखि सुदामा जी लेखा चिहा गइलें। आरे, ई तऽ एकइसे दिन में बाबूजी घर के चमका देले बानी। काया पलट हो गइल बा।"

उनका अइसन बुझाइल कि केहु दोसरा के घरे हम आ गइल बानी। उनका भुलवना अस लागलं दरवाजा के निअरा जाये में डेरइलें। बाकिर हिम्मत बान्हि के दरवाजा खटखटवलें। केवाड़ी खोलि के एगो अजनबी उनका सोझा मोखातिब भइल। तड़ाके सवाल दगलें अमित– "रावा...?"

"एह घर के मालिक...!"

"बाबूजी कहवाँ बानी...?"

"ओह, उहां के तऽ ई मकान बेचि के कतहीं चलि गइनी...। हं, ठहरीं एक मिनट।"

–ई कहत ऊ घर के भीतरी समाइल आ उनका बाबूजी के हाथ से लिखल एगो चिट्ठी अमित के हाथ में धरवलसि। खत में लिखल रहे– "/प्रिय बेटा अमित! तोहनी लोग के बात–व्यवहार से हम बहुत पीड़ित भइनी। हम कहवा जातनि, ई हमरा खुदे पता नइखे। मकान एह से बेचि देनी हां ताकि हमार कवनो निशानी तोहरा लगे मति रहो.... तोहार बाबू जी 'रघुवंश'/।" ●●

■ महावीर स्थान के निकट, करमन टोला, आरा, ८०२३०१ (बिहार), मो०:- ९४३१०९८००५

हथियार

अतुल मोहन प्रसाद

"एगो त देरी से अइले अउर ऊपर से टिपुना चुआवत? आ तोर साइकिल ?" एके संगे दादी के एतना सवाल सीमा के सुबकल रोआई में बदल गइल।

"का जाने कइसे साइकिल के पिछला चक्का के हवा निकल गइल रहे। जब हम कम्प्यूटर रूम से बाहर आके साइकिल लेके चले शुरू कइली तब ई मालूम भइल। राजपुर तिराहा के साइकिल दूकान पर हवा भरावे गइनी। ओहिजे पान कचरत एगो लफंगा खाड़ रहे, उहें हमार साइकिल जबरन छिन लेलस आ कहलस– 'साइकिल लेबे के मन होई त हमरा घरे आके साइकिल ले लिहऽ।"– सुसकत सीमा कहली। "तब तू ओकरा घरे गइल रहले हा?" "हम कवनो ओकर घर देखले बानी। एगो–दूगो लोगन के आवत देख, ऊ डेगरगर बढ़ि के भाग गइल।"

"तब?"

"ओहिजा जुटल आदमी से ओकर नाम पता लेके थाना में रपट लिखा के आवत बानी। ओजिगा के आदमी कहत रहन कि ई ढेर बदमास हो गइल बा, अब एकरा के सोझ करे के समय आ गइल बा। नाहीं त कब केकरा घर के लइकिन के संगे कइसन सलूक करी, कवनो ठीक नइखे। एकर मन बढ़ल जात बा।

"देखऽ सीमा। थाना में रपट लिखा देलू त ठीक कइलू। अब चौबीस घंटा देख ल। पुलिस कुछ करी ना। उहो अपराधी से डरे ले। पुलिस पर दबाव पड़ेला त पुलिस खरकेले–चाहे ऊ दबाव शक्ति के पड़े चाहे रूपिया के। तोहार ओइसन कवनो दबाव नइखे।" –सीमा के दादी कहलीं।

दुसरका दिन सीमा कम्प्यूटर सीखे राजपुर ना गइली। गाँव में खुसुर–फुसुर होखे लागल। करीब पचास गो लइकी सीमा के गाँव से राजपुर हाईस्कूल में रोजाना साइकिल से पढ़े जात रही स। सबके सरकार के ओर से साइकिल मिलल रहे। चौबीस घंटा के समय बीत गइल। थाना के ओर से कवनो सुगबुगाहट ना बुझाइल। सीमा भंटा अस मुंह लटकवले घर में बइठल रही।

"एह तरी हाथ प हाथ धइले, मुँह लटकवले बइठल रहबे त ना तोर साइकिल मिली ना ओह लफंगा के कवनो सजाय।"–दादी सीमा के ठोढ़ी ऊपर उठावत कहली। "त का करीं? "ओकरा घरे जाईं? ओकर गाँव दू कोस दूरी प बा। पता न ओकरा गाँवे गइला प ऊ कवन सलूक करी?" "ओकरा धरे गइला प ओकर मन अउरी बढ़ जाई। तूँ आपन बाबू के बोलावऽ आ अपना गाँव के दू–चार सखी–सहेली के जवन अब हाईस्कूल में पढ़त बाड़ी स। हम एकर उपाय बताइब।"– दादी कहली।

सीमा के बाबू महतारी के सोझा अइलन। बाकिर सांझि के झुटपुटा होखे का कारण उनकर सखी–सहेली औरे आवे के बात कहली सऽ सीमा के बाबू के ई बात मालूम हो गइल रहे कि कवन लफंगा सीमा के साइकिल एह सुशासन के राज में छीन लेले बा आ पुलिस हाथ पर हाथ धइले बइठल बिया। ऊ सोचत रहन कवन अइसन उपाय कइल जाय कि साँप मर जाय अउर लाठी ना टूटे। काहे कि लइकी के बात बा। फेनू पढ़े राजपुर जाये के बा। कब कवन घटना एह सुशासन में घट जाई नइखे कहल जा सकता भाई के सोझा इहे सब सोचत रहन–कवलेसर।

"लफंगा के सोझ करे खातिर तोहरा सड़क पर ओहतरी उतरे के पड़ी जइसे भ्रष्टाचार के खतम करे आ लोकपाल लावे खातिर–अन्ना के सड़क पर उतरे के पड़ल रहल हा। अपना साथी संघतिया के साथ लेबे के पड़ी। का करे के होई हम तोहरा के काल जब सीमा के सखी–सहेली अइहन त बताइब। आज तू आपन साथी संघतिया के काल खातिर तइयार रहे के कहि दऽ।

घटना के तिसरका दिन सीमा के दालान में उनकर सखी–सहेली अउर कवलेसर के संगी साथी जुटलन। सबके देख सीमा के दादी के करेजा जुड़ा गइल। "मरद लोग के कुछ नइखे करेके। सब गाँव के पढ़निहार लइकिये करिहें सऽ। मरद लोग सड़क के किनारा खाड़ होखे लइकियन के रखवाली करी, ताकि कवनो गड़बड़ी ना होखे। लइकी सब गांव के सोझा सड़क पर से राजपुर के ओर जावे वाला सड़क पर आपन–आपन साइकिल तिरिछा सुता के अपने खाड़ हो जाँस, चाहे साइकिल पर जगह बना के बइठ जाँसऽ एहिजा आइल सब लइकी आपन सखी–सहेली से जे एहिजा नइखे आइल जाके कही, ऊभर सड़क जाम करी। प्रशासन खुद कवनो उपाय करी। "हमनी के तइयार बानी जा।" दादी के बात सुनके सीमा के सब सखी–सहेली एक साथ बोलली जा।

दस बजे तक राजपुर–कोचस सड़क लइकियन के सुतावल साइकिल से जाम हो गइल। सरकार के दिहल सवारी से सरकार के सड़क जाम हो गइल। पुलिस के खबर भइल। पुलिस आइल। कतनो समझवलो पर जाम ना टूटल। बस अउरी जीप राजपुर के आगे करेला डेरा तक खाड़ हो गइलीसऽ। एने भलुआ तक बम्पर के और जाम लाग गइल।

एगो राहगीर एस.पी. के फोन कइलस। अबे थाना

के इंचार्ज, एस.पी. के सड़क जाय के सूचना ना देले रहे।

"काहे जाम बा? गाँव में त कवनो हत्या आ दुर्घटना के सूचना नइखे?"

"जाम पढ़ेवाली लइकी कइले बाड़ी।"

"लइकी?" चिहात एस.पी. कहलन।

"हँ। कवनो उचक्का दू दिन पहिले एगो लइकी के साइकिल लेके भाग गइल बा। थाना में रपट लिखवइला का दू दिन बाद तक कवनो कार्रवाई ना भइला प स्कूल के लड़की आपन आपन साइकिल ले के सड़क जाम कर देले बाड़ी स।

"ओह! जवन समान सुविधा खातिर सरकार देले बिया ओही के लइकी आज हथियार बना देलीसऽ। ठीक बा हम आवत बानी।"

जाम के जगह पर खुद एस.पी. साहब अइले लइकिन से बारह घंटा के मोहलत लेहलें। मिडिया वाला जवन आपन जिला कार्यालय में बइठ के एस. पी. ऑफिस फोन करके समाचार छापत बाड़े। दू दिन तक कवनो खबर अखबार में ना आइल। जाम सुनते आपन–आपन कैमरा लेके जाम स्थल पर पहुँच गइलन सऽ। एस.पी. के बारह घंटा का मोहलत पर जाम टूटल। सचमुच बारह घंटा के भीतर लफंगा जेल के भीतर अवर साइकिल सीमा के घरे हाजिर। अखबार वाला दू दिन तक सीमा के गाँव जाके आपन अखबार के चमकावे में लगलन। राजधानी से पत्रकार लोगन के टीम आइल। गाँव के दौरा कर जिला शहर में 'नारी जागरण' पर गोष्ठी कइलस। अखबार फोटो आ समाचार से पाट गइल। ••

शाश्वत पुस्तक सदन, डी.के. धर्मशाला मार्ग, बंगाली टोला, बक्सर (बिहार)

लघुकथा

अंगूठा के टीप

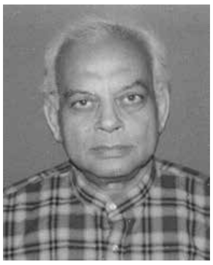

राजगुप्त

बैंक में, रूपया निकाले के रहे। फार्म भरि के लाइन में लगला प आधा घंटा बाद नंबर आइल। खिड़िकी में हाथ डाल के फारम–पासबुक भीतर पेसनी। बाबू कंपूटर में कुछ करे लगले फेरू बिजुकत हमार फारम लवटावत कहले, "राउर दस्तखत नइखे मिलत बाबा।" हम भड़क गइलीं 'अरे, एही दस्खतिया पर हम कई बेर पइसा निकसले बानी, हमरा असली दस्खत के रउवा काहें कमसली कहत बानी ?"

हमरा के अनसुन करत बैंक बाबू दोसरा के फारम लेत कहले, "राउर जवाब देबे लागब नऽ ढेर लोगन क नोकसान होई। लाइन वाला लोग गरियावे लागी। मनेजर का लगे जाईं।" उनकर बात सुन के हमरा पाछा आ बगल क लोग हमार मुँह ताके लागल त हमरा बड़ा खीसि बरल, 'हम कवनो ठग–वोग हईं का, कि रावाँ के चकमा देबे आइल बानी।' फेरू मने मन बुदबुदात मनेजर किहाँ चोंहपलीं, "ए साहब, हम बूढ़ अदिमी, पहिले लेखा कड़ेर हाथ नइखे। अब काँपत बा। राउर बाबू हमरा दस्खतिया के कमसली बतावत बाड़े बताईं तीस बरिस से हम एही दस्खतिया पर नु पइसा निकाड़त अइलीं।"

"तीन गो पासपोर्ट साइज फोटों ले आईं आगा के झंझट मेटि जाई। ना त पाँच–छव बरिस बाद लोग राउर फोटोउवो चीन्हे से इनकार कऽ दी।" उहाँ खड़ा लोग मुस्कियाये लागल। मनेजर एगो फारम उठावत नाँव बोलवले, 'बिलावल।"

"जी हम हईं।" हमरा लगहीं ठाढ़ एगो सत्तर बरीस के पुरनियां आगा आ गइले। मनेजर उनकर अँगूठा उठा के पैड के सियाही में रगरले आ फारम पर टीप लगावत दस्खत कइला का बाद, फारम लौटावत बोलले, "जाईं आपन पइसा ले लीं।" बिलावल फारम उठा के हँसत खिड़की प चल गइले।

हम पढ़ल–लिखल होइयो के अँगूठा टीप वाला के फलगर जात देखत अनसात रहलीं। तले मनेजर फेरू बोलले, "अरे अभी इहें खड़े हैं, फोटो लेकर आइए, फिर आपका भी अँगूठा टीप प्रमाणित कर दूँगा।"

पहिला बेर अपना पढ़ल–लिखल भइला पर हमके ओह अँगूठा छाप वाला से हेठी महसूस भइल। भारी मन से फोटो ले आवे खातिर बैंक से बहरिया गइली। ••

राज साड़ी घर, चौक, बलिया-२७७००१, उ०प्र०

ठगाइल ठग

तैय्यब हुसेन 'पीड़ित'

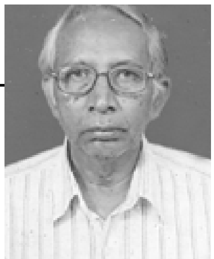

[विलियम हेनरी स्लीमेन के जनम ८ अगस्त, १७८८ ई. के भइल रहे। २१ साल के उमिर में १८०६ ई० में उनका के लॉर्ड दे डस्टनविले के आफिस से 'बंगाल आर्मी कैडेट' के रूप में भर्ती कइल गइल। एही साल २४ मार्च के ऊ 'डेवोंशायर' जहाज से, साल के आखिर में भारत पहुँचलन। २० सितम्बर के दीनापुर कैंट से ठीक क्रिसमस के दिन अपना फौजी जिनगी के शुरूआत कइलन। काम करत ऊ अरबी-फारसी भाषा पढ़लन आ भारत के धरम व रीति-रेवाज के अध्ययन कइलन। १६ सितम्बर १८१४ के उनकर तरक्की लेफ्टिनेंट के पद पर हो गइल। १८२० ई० में ऊ सिविल-सेवा खातिर चुन लिहल गइलन आ गवर्नर-जनरल के एजेण्ट के जूनियर सहायक का रूप में सागर-नर्मदा टेरिटरी में पदस्थापित भइलन। स्लीमेन जवना नरसिंहपुर जिला के चार्ज में रहलस, ओह घरी ऊ ठगन के रहे के मनपसंद जगह रहे। २४ अप्रैल १८२४ के उनका काम से खुश होके उनका के कैप्टन बना दिहल गइल। ऊ फरवरी १८३६ में ठगी आ डकैती के जड़ से मेटावे के भार लेहलन। उनका एह सबके जानकारी बढ़त गइल आ ऊ इन्हन के निजगी आ काम पर एगो किताब- 'रामासीना आर ए वोकेबुलेरी ऑफ द पिक्यूलियर लैंग्वेज यूज्ड बाइ द ठग्स' लिख घललन। हिन्दी में एकर कुछ अंश कथाकार राजेन्द्रकांत राय के अनुवाद कइल 'नया ज्ञानोदय' के जनवरी २०१५ के अंक में छपल। चूँकि एह ठगन के संबंध भोजपुरी क्षेत्रन से भी रहल बा, एह से प्रस्तुत बा पहिल बेर भोजपुरी में ठग लोगन के रहन-सहन साथे कुछ विचित्र वृत्तान्त, अंधविश्वास आ शब्दावली पर ई निबंध।]

ठग त अक्सरहां दोसरे के ठगे के काम करेलन बाकी एह वैज्ञानिक आ उन्नत युग में अपना के मुरुख रख के तरह–तरह के टोटका पर विश्वास करत दोसरा के लूटे आ हत्या करे के आपन रोजगार बना के ऊ केतना पिछुड़ल बाड़न, ई उनका कारनामा, समझ आ जिनगी के अध्ययन से पता चलेला। ऊ अइसन काम करत ना त अपना के हीन मानेलन, ना दोषी। उल्टे एके ऊ ईश्वर भा देवी के आदेश मान के खुशी–खुशी अंजाम देवेलन आ आपन परम्परो कायम राखे में विश्वास करेलन। सचहूँ आज के दुनिया में केतना ठगाइल बाड़न स ई ठग!

जब एगो ठगन के मुखिया से पूछल गइल कि का केहू के जान मारे में ठग लोगन के करेजा ना काँपे, आ अफसोस ना होय त ऊ मुस्कात कहलस कि आपन ध न्धा आ रोजगार करें में कवना बात के अफसोस? ई काम त उनका भगवाने किहाँ से मिलल बा, जेके आपन करतब समुझ के ठग निभावेलन।

हत्या के बारे में मुखिया के जबाब रहे कि ऊ केहू के नइखन मरले। का केहू के मारला से केहू मरेला? सब केहू भगवान के हाथ के कठपुतरी बा। ऊहे मारेलन–जियावेलन। काम–धाम का बारे में ठग के मुखिया विस्तार से बतवलन कि जब कवनो नया आदमी ठग के गिरोह में शामिल कइल जाला त शुरू में ओके काम दिआला शिकार माने ठगाये वाला आदमी के टोह लेहल। ओकर जासूसी कइल। देश–विदेश में घुमा–फिराके ओके एह काम के चस्का लगावल जाला। तब ओकरा मिलेला 'शुमासिआ' के काम। आने जब केहू के गला घोंटात होय त शिकार के हाथ–गोड़ मजबूती से पकड़े के। आखिर में काम मिलेला 'भुरतोती' के, आने गला घोंटे के।

ऊहो एतना आसानी से ना। पहिले पुरान ठग लोग पता लगावेला कि एकरा में साहस बा कि ना। संवेदनहीनता बा कि ना। जब एह सबमें ऊ खरा उतरेला त गिरोह के सबसे पुरान ठग के आपन गुरू बनावेला। ठग ओकर गुरू बनेला ऊहो एह से तइयार हो जालन कि ऊ बूढ़ हो चुकल रहेलन आ उनका में अब ओतना ताकत ना रह गइल रहेला कि केहू के पकड़–धकड़ कर सकस भा जान मार सकस। बाकी ठगी में त ऊ पारंगत होइबे करेलन, एह से नया चेला के 'भुरतोत' बनावे के तइयारी में लाग जालन।

कवनो मालदार यात्री के जब गुरू सुतल देखेलन त नया चेला सहित दू–तीन गो पुरान ठगन के साथे बगल के खेत में चल जालन। इहाँ पहुँच के सब के सब ओह दिशा में मुँह कके खड़ा हो जालन, जेने यात्री के जाये के अनुमान बा। तब गुरू बोलेलन– 'ओ काली, महाकाली, कलकत्तेवाली, भद्रकाली! ओ काली, महाकाली, कलकत्तेवाली!... जो अपने उचित लागत होय कि पड़ाव में सूतल यात्री रउरा दासन का हाथे मारल जाय त 'थिबाऊ' (संकेत) का जरिए आपन मरजी बताईं।'

जो आधा घंटा के अन्दर ऊ कवनो शकुन (संकेत) दहिना दिशा में पा जालन त काली माई के स्वीकृति मान लेहल जाला आ जदि कवनो संकेत ना मिले भा बाँये शकुन होय त मानल जाला कि काली के अबहीं नया दास कबूल नइखे। अइसन हालत में ओह यात्री के हत्या केहू पुरान ठग से करावल जाला आ नया चेला के अगिला शुभ शकुन के इन्तजार करेला पड़ेला।

आ जो नया चेला के पछ में शकुन आइल तब गुरू अपना हाथ में एगो रूमाल ले लेवेलन आ पच्छिम दिशा का ओर मुँह कके ओह रूमाल के छोर पर गाँठ लगावेलन। गाँठ में रूपया आ चाँदी के टुकड़ा बान्ह देहल जाला। एके 'गुर घट' कहल जाला। एह 'गुरघट' के चेला बड़ा आदर का साथे दाँया हाथ से ग्रहण करेलन। फेर सूतल शिकार का ऊपर खड़ा हो जालन। 'शुमासिया' आने शिकार के हाथ–गोड़ धरेवाला दोसर होलन। ओह यात्री के कवनो बहाने लगावल जाला। जागते चेला ओकरा गला में रूमाल लपेट देवेलन। ई सब गुरू के संकेत पर

होला। आखिर में रूमाल गरदन में शुमासिया का मदद से कस देवल जाला। यात्री मर जालन।

अपना काम में एह सफलता का बाद चेला झुक के गुरु के प्रणाम करेलन, दूनों हाथ से उनकर दूनो गोड़ छुएलन। फेर अइसने ऊ उहाँ उपस्थित तमाम साथी लोग आ अपना रिश्तेदारन के साथे करेलन।

'थिबाऊ' (शकुन) शुभ देखला भा सुनला के बाद ऊ रूमाल में बान्हल गाँठ खोलेलन। रुपया आ चाँदी के टुकड़ा गुरू के सउँप देलन। गुरू अपना पासो से ओह में रूपया मिलावेलन। सवा रूपया के गुड़ 'तुपौनी' खातिर खरीदल जाला, बाकी पइसा के मिठाई। 'तुपौनी' बलिदान के कार्यक्रम नीम, पीपर भा बरगद के नीचे पूरा कइल जाला। जहाँ ई पेड़ ना मिलस, उहाँ बबूल, सिरसा आ करंज के पेड़ छोड़ के कवनो पेड़ से काम चला लिहल जाला।

नया चेला के अब 'भुरतोतियन' के साथे दरी पर बइठे के जगह मिल जाला। परसादी का रूप में गुड़ में से आपन हिस्सा पावेलन। फेर बाँचल गुड़ आ मिठाई उहाँ हाजिर लोगन में बाँट दिहल जाला। ओह दिने घरे आके चेला के अपना गुरू आ गुरू–पत्नी के नया कपड़ा देबे के पड़ेला। भोज देलन, जेह में उनकर हित–नाता आ गोतियों के लोग रहेला। गुरू अपना चेला आ चेला के परिवार के बधाई देबेलन। अइसन समझल जाला, एगो ठग अपना बाप के धोखा दे सकेला, बाकी गुरू के ना। गला घोंटे का दिन गिरोह के कवनो सदस्य के नहाये के अनुमति ना होला।

X X X X

ठग लोग के विश्वास बा कि काली माई धरती पर सबसे पहिले कलकत्ता में अवतरित भइल रहस। ऊ अपना विशेष उद्देश्य के पूर्ति खातिर ठग के पैदा कइली। उद्देश्य रहे– विंध्याचल में एगो बड़ राक्षस 'रक्तबीज दानव' के विनाश कइल। विन्ध्याचल, विंध्य इलाका के पूरब में पड़ेला। काली, दानव के लाश के कलकत्ता ले गइली आ गाड़ देली। इहँहीं काली–मन्दिर स्थापित बा। ठग एह स्थान के आपन सबसे पवित्र पीठ मानेलन। उनका विश्वास बा कि कलकत्ते में ठग लोग के ठगी के मान्यता मिलल।

'काली', 'कंकाली', 'कंकालिन' आदि दोसरो नाम से जानल जाली, जेकर अर्थ होला– 'मानवभक्षी'। राक्षस के मारहीं खातिर ऊ आपन काला आ भयकारी रूप बनवली, ना त जब काली अपना पार्वती–रूप में अपना पति शिव या महादेव साथे रहस त ऊ सुन्दर गौर वर्ण वाली रहस। 'गौरी' गोरे वर्ण के कारण उनकर नाम पड़ल। नर्मदा नदी के 'भेड़ा घाट' पर उनकर अइसने मूर्ति बैल पर बइठल बिराजमान बा। ठग आ साधारण मनई के विश्वास बा कि कबो कैलाश से अपना पत्नी साथे शिव उहाँ आइल रहस। नवम्बर के शुरूआत में हर साल इहाँ मेला लागेला।

X X X X

अइसे त ठग जादे मरदे होलन बाकी ठगन में एगो औरतो के नाम आवेला। ऊ रहस–बख्तावर जमादार के मेहरारू। बख्तावर 'सूसिया' वर्ण के ठग रहे। ऊ अपना मेहर साथे जयपुर टेरिटरी में रहत रहे। उनकर मेहर एक बेर अइसन मरद के भी गला घोंट देले रहस जे उनका पतियो से बलवान रहे। अइसन इतिहास के खोज 'स्लीमेन' कइले बाड़न कि तब माईयो अपना बेटा के ठगी के काम में भेजत रहस। मेहर अपना मरद के एह काम खातिर तइयार करत रहस। विलियम हेनरी स्लीमेन दक्कन के एगो अइसनो महिला का बारे में सुनले रहस जे खुदे ठगन के एगो छोट गिरोह के सरदार रहे।

अइसन ठग के 'बरका' कहल जाला जे भारत के कवनो हिस्सा में अपना आस –पास मौजूद साधारण लोगन में से एगो ठग–गिरोह तइयार कर लेबे के क्षमता राखत होय। एगो 'कबूला' भा 'तीख' ठगन के अइसन सोच बा कि अगर ऊ अकेला पड़ जास त कुछ ना कर सकस, एह से गिरोह बहुते जरूरी ह।

'मुलतानी ठग' बंजारा का रूप में जब ठगी–अभियान पर निकलत रहस त अपना साथे गाय–बैल भा दोसरो सामान लेके चलत रहस, जेह में उनकर असलियत छिपल रहो। ई लोग रूमाल का जगेह गला घोंटे में मवेशियन के रस्सी इस्तेमाल करे। ई पुरान प्रजाति के ठग रहस आ बाल–बच्चा का साथे घुमल–फिरस। लइकियन के पैदा होते मार डालत रहस ना त ओकर शादी बाहर ना करत रहस। ठगन के ई जाति अब खतम हो गइल बतावल जाला। इनकर परिवार सौ से जादे संख्या में 'हिंगोली' के पड़ोस में रहत रहे। ई लोग कुछ माल–जाल के व्यवसायो कर लेत रहस।

'जदाए जमादार' जे अपना समय में बढ़िया किसिम के ठग मानल जात रहस, 'मुरनाए' गाँव में रहत रहस। अइसन कहल जाला कि अपना खेत में घूम–फिर के लौटत खानी ई लोग 'चिरैर्या' सुनल जवन बड़ विपति के आवे के सूचना रहे। अगिले रात के मिस्टर हालहेड के अनुसार, ओह गाँव पर दुश्मन के हमला हो गइल आ ओह में 'लेफ्टिनेंट फिननेट मान्सेल' मारल गइलन। ई घटना करीब 1812 के नवम्बर के होय के चाहीं।

X X X X

कवनो आमदनी के दसवाँ हिस्सा ठग के गिरोह के मुखिया के होला। जो सामान होय त ओकरा कीमत के प्रति रूपया एक आना। गला घोंटे वाला के कुछ विशेष भुगतान होला, बाकी काम करेवालन के बराबर–बराबर हिस्सा बाँट दियाला। जइसे कबर खोरे वाला भा ठगी में सहायता करे वाला आदि।

पटना आ छपरा के 'मोतिया ठग' अपना मुखिया के लूट के माल में से पहिले भर मुट्ठी निकाल के दे देस। बाँचल सब में बराबर–बराबर बँटाय। ई लोग वचनबद्ध रहे कि अपना गिरोह खातिर कवनो त्याग कर सकेलन। अपशकुन सुनला भा देखला पर ठग लोग आपन अभियान

रोक देवत रहस। एही अंधविश्वास लेके इन्दौर के बरोडा के बीचे 'भीरू' नाम के नामी ठग के गिरफ्तार कर लेहल गइल रहे।

'गानू' गिरोह के ठग जमा लोगन का बीचे अचानक अपना के बेमार हो जाए के नाटक करत रहस। एक आदमी बेमार हो जाय के नकल करस, दोसर सब पानी लावसु नबज देखस। जो उनका साथे यात्रियों मदद करे लागस त ई लोग हवा करे का बहाने गला भा कमर से गमछी खोल के यात्री के गला में डाल के मार देत रहस।

नया चेला के दीक्षा के ठग के दुनिया में 'गुड़पोंच' कहल जाला। ठग–गिरोह फावड़ा लेके भी चलेला ताकि मुर्दा गाड़ल जा सके। एहू में शकुन–अपशकुन देखल जाला। ई लोग साफ–सुथरा खाना गन्दा बरतन में खाये के आदी होलन। जो ठग कुता के सिर हिलावत देखेलन त अपना गिरोह के नया सरूप देवेलन। जो कुता के पैखाना राह के दाँये–बाँये देखेलन त ठगी–अभियान तीन दिन तक स्थगित कर देवेलन। जो एक दिन सफर कइला पर पैखाना बाँया तरफ होय त तेजी से आगे बढ़ जालन, जो दाँया तरफ होय त रोक जालन ना त धीमे–धीमे आगे बढ़ेलन। कुता के मल चाँदनी रात में 'चाँदनी के धाह' कहाले। अशुभ मानल जाले। अइसे ऊ 'मेख के धाह' कहाले। साँझ के देखाई पड़े त ई मल 'गोधूर के आह' कहाले आ शुभ मानल जाले।

'जुमालदेही ठग' दिल्ली से भगवला पर आगरा होते अवध पहुँचल बतावल जालन। एह लोग के वंशावली, जलालुद्दीन से शुरू मानल जाला। ई लोग अपना काम से परिवार के अनजान राखेलन। अइसनो कहल जाला कि जुमालदेही ठग मंसूर अली खान के समय सौ के करीब परिवार सहित दिल्ली अइलन आ अपना के 'बैसवारा परगना' के गाँव 'तलोही' में बसवलन। उनका तब के राजा शंकर सिंह के एगो पूर्वज के संरक्षण प्राप्त रहे। लूट के कीमती माल में राजो हिस्सेदार होत रहस।

जब ठग लोग के इहाँ से उजाड़ल गइल त एह में से कुछ गोरखपुर, दरभंगा आ तिरहुत चल अइलन। इनकर नाम पड़ल– 'लोदाहा'। कुछ आपन पदवी पुरनके रखलन। कहे के ना होई कि एह में से अधिकतर ठग मुसलमान रहस। 'झोटा नायक' नामक ठग त एगो अइसन बेमारी के मार घललस जेकरा पास एक लाख साठ हजार के जेवरात आदि खच्चर पर लादल मिलल। बकरा के बलि ई मुस्लिम तरीका से देत रहस।

हिंदू ठग पंडित से शुभ दिन देखा के भी लूट के यात्रा पर निकलत रहस। सरदार, देवी के पूजा करस। शेष ठग दोहरावस। अगर 'थिबाऊ' दाँयी ओर होखे त दाहिने जात रहस। कुछ टोटका (पिलाहू) क के अपशुकन के शुभ बनावे के भी उपक्रम होत रहे। 'कस्सी' के अर्थ होत रहे– पवित्र फावड़ा। एह कुदार विशेष साथे एगो कहानी मिलेला कि पहिले ठग लोग के देवी के अनुमति रहे कि ऊ हत्या क देस। लाटा देवी ठिकाने लगइहन, बाकिर ठगन के पीछे मुड़के देखे के ना होई। एगो ठग पीछे मुड़के देख लेलन। देवी अपने नंगे होके लाश के आसमान का ओर फेंकत रहस। शर्त टूट गइला पर देवी नाराज हो गइली। तब से लाश ठगे के दफनावे के पड़ेला।

कुछ बर्तन के सांकेतिक अरथो होत रहे। जइसे– 'काथुर' नामक ठग ऊ कहास, जेकर भोजन काठ के बर्तन में होय। ई बाद में एगो वंश आ गोत्र हो गइल। अइसन गोत्र दिल्ली के पास रहे।

'कटोरी' (पीतल के पियाला) का ओर इशारा क के जब कहल जाय– 'जाऽ! कटोरी माँज लावऽ!' त एकर अर्थ होत रहे कि जा! हत्या के उपयुक्त स्थल तय करऽ!

ठगन के कालीजी से संबंध शुरू में बतावल गइल बा। दिल्ली में दफन सुन्नी सूफी संत आ अमीर खुसरो के गुरू निजामुद्दीन औलिया का बारे में भी विलियम हेनरी स्लीमेन के शोध बा कि ऊ जीवन के कुछ समय तक आला दर्जा के ठग रहस। ई बात आदि कवि आ ऋषि वाल्मीकि के शुरूआती पेशा (लूट) से मेल खाता। शिया लोग के अइसन माने में एतराज ना होय बाकी सुन्नी मुसलमान अइसन माने से इन्कार करेलन। वइसे, कहल जाला कि उनकर दरगाह ठग लोग के भी पवित्र तीर्थ–स्थान जइसन बा।

अपने खून से बारम्बार पैदा होय वाला 'रक्तबीज' नामक दानव के मिथक भी ठग–वृत्तान्त से जोड़ायल बा। काली मां जब ओकर हत्या कइली त एक हाथ से दूगो आदमियो पैदा कइली, जवना में एगो अपना रूमाल से ओकर पसेना सोंखे, दोसर खून। बाद में जब आदमी रूमाल देवी के लौटावे लागल त ऊ कहली कि अब ई तोहरे लोग के पास रही। रूमाल के ठग 'गुप्तबान' कहेलन।

थोड़ा में ठग लोगन के ई जीवन, पेशा, विश्वास आ ना पढ़ला से अपनावल कुकरम, आज के नजरिया से उनका केतना पिछड़ल भइला के कहानी बिया! सहज महसूस कइल जा सकेला।

जदपि उनका दुनिया में धरम, जात आ लिंग के भेद–भाव भरसक नइखे। तबहूँ आज जबकि पढ़–लिख के बुद्धि के बल पर बइठल एक से एक ठगी इन्टरनेट आ फेसबुक पर निकल चुकल बा। एटीएम से माल गायब कइल बाँया हाथ के खेल भइल जाता, आउर ना त एह उदारीकरण के युग में पूंजी के परताप से थोक भाव में जल–जंगल आ जमीन ठगल जा रहल बा, जवना में राजनीतिज्ञो लोग अपना सवारथवश शामिल बाड़न।

अइसन में, मामूली कुछ रकम खातिर अमानवीयता के हद तक जाके दोसरा के ठगे वाला परंपरावादी ठग, साँच पूछीं त मूल रूप से अपनहीं ठगात आइल लउकताड़न...। ••

■ न्यू अजीमाबाद कालोनी, शनि मन्दिर के पीछे, महेन्द्रू, पटना–८००००६

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी
के दू गो कविता

[एक]

तातल गरमी घामे उबलत
हर के मुठिया धइले डोलत
जरत घाम में चाम झुराइल
कबों न घर के काम ओराइल
का पछुवा आ का पुरवइया।
छूँछा के बा के पुछवइया?

लगल बुढौती गइल जवानी
जिनिगी बीतल, चढ़ल न पानी
करत-करत बस बप्पा-भइया
छूँछा के बा के पुछवइया?

कब्बो जे कुछ भयल खेत में
कहाँ मयस्सर उहो पेट में
सहुआ ले भागल उठवा के
घर में बाँचल धान के पइया
छूँछा के बा के पुछवइया?

बून बून के तरसत बीतल
कइसे करीं मने के शीतल
घर के थाती कूल्हि ओराइल
अँगना छोड़ भगल गौरइया
छूँछा के बा के पुछवइया?

भूखे भजन न होय गुपाला
बकबक से ना भूख मेटाला
कहिया ले तूँ ढारस देबऽ
कहिया ले कुछ करबा भइया
छूँछा के बा के पुछवइया?

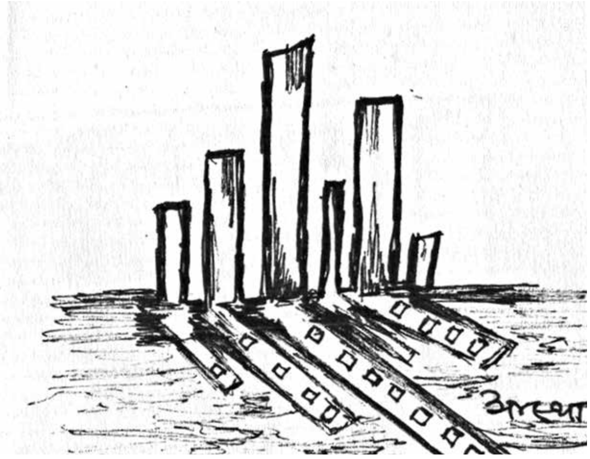

[दू]

ताल तलहटी, गाँव के रहटी
कब फूटल किस्मत खोलेला
अब्बो ले सुपवा बोलेला।
भर दिन खैनी साँझ के हुक्का
भोरही आइल साह के रुक्का
खेती में जब भयल ना कुछऊ
अन्नदाता फुक्के के फुक्का
बिगरल माथा डोलेला।
अब्बो ले सुपवा बोलेला।
बाढ़ बहवलस गाँवे गाँव
पहरी पर अब बाटे ठाँव
मदद न दिहलें शहरी बाबू
कइसे मोर पड़ी ई पाँव
फँसरी में जिउवा के तोलेला।
अब्बो ले सुपवा बोलेला।
नन्हकी आपन भइल सयान
कब ले राखब ओकर ध्यान
धावत धूपत टूटल पनही
बेटहा के बा ढेर पयान
हिम्मत के थुन्ही डोलेला।
अब्बो ले सुपवा बोलेला।
बँसखट भइल दुआरे सपना
बइठे वाला के बा अपना
नेह छोह के किस्मत फूटल
पइँचो माँगल भयल कलपना
बेटी के पाँव, घरे ना सोहेला।
अब्बो ले सुपवा बोलेला।
हम बानी लइकी के बाप
छाती पर बा लोटत साँप
कइसे लागी हाँथे हरदी
सोचत सोचत गइलीं काँप
मन, भर गगरी विष घोलेला।
अब्बो ले सुपवा बोलेला। ••

सी-३६, सेक्टर-३, चिरंजीव विहार, गाजियाबाद (उ०प्र०)

अनिरूद्ध के कुछ कविता

[जन्म- ०६ मार्च १६२८, ग्राम- डीही, पो०- मकेर, जिला-सारण (बिहार) शिक्षा- इण्टरमीडिएट, सेवा-बुनियादी विद्यालय में शिक्षक। आ खेती-बारी-पशुपालन। प्रकाशन - "पनिहारिन" (भोजपुरी गीत संग्रह) सन् १६४६ से भोजपुरी कविताई के शुरूआत। देश-प्रेम, प्रकृति आ गँवई-संस्कृति के कवि। हिन्दी के छायावादी-काव्यधारा के गहिर प्रभाव। भोजपुरी के पुरनकी काव्य-धारा के चर्चित कवि।]

गाँव के मड़इया महान बा

[एक]

हमर गाँव के मड़इया महान बा, देश के परान बा ना"
धरम ज्ञान करम बीर के उद्यान बा। देश के परान बा ना।

हिरदय बा भारत के, ताज के सिंगार बा,
बर रहल मशाल राह देश के दुआर बा,
रस्ता के नाप गाँव-गाँव हमर तीरथ बा,
झुक-झुकजा चरन के निशान बा। देश के परान बा ना।

अबहीं ले गूँजत बा बँसुरी के तान ऊ
ध्यान लगा कान लगा, सुन लऽ तूँ गान ऊ,
खेत-खेत हलधर बा चरवहिया मोहन बा,
छुमक-छुम मथनिया बिहान बा। देश के परान बा ना।

भोर होत ऊँच गगन पंछी के गोल उड़े,
लौटे सभ साँझ पहर मुँह बसेर न बिसरे,
अमरित पति, बिखपी, अमरित बाँटे जग फले,
कन-कन में झलकत बलिदान बा। देश के परान बा ना।

धरम-बरन, जाति कहाँ रंग भेद जाने ऊ,
पीड़ पिए मदद करम प्यार घरम मागे ऊ,
होली रहमान रँगल, तजिआ गनपत कान्हे,
माई-भइया काका कऽ जुबान बा। देश के परान बा ना।।

अँचरा, बन-खेल करे धरती गोदी दुलार,
राखे मइया समेट ना लउके तन उघार,
मेहनत ईश्वर माटी चन्नन बा सोना बा,
पावन ई गउवाँ अभिमान बा। देश के परान बा ना।।
चादर के कोर रँगल-सजल महल नगर-नगर,
बीच गाँव-गाँव सजे तब जाई देश सँवर
करमहीन छल बिलास भरल ना सरग चाहीं,
सुख संपत करतब ईमान बा। देश के परान बा ना।।

शरद गीत

[दू]

बान्ह घुँघरू ई मेला बिन्दुलिया,
झुनुर-झुनुर नाचेली भोर।।

ओस लर चाँदी पंउआँ पयलिया, झुनुर-झुनुर नाचेली भोर।।
रात के लुटावेली हीरा आ मोती,
अँखियन के मेला में बाँटेली मोती,

दूध बुन्दिया नहाइल नगरिया, झुनर-झुनुर नाचेली भोर।।
झलक ताल-ताल जड़े नीलम गगनवा,
चाँदी के दरपनवा झलके अँगनवा,
हंस-पँखवा पर उतरल शरदिया, झुनुर-झुनुर नाचेली भोर।।
लय बजे सुरूज-सितार गावे चिरइया,
धरती के टिकुला में झलके मड़इया,
भरे मोतियन से धानी अँचरिया, झुनुर-झुनुर नाचेली भोर।।
झर गइल तरेंगन सभ दुबवा फुनुगिया,
दुबवा के नोकवा पै झलके जिनिगिया,
नयन खंजन लुकाइल बदरिया-झुनर-झुनर नाचेली भोर।।
पनघट पै बरसेला सोना गँछुलिया,
भर गइल किरन बथान बाजे बँसुलिया,
रूप महकेला महके उमिरिया-झुनुरझुनुर नाचेली भोर।।
फेंके रवि-किरन जाल, चुलबुल मछरिया,
चाँदी के नदि उछिलें सोना गगरिया,
तीर बरसेला तिरछी नजरिया-झुनुर-झुनुर नाचेली भोर।।

[तीन]

शरद वर्णन

मोर पियरी टहकार रँगे धाम
लिखे सोना के अच्छर में बदरा के नाम।।
चरे ओस दाना चुन किरन-हिरन मृग छौना,
मोर पियरी................................
झरल फूल हर सिंगार छू-छू महके बयार
छँउरी चुन-चुन दउरी दउरे घरवा-दुआर,
चुलबुल तितली लागे चंचल चितवन निहार,
उतरल बा शरद-दूत खंजन अंजन सँवार,
कजरारा नयन करे बदरा बिसराम।।
मोर पियरी...
झर गइल सितारा सभ, भर गइल धरा अँचरा,
पुरूष बिगुल बाजल, पथ-पथ जागल भिनुसहरा,
महकत खिल फूल-फूल, गावत गुन चुन भँवरा,
भागल सब रोग, धान झलकत मेटी दुखड़ा,
अनपुरना शरद सुखद जीवन बरदान।।
मोर पियरी..
धरती परती बिहान दूध से नहाइल बा,
दुधिया नदिया उफने कास बन फुलाइल बा,
पथ खुले दसों दुआर पंथी अगराइल बा,
पगड़ी के छौर उड़े, चुनरी लहराइल बा,
टुन-टुन घंटी गइयन सुधि आवे श्याम।।
मोर पियरी..................
मेघा के मेहनत बुँदिया चुअल पसीना बा,
झबदल मनि घास पतइयन जड़ल नगीना बा,
मनभावन सिहरावन शरद के महीना बा,
भैरवी सुरूजसितार बाजत खग बीना बा,
निरमल नग, नदिगावे गुन आठो याम।।
मोर पियरी.........................

नाचल रतिया घुँघरू टूट के छिंटाइल बा,
टूटल लर मोतिन के माला छितराइल बा,
हाट लगे बिन्दुली-टिकुली रतन छनाइल बा,
अँखियन के मेला अँखिया हमर हेराइल बा,
भुँइ जसुदा लोर चुअल बिछुड़े धनश्याम।।
मोर पियरी..............................

[चार]

गाँव-खेत के गीत

गोजी नाचे बछिया-घुंघरू बाजे गछिया पार।
घंटी बाजल गँउआ जागल, बटिया रहे पुकार।।
मोर किरिनिया रँगे नजरिया मनवा रँग लऽ प्यार।
प्रान चोरवले उड़े चिड़इया थाके नयन निहार।।
शोर भइल बा गाँवे-गाँवे, आ रे बैला, ठाँवें आव,
भोर किरिनिया रँगे नजरिया मनवा रंग लऽ प्यार।।
पुरूब सुरूज टिकुली भुँइ दरपन-ताल गगन मुख निरखे,
दुनिया, दिशि-दिशि चमके पच्छिम, उत्तर-दक्खिन चमके,
घाट-घाट जिनगी अँजोर मन, अइसन सजल सिंगार।।
भोर किरिनिया......................................।।
रवि टीका टिकुली मग झलके, सजल बिआ सिर दउरी,
धरि अँचरा खींचे ठुनुकल ऊ धन गोरी के छँउरी,
हल संसार चले कान्हे पे छँवरा कान्ह कुदार।।
पाला बैलन कान्ह घुंघट गर भरे डगर झनकार।।
भोर किरिनिया................................।।
छम-छम नाचे किरन बिहनिया, गछियन लहरे सोना,
गोरिया उछिटे घास खेत के, छँवरा कोड़े कोना,
अरिया छाँटे दूब बढ़ल रस, चूसत रहे चिन्हार।।
भोर किरिनिया...................................।।
मेहनत के रोटी झलके दिन, आसमान के ऐना,
पैना उड़े हवा में नाचे झटके धवरा-मैना,
धारी में धनिया धरिआवे, बोये रतन अपार।।
भोर किरिनिया....................................।।
आरी-पारी झुनिया-रमुआ, बीच खड़ा बनवारी,
हेंगा नाव बैल गुन खींचे, चले बरक के गाड़ी,
धोबिया लोहा करे चदरिया, देवे खेत सँवार।।
भोर किरिनिया रँगे नजरिया, मनवा रँग लऽ प्यार।।
प्रान चोरवले उड़े चिड़इया थाके नयन निहार।।

[पाँच]

दोहा एकादस

दुख में हरदम हम हँसीं, जइसे बिजरी मेघ,
पहुँचा बल ईस्सर बनीं, पथ लउकी भर डेग।।
दिया-जोति करिखा जनम, काजर नयन सिंगार,
मुँह में करिखा ना लगे, सदा रहऽ होशियार।।
दुर्जन सँग अब खैर ना, संगत चूना खैर,
सज्जन हरियर पान सँग, खल बेसाहे बैर।।

छोटे जीवन के छोट ना, समुझीं करीं विचार,
चिंउटी चढ़ि सिर गज हते, काटे मूस पहाड़।।
माँझी माने जे रखे, जल, बयार पहचान,
उबिछे सरवत नाव जल, सावधान तूफान।।
बिछुड़त मछरी देश-जल, तजे प्रान ततकाल,
वोइसे राखीं देश से, अटल प्रेम हर काल।।
दुख बिन सुख के स्वाद ना, बिनु अन्हार परकास,
स्वाद मीठ ना तीत बिनु, बिनु पतझड़ मधुमास।।
ढील तार स्वर ना कढ़े, टूटे अधिक कसाय,
बरे न बाती वायु बिन, अधिक वायु बुझ जाय।।
धरम अरथ करतब-करम, जनहित जग कल्यान,
प्रेम सिखावे हर धरम, बसे प्रेम भगवान।।
चलनी हँसली सूप के, निजे सहस्सर छेद,
अनकर अवगुन ना लखीं, निजे निहारीं पेद।।
मन दरपन मइली सघन, दिखे न आतम रूप,
जइसे करिया मेघ ऊ, ढँके सुरूज के धूप।। ●●

किसलय के कुण्डलिया

हरिद्वार प्रसाद किसलय

उखड़ल सड़क देखि के, राही गारी देय।
बेटा मरे दलाल के, जे जे ठीका लेय।।
जे जे ठीका लेय, 'अगऊँग' काढ़ चढ़ावे।
पइसा बाँचल शेष त, समधी बर हथिआवे।।
दुखड़ा सुने त के, सबके राब लगे भूखड़ा।
लागे सबकर ठेस, रोवत सड़क बा उखड़ा।।

बड़ा होला महान, शान ससुर के बाड़ी।
नइहर खुला दुआर, ससुरा लगे केवाड़ी।।
बचिया, बबी, नइहरे, ससुरा भई बहुरिया।
गोदी माई बाप, पति के घइनी अगुँरिया।।
दू नाव के बीच में, गोड़ रहल पवदान।
नइहर मान शान पतिघर, बड़ा होला महान।।

काँट गड़े जब हाथ में, फूल कहे इठलात।
प्रेम के मरम इहे बा, गले में एहवात।।
गले में एहवात, पति पर भइनी फीदा।
सदा मिलावत नयन, दिनो-दिन बनल पेचीदा।।
गइल काँट के ठाट, ऊ घर के धइनी बाट।
नइहर ससुर मोह, गडावत गइले काँट।।

बाँझ के दुख का जाने, पीर प्रसवती नारि।
विघवा-विघुर दर्द के माने, जाने का नर-नारी।।
जाने का नर-नारि, रहे ना केकरो पानी।
तीनों दुख बरियार, घन-जन सुखी का जानी।।
'कहे' 'किसलय' दूयर, अब कइसे बाजी झाँझ।।
समाज माने अशुभ, मुख देखल बिधुर बाँझ।।

सीता लछमन बीच में, बढ़ल-मन-मोटांव।
भइल हाल छतीस के, चउकठ दुअरा पांव।।
चउकठ बाहर पांव, मुखड़ा फेर के बइठे।
बढ़ल खीस के दाव, तब श्री राम पछइठे।।
पूँछे सामाचार, कटल चुप्पी के फीता।
सबका के समुझाय, लखन मुसुकइली सीता।।

लखन कुलछन पांव के, सीता कुलछन केस।
राम कुलछन दाँत के, तीनो कुलछन एक।।
तीनो कुलछन एक, राम सबके समुझावे।
दुनिया ना निर्दोष, सबके में दोषे पावे।।
किसलय चेचक दाग, कलंक के बा सब लछन।
तीनो जने-ठठाय राम-सीता अरू लक्खन।। ●●

ग्राम पोस्ट : राजा भया दलीपपुर,
भोजपुर, बिहारः- ८०२१५५

किताब–चर्चा/समीक्षा

भोजपुरी के नया महाकाव्य : ‘सेसर सन्त’

डॉ. अरुण मोहन ‘भारवि’

[सेसर सन्त (परशुराम)ः महाकाव्य; रचयिता– शिवबहादुर पाण्डेय ‘प्रीतम’। मूल्य–151।= पृ0सं0–108 प्रकाशक–कुमुद प्रकाशन, महाराजा हाता, थाना रोड, बक्सर (बिहार)]

बड़ा दिन का बाद, भोजपुरी में शिवबहादुर ‘प्रीतम’ रचित एगो सेसर महाकाव्य आइल बा, ‘सेसर सन्त’, जवन महान तपस्वी सन्त, साघक आ अपराजेय योद्धा परशुराम जी पर आधारित बा। अत्याचार आ शोषण के समूल नाश करे वाला परशुराम के गिनती अमर लोगन में होला–

अश्वत्थामा बलिर्व्यासो हनुमानश्च विभीषणः
कृपो परशुरामश्च सप्तैते चिर जीविनः।

शत्रु के शाप से भस्म करे वाला साधक परशुराम का मुहें चारू बेद के वास रहे बाकि उनका पीठि पर धनुष–बाण सुशोभित होखे– ‘अग्रतः चतुरो वेदाः पृष्ठतः सशरं धनुः इदम् वेदम्, इदं क्षात्रं, शापादपि शरादपि!”

भोजपुरी में महाकाव्य परंपरा क शुरूआत 1964 में दुर्गा शंकर प्रसाद सिंह “नाथ” से मानल जाला। 1973 में अविनाश चंद्र विद्यार्थी “कौशिकायन”, सर्वेन्द्रपति त्रिपाठी (1976) के ‘सत्यनिष्ठ हरिशचंद्र’, चन्द्रशेखर मिश्र (1982) के “द्रौपदी’, रामबचन सिंह ‘अँजोर’ (1982) के “निरधन के धनश्याम” परम्परा के पोढ़ कइलस। शिवबहादुर पाण्डेय ‘प्रीतम’ के प्रकाशित पुस्तकन में ‘प्रंखर पुरूष’ अश्वत्थामा पर प्रबन्ध काव्य), हिन्दी उपन्यास सुन्दरवती’, जमीं से आसमाँ तक (गजल संग्रह), ‘वेदानुगमन’ (अध्यात्मक ज्ञान) पाठकन का दिल दिमाग में जगह बना चुकल बा।

भारतीय काव्यशास्त्र में आचार्य भामह, दण्डी, रूद्रट आ आचार्य विश्वनाथ महाकाव्य के परिभाषा– व्याख्या कइले बा लोग, जवना अनुसार महाकाव्य ‘सात’ सर्ग से कम ना होखे के चाहीं आ एकर नायक महान गुन वाला चतुरोदात्त भा धीरोदात्त, वीर, साहसी आ सौंदर्य प्रेमी होखे के चाहीं आ ओकरा कथा का वर्णन में, ओकर पराजय ना होखे के चाहीं। प्रीतम जी कुछ नया सोचे आ नया लिखे में विश्वास रखे वाला कवि हईं। इहे कारण बा कि ‘सेसर संत’ के पुराण के कार्बन कापी नइखे मानल जा सकत। ई नया जीवन मूल्यन से जुड़ल रचना बिया। एकर भाषा के विचार के धार प्रवाह, छंद के चातुर्य, रस, छंद आ अलंकार के चमत्कार देखते बनता। कवि देश–काल आ नया सोंच के तहत नायक के चरित्र के आउर प्रभावी बनावे खातिर ओकरा में फेर बदल करे में अचिको संकोच नइखे कइले। हो सकता पोंगापंथी पाठकन के ई अच्छा ना लागे, बाकिर एह से महाकाव्य के रूप आउर निखरल बा।

कवि सौन्दर्यप्रियता के आग्रही होला– प्रीतमजी एकर अपवाद नइखन। अप्सरा रूपमती के गदराइल स्कूल सुघराई के बखान देखि के कवनो ब्रह्मचारियों के कुछ कुछ होखे लागता–

‘चंदा लेखा मुखमण्डल पर, नैन आम के फारी गोर बदन पर केशराशि, जइसे हो बदरी कारी गर्दन सुघर सुराही जइसन, अउरी अरूण कपाल वक्ष प्रांत, रमणिक शिखर पर दूनो मणि अनमोल।’

मंद उदर आ कटि प्रदेश के, दृश्य मनोहर लागे मन के चैन देख लिहला पर, क्षण में जइसे भागे। नुपुर के ध्वनि व्यथित हृदय के, दे दे जइसे त्राण। मृत शरीर में जइसे अमृत से परि जाला प्राण।’ कवि के अनुसार प्रेम के बिना दुनिया बेकार बिया ‘प्रेम बड़ा अनमोल रतन हऽ, हर प्राणी के प्राण। तृप्त प्रेम से श्रीहरि भी हो जालन दया निधान।’

सेसर संत के भाषा में प्रवाह आ कथानक में कसाव देखते बनत बा। एगारह सर्गन में विभक्त आ विविधतापूर्ण छन्दन के प्रयोग, जइसे– सारसरसी, डभरू ताटक, वीर (आल्हा) आ पंझटिका एकर खास विशेषता मानल जाई काहे कि छन्दन पर जोरदार पकड़ कवि के कलम के दमभर भइला के वकालते करत बा।

एह बात में इचिको संकोच नइखे कि ‘सेसर संत’ भोजपुरी के एगो सेसर महाकाव्य के रूप में साहित्य आ पाठकन के दिलन में आपन एगो खास जगह बनाई आ उचित मान–सम्मान पाई कवि के एह सुधर, दमगर कृति खातिर बहुतु–बहुत बधाई। ●●

सम्पादक ‘गदहपूरना’, आर्य आवास, बंगाली टोला, बक्सर, बिहार,
मो०ः- ६४३१५२५६६५

विपरीत जीवन संस्कृति के त्रासद यथार्थ के महागाथा – बनचरी

कृष्ण कुमार

‘घनानन्द और उनकी कविता’, ‘मीसा’ में बंद देश’, ‘अढ़ाई आखर’, ‘समीक्षा के नए प्रतिमान’, ‘रामजी के सुगना’, ‘गांव के भीतर गांव’, ‘आवऽ लवटि चलीं’, ‘फूटल किरिन हजार’, मोती बी.ए. रचना संसार’, ‘कुछ आग कुछ राग’ के बाद ‘पाती’ के सम्पादक यशस्वी रचनाकार डॉ. अशोक द्विवेदी जी के गोनगर उपन्यास ‘बनचरी’ हाल के शारदीय नवरात्र में हमरा पढ़े के मौका मिलल।

एक त गउरा अपने गोर, दोसर अइली कम्मर ओढ़ि। हम ‘स्लोरीडर’ आ ऊपर से इयाद परि गइल ‘मिलान कुंडेरा के बतकही। ऊ अपना उपन्यास ‘इमोर्टेलिटी’ में कहले बानी, “उपन्यास अइसे पढ़े के चाहीं, जइसे बत्तख के मांस खात होखीं। एकदम धीरे–धीरे। तबे आस्वादन सम्भव हो सकऽता।”

हम ‘बनचरी’–समुद्र’ में पूरा नवरात्र पंवरनी आ ओह में जवन रतन भेंटाइल ऊ प्रस्तुत करऽतानी...।

ईस्वी सन् के शुरू होखे से अंदाजन दू सई बरिस पहिले ‘मनुस्मृति’ के रचना कइल गइल। ओही कालखंड में मेहरारून के पीछा घँसोरि के समाज के पुरूष–प्रधान विचार धारा से आन्हर बनावे के सायास कोशिश भइल। जतना हो सके ओतना मेहरारून के दबावे आ हीन बतावे के प्रयास कइल गइल। रामायण में राम द्वारा सीता के त आगे वाली घटना आ महाभारत में दमयंती के चरित्र पऽ अंगुरी उठावे वाली घटना ओही कालखंड के देन हऽ। सीता के शुद्ध होखे के साक्ष्य जाने खातिर अग्निदेवता के आ दमयंती के शुद्धता परखे खातिर वायुदेवता के बहाली भइल। मेहरारून के साथे ई बरताव हमनिन के पुरनिओ कइलें।

आजु के भागमभागी हाइटेक समय में जहँवाँ ‘सेरोगेट मदर’, ‘लिभ इन रिलेशनशिप’, मेहरारून पऽ उत्पीड़न चाहे हिंसा के बोलबाला अपना चरम प बडुए, दिन–दहाड़े चौमुहान पऽ बेटी–बहिनिन के लुग्गा खुलेआम लुटा रहल बा। देखवइया टुकुर–टुकुर ताकऽ तारें। बीच–बीचवानी तनिको ना। घरेलू हिंसा से मेहरारून के सुरक्षा कानून 2005 के धारा 2 (क्यू) से सुप्रीम कोर्ट ‘वयस्क पुरुष’ वाला अंश हटावे के आदेश दे रहल बा। एह अगलगी में एगो आदिवासी मेहरारू हिडिमा के त्रासद यथार्थ के महागाथा ‘बनचरी’ उपन्यास लिख के डॉ. अशोक द्विवेदी जी बहुत बड़हन साहसिक काम कइले बानी। एकरा के ‘मील के पत्थर’ समझे के जरूरत बा।

एह उपन्यास के कथा–प्रसंग पौराणिक कालजयी ग्रन्थ महाभारत से लिहल गइल बा। बाकिर लीक से हटि के द्विवेदी जी आपन एगो दोसर राह बनवले बानीं सब रंग–रस से भरी हो ‘बनचरी’, सब रंग–रस से भरी। पांचो पांडव आ माता कुन्ती के ‘अज्ञातवास’ के जतरा से एह कृति के शुरूआत भइल बा। अंजोरिया राति अधिया गइला पर ओह लोग के केवट गंगा नदी नाव से पार करा के मोटरी धरावत कहऽता, “पहिले रउआ सभे के एह राज के सीमा पार कऽ लेबे के चाहीं...।”(पहिला पृष्ठ–9)

ईर्ष्यालु चचेरा भाईन द्वारा रचल गइल लाक्षागृह हत्या के साजिस से बच निकलला के बाद पांडव भाई लोग ई निर्णय लेहल कि बजाय हस्तिनापुर लौटे से ओह लोग खातिर सुरक्षित इहे होई कि ऊ लोग माता कुन्ती के साथे कुछ समय अज्ञातवास में बितावे लोग, जेवना से कौरव लोग विश्वास कऽ लेसु कि ओह लोग के मृत्यु हो गइल। ब्राह्मण के वेश धारण कऽ के ऊ लोग उत्तरी भारत के अनेक भागन के जतरा कइलें आ तरह–तरह के मानवीय अनुभवन के ज्ञान प्राप्त कइलें। ओहि जातरा के दरम्यान ऊ लोग एक राति आराम करे खातिर डिडिमासुर के मायावी बन में पडाव डललें। हिडिमासुर जसहीं ऊ लोग के आगमन के बारे में जानि गइल। ऊ ओह लोग के शिकार समझि फंसावे खातिर सुतली रात में अपना बुधिगर, रूपवान बहिन हिडिमा के भेजलसि। रात में सभ जाना खा–पी के सुतल रहन आ भीम पहरा देत रहन। सांझतिं से हिडमा ओह लोग पऽ टाहि लगवले रहे। ओह लोग के एकक गो क्रियाकलाप के अवलोकन करत ओह लोग के नियरा आके सुसुके लागलि। बात–बतकहि उल्टा हो गइल। पांसा पलटि गइल। चौबे गइलें छौबे होखे, दुबें बनि के अइलें। जवानी के दहलीज पऽ कड़ेरन बिछिलहरि होला। भूख ना जाने जूठा भात आ काम ना जाने जाति–कुजाति। जइसन रोसन मियां ओइसन भभक मिंया। ताल ठोका गइल। पसेना से चुहचुहाइल चिक्कन, सुघर, सुगठित देंहिं– धज्जा, चाकर छाती, रूपवान व्यक्तिव के स्वामी भीम के देखि कांच आम के फांक अस बड़–बड़ आंखि, चमक भरल गोहुवा रंग, सुन्दर, सुगढ़ चेहरा–मोहड़ा आ गुदगर देहिं वाली हिडिमा अपना के ना सम्हारि पवली। बिछिल गइली। बीतत समय के साथे हिडिमासुर के बध भीम कइलें। भीम–हिडिमा के बिआह भइल आ मायावी जंगल के राजा के रूप में भीम के स्थापित कइल गइल।

सांचो प्रेम आन्हर होला। जब भीम आ हिडिमा के बीचे प्रेम हो गइल आ माता कुन्ती मात्र एगो संतान

होखे तक दुनों आदमी के संग–साथ के शर्त पऽ बिआह करे के अनुमति दिहली तब बिना आग–पाछ सोचले हिडिमा कुंती के शर्त माने पऽ तइआर हो जातारी जबकि जंगली होते हुए ऊ बहुते होशिआर रही, "अपना कुल के मायावीं विद्या, शारीरिक शक्ति आ चुस्ती–फुर्ती का कारन हिडिमा भलहीं मानव से इतर बलशाली आ असामान्य रहे, बाकि नारी–सुलभ रूप लावण्य आ नैन–नक्श में कम ना रहे। बे साज–संवार के जिनिगी जिये वाली जंगली जाति के बादो हिडिमा के भीतर एगो नारी ह्रदय रहे ओमे करूना आ दया के मधिम सोत संचित रहे... ।(पृष्ठ–19)

जवानी के रंग अजब–गजब होला। पहाड़–गड़हा कुछुओ ना सूझे। दू गो विपरीत जीवन संस्कृतियन के मिलन के एगो स्तबक बुढ़ाइलो मन के हरिअर कऽ देता, "कुटीर के भितरी हिडिमा हाली–हाली आपन वस्त्र खोलि के एक ओर फेंकलस आ बरजोरी करत भीम का छाती से कस के चिंपट गइल। कुटीर का बाहर होत तेज बरखा का संगीत में जलराग छिड़ल रहे आ भीतर प्रणय–उत्सव का चरम पर हिडिमा के कामातुर सिसकारी, स्त्री–पुरूष का एह शाश्वत रतिक्रीड़ा के नया–नया सुर गढ़त रहे। पावस के जलराग से तरंगित प्रकृति आ पुरूष एकाकार होखें खातिर तन्मय हो चुकल रहे।(पृष्ठ–104)

शिल्प के दिसाई देखल जाउ त उपन्यासकार डॉ. अशोक द्विवेदी जी के शिल्प काबिले–तारीफ बा कि खलनायिका के रूप में प्रस्तुत कइल हिडिमा के मटकी मारते नायिका बना देले बानीं। हमरा बुझाता, कृति के लाम–चकार बने से बचावे के खेयाल से ऊहाँ के प्रसंगवश ई काम कइलें बानी। बन प्रदेश के नैसर्गिक प्राकृतिक सुन्दरता आ परिवेश के रचना मन मोहि लेत बा। कल्पनाशीलता में अनुभव आ बौद्धिक ज्ञान चारि चाँद लगा देले बा। शिल्प के बल–बूता पऽ कथावस्तु निम्मन सजा देले बानी। राह में आवे वाला झाड़–झंखड़ काटि–कुटि के पाठक खातिर समतल रास्ता बना देले बानी। विश्व के लगभग सभ प्रमुख भाषा में 'महाभारत के अनेकानेक पाठ रचाइल बा बाकि एकर सृजन आ पुनर्सृजन होत चलि आइल बा। अपने आप में पूरा आ परिपक्व ई कथ्य जुग–जुग से सर्जक लोग के आकृष्ट करत आइल बा। एही कड़ी में बानी सम्पादक, कवि, कथाकार आ उपन्यासकार डॉ. अशोक द्विवेदी जी'।

'इन्द्रप्रस्थ' के सत्ता संघर्ष, आन्हर राज्य लिप्सा आ जड़ होत अभिजात मूल्यन के बीचे तद्‌जुगीन मेहरारू पात्रन के अस्मिता, विवशता, आ उनकर अंतः संघर्षन के बड़ी संवेदना के साथ अभिव्यक्ति होत आइल बा। द्रोपदी, कुन्ती आ उर्वशी के चरित्रन के आजु के स्त्री–विमर्श के अंतर्पाठ के साथे नया ढंग से जोरि के सृजित कइल गइल अनेक कृति कई भाषा में विश्व के कोना–कोना में उपलब्ध बाड़ी सऽ। बाकिर ओह महाभारत के जंगली नायिका हिडिमा के चरित्र के ओरे आजु तक केहु, कतहीं, अइसन कुछ लिखे के हिम्मत ना कइल। जइसे रामचरितमानस में लछुमन जी के घरनी उर्मिला के चरित्र उपेक्षित रहि गइल, उहे हाल हिडिमा के साथे भइल। उनको के जंगली राक्षसी बुझि कवनो रचनाकार के घेआन उनका ओरे ना गइल। साफा तोपाइ गइली हिडिमा। बाकि पत्थर पऽ दूबि जमा देनी डॉ. अशोक द्विवेदी जी 'हिडिमा' का सत्य के गुणगान कऽ के 'बनचरी' में। भोजपुरी भाषा के पीढ़ा ऊंच करे में उपन्यास 'बनचरी' के कतहत बड़हन हाथ बा, ई बतावे खातिर हम शब्दहीन बानी। महाभारत के एह प्रमाणिक लोकप्रिय नायिका हिडिमा के जीवन्त मंदिर हिमाचल प्रदेश के मनाली में आजुओ गहगहाता। उनका दर्शन खातिर मूड़ी पऽ मूड़ी लड़ऽता। जबले उनकर झलमल–झलमल दीआ जरत रही, ऊहाँ के मंदिर के घंटा टनटनात रही आ हिडिमा पुजात रहिहें, 'बनचरी' जीअत रही।

अइसे तऽ एह कृति में खांचिन भ आर्य–अनार्य, कमजोर–बरिआर, मरद–मेहरारू पात्र बाड़ें बाकि 'हिडिमा' 'सुपर–स्टार बाड़ी। जइसे स्तनधारी प्राणी के मेरूदण्ड...। उनकर चरित्र सिर्फ उद्वेलित नइखे करत, बलुक चकित कऽ देता। बनचरी से लेके बनदेवी तक के कथा में सम्भवत पहिल–ओहिल हिडिमा के अतना दृढ़, उज्ज्वल आ निष्कलंक चरित्र देखावल गइल बा। भीम से उत्कट प्रेम करे वाली हिडिमा अकेले बेटा घटोत्कच के लालन–पालन, पढ़ाई–लिखाई, उनकर बलिदान, महाभारत के लड़ाई, आदिवासी जंगली प्रजा के सुख–दुख आ संबंधन के निर्वाह कइसे करऽतारी, उनकर एह मनः स्थिति आ अन्तर्द्वद्व के अद्‌भुत व्यंजना सहज, संप्रेष्य आ अलंकृत भोजपुरी भाषा में भइल बा। हिडिमा अपना जीवन में सखी–सहेली के साथे–साथ ओह सभ छोट–बड़ सहायक लोग के आभार मानले बाड़ी, जे लोग उनका के समय–समय पऽ मदद कइले बा।

एह उपन्यास में जवन लोकोक्ति आ मुहावरा बा आ ओकर जवन व्यंजना बा, ओह में व्यंजना अतना अधिका बा कि उपन्यास के पुरहर लक्ष्य भेंटा जाता। रचना विधान गरिमामय बा। पौराणिक प्रतीक आ बिंब महाभारतकालीन वातावरण के सृष्टि करऽता। तद्‌जुगीन संवेदना आ आधुनिक चिंतन–बोध के ई कृति महत्पूर्ण बा। ई उपन्यास विरासत आ संस्कृति प गर्व करे के मौका देता, संबंध के मजबूत करे के अटूट, कड़ी बा, उत्साह आ उल्लास के खूबसूरत बनावे के पल आ जीवन में खुशी बढ़ावे के श्रेष्ठ माध्यम बा। ई कृति

अइसन बिया जवन ना सिर्फ लोगन के जगावऽ तिया, बलुक उनका के संगठित करऽतिया। हम चाहऽ तानी कि एह उपन्यास के सही ढंग से पढ़ल जाउ आ एकर जवन अधिगम बा– न्यास के, नायकत्व के, भाषा के ओह सभ पर विचार कइल जाउ तबे ई उपन्यास ठीक से समझे में आई। इ कृति सभका से अपील करऽतिया कि सभ केहु के स्वतंत्र विचार इतमिनान से सुनल जाउ आ ओकर रक्षा कइल जाउ। एह ग्रंथ के पढ़ला के सार्थकता एही में बा...।

डॉ. अशोक द्विवेदी जी अपना देश के समय आ समाज से जुड़ि के 'बनचरी' उपन्यास रचले बानी। इतिहास गवाह बा कि सिर्फ खुद खातिर जिंदा रहे वाला लोग हमेशा मरेला बाकि देश आ समाज खातिर मरे वाला हमेशा जियेला। साथे इहो कि समय आ समाज के समझ कवनो साहित्य के विकास खातिर सबसे अहम पक्ष होला। रचनाकार के दृष्टिकोण व्यापक होखे के चाहीं। जवन एह कृति में जगहे–जगहे व्याप्त बा। पौराणिक आख्यान से इतर मानवीय दृष्टिकोण से देखल जाउ तऽ 'बनचरी' ऊ संघर्षरत आम मेहरारू बाड़ी, जेकरा पाले ना उन्नत अस्त्र–शस्त्र बा आ ना विशाल आधुनिक सेना। सधवा होके ऊ विधवा बाड़ी। अपना संकल्प आ व्यावहारिकता के बल–बुतात पऽ ऊ खुदे अपना आसपास से ऊर्जा के संचयन करऽतारी आ ओकरा सहारा से खुदे बाहर निकल जा तारी। ई ऊ कबो नइखी सोचत कि ई सिर्फ हमरे साथे काहे होता, हमहीं काहे...? एह नकारात्मक सोच के पूरा ताकत से लड़त, ऊ सोच बदले के कोशिश करऽतारी...। पूरा उपन्यास 'बनचरी' एक तरह से सभका से सादर निवेदन करऽता कि उनका बारे में सोचीं, जेकरा खरोंच लागल बा। सिर्फ हिडिमे के ना, हमनिन में से ढ़ेर लोग अइसन बाड़ें, जेकरा खरोंच लागल बा। आजु के समय के जवन यथार्थ बा, जवन अधःपतन बा, ओकर खरोंच सभका लागल बा। केहु एह से बाँचल नइखें। बाकि दुख एह बात के बा कि हमनिन के अपना खरोंच के बारे में तनिको नइखीं सोच पावत। ई उपन्यास हमनिन से इहे कहल चाहऽता कि जवन खरोंच हमनिन के लागल बा, ओकरा बारे में सोचीं जा आ ओकरा के हटावे के कोशिश करीं जा...। जइसन हम ऊपर कहले बानी, 'बनचरी' एगो बड़हन उपन्यास बा। हम कथाकार हईं एह से एकर सम्यक समीक्षा प्रस्तुत करे में देंहिं सिहरि जाता। ई 308 पृष्ठ के उपन्यास 29 अनुच्छेद में रचाइल बा आ हर अनुच्छेद महाभारत काल के जीवन के जियतार नायाब टुकड़न से भरल बा, जेवना पऽ पर्याप्त चर्चा आ विमर्श अपेक्षित बा। ई लेख उपन्यास के ओह पक्षन पऽ हमरा रचनाकार मन के एगो प्रतिक्रिया बा, जवन हमरा मन के छुअले बा। हमरा विश्वास बा, भोजपुरी जगत के साथे सभ भाषा के विज्ञजन 'बनचरी' के स्वागत रचनात्मक गर्मजोशी से करिहें...। ●●

/समीक्षित कृतिः 'बनचरी' (उपन्यास)/ उपन्यासकारः अशोक द्विवेदी/प्रकाशकः बिग–सी मीडिया पब्लिकेशन,/एफ–118–आधारतल, चितरंजन पार्क,/नई दिल्ली– 110019/पृष्ठः 308, मूल्यः 220/– रूपये।

फोटो ग्राफर, लेखक, कवि भाई लोगन से निहोरा.......

(1) फुल स्केप कागज पर साफ सुन्दर लिखावट में भा कृतीदेव 10 फॉन्ट में टाइप कराके रचना–सामग्री आ फोटोग्राफ रजि0 ड़ाक से भेजीं अउर **ashok.dvivedipaati@gmail.com** पर मेल करीं।
(2) पत्रिका में रिपोर्ताज रपट, फीचर सामग्री भेजत खा, साथ में ऊहे चित्र/फोटो भेजल जाव, जवन बढ़िया आ प्रकाशन जोग होखे।
(3) पाठक भाई लोगन से विनती बा कि पत्रिका का बारे में, आपन प्रतिक्रिया/विचार भेजत खा, आपन नाम पता, पिनकोड सहित आ मोबाइल नंबर भेजीं। पता पत्रिका में छपल बा।
(4) संस्कृति–कला संबंधी आलेख बढ़िया चित्र रेखाचित्र, फोटोग्राफ के साफ प्रिन्ट–आउट का साथे भेजत खा ओकरा तथ्य–परक प्रामाणिकता के जाँच जरूर करीं। संपादक का नाँवें ईमेल पर फोटोग्राफ भेजल जा सकेला बाकि लिखित रचना के प्रिन्ट डाक/कुरियर से भेजल जरूरी बा।
(5) निजी खर्चा पर निकलेवाली आ बिना लाभ के छपेवाली अव्यावसायिक पत्रिकन के सबसे ज्यादा सहयोग ओकरा लेखक कवियन आ पाठकन से मिलेला। ई समझ के एह पत्रिका के पहिले खुद ग्राहक बनी अउरी दुसरो के बनाईं।

आदर्शोन्मुख जथारथ के जियतार कथा : 'साँवर लइकी'

भगवती प्रसाद द्विवेदी

['साँवर लइकी' (कहानी संग्रह) – शिवपूजन विद्यार्थी, वाराणसी, मूल्य 150.00,]

पेशा से आदर्श शिक्षक रहल शिवपूजन लाल विद्यार्थी जी ओइसे त मूलतः लोकचेतना के कवि हई आ उहाँ के रचल हिन्दी–भोजपुरी के कविता–संग्रह 'उम्मीद में खड़ा रहा', 'भोर कब होई' 'अबहीं अउर चले के बा', गोरकी किरिनयाँ, 'बीनल–बीछल' वगैरह चरचा का केन्द्र में रहलन स, बाकिर समाज में फइलल–पसरल कथनी–करनी के भेद, लिंग भेद, जातिभेद, ऊँच–नीच के चाकर होत गहिरात खाई आ भ्रष्ट आचरन इहाँ के संवेदनशील कवि–मन के व्यथित–आन्दोलित करत रहेला, जवनन में से मरम के बेधे–बान्हेवाली किछु आपबीती–जमबीती के आधुनिक कथा–कहानियन के शकल में असरदार अभिव्यक्ति देवे में इहाँ के महारत हासिल बा। एह दिसाईं उहाँ के सिरिजल लघुकथा–संग्रह 'कतरा–कतरा समुदर' आ कहानी–संग्रह 'लगेज' कथाकार का रूप में मान–मरजाद दियवा चुकल बा। ओही सिलसिला में विद्यार्थी जी के छोट–बड़ आठ कहानियन के टटका संग्रह 'साँवर लइकी' प्रकाशित भइल बा जवन सामाजिक हकीकत के सहज संवेदना से लबरेज बा। चूँकि कवियो खातिर निकष के पैमाना गद्ये मानल गइल बा, एह से ई दावा का साथे कहल जा सकेला कि विद्यार्थी जी के कहानीकारो ओतने समरथी बा, जतना उहाँ के कवि।

'साँवर लइकी' के मए कहानी जथारथ के ठोस जमीन पर मजबूती का सँगे ठाढ़ बाड़ी स आ घटनाक्रम नाटकीय ढंग से एही तरी पलटा खात बाकि हरेक कथा एगो आदर्शमूलक सनेस छोड़ि जात बिया। ई कथाकार के सकारात्मक सोच के परिचायक बा। राह चलत कवनो घटना–दुर्घटना रचनाकार के संवेदना के एह हद तक झकझोरत बिया कि ऊ ओह पर कथानक के ताना–बाना बिनत कहानी सिरिजे खातिर अलचार हो जात बा। 'आपन बात' के आत्मकथ में कहानी–लेखन के समहुत के सिलसिला में लेखक के कहनाम बा– 'रोजमर्रा के जिनिगी में जब कवनो मार्मिक दृश्य आसपास से गुजरे, कवनो खबर आ घटना मन के मथे, बेचैन करे; कवनो संजीदा समस्या सोचे के मजबूर करे, तब हमार कहानीकार के चेतना सजग हो जाय आ राति खा सूते के बेरा ऊ सब दृश्य, घटना आ मसला के लेके कहानी के ताना बाना बुनें लागे। कल्पना में कहानी आकार लेवे लागे, मगर आपन अलहदी सुझाव के कारन ओके जमीन पर उतारे में आजु ना, कल' के अवरोध आवे लागल। बाकिर अधिका दिन ले ई टाल–मटोल के दउर ना चलल आ एक दिन कहानीकार कल्पना के आकाश से उतरिके जमीन पर आ गइल– मतलब अल्फाज के बाना में कागज पर आ गइल।'

अधिकांश कहानियन में संवाद के मार्फत उपयुक्त माहौल बनावल गइल बा आ बतकहिए का जरिए कथावस्तु पियाज के छिलका–अस परत–हर–हर उघरल चलि जात बा। शीर्षक कहानी 'साँवर लइकी' में इहे वार्तालाप कहानी के गति देत बा, जवना में बेटी के अलचार बाप बेटावाला के इहाँ से निरास होके लवटल बा, बाकिर मेहरारू ढाढ़स बन्हवला का जगहा उलाहना आ खोभसन देबे से वाज नइखी आवत, उलटे मर दोषारोपन मरछे पर मुढ़ि के जरला पर नून छिरिके लागत बाड़ी। गुन–गिहिथान से भरल बेटी बस साँवर रंग का चलते हर जगहा से छँटा जात बिया। बाकिर आखिरकार पत्नी के अपना गलती के एहसास होत बा आ ऊ पति के घवाहिल मन पर नेह के अमरित बरिसा के एह तरी सुकून देत बाड़ी कि उन्हुकर मन हलुक हो जात बा आ परेसानी के कुहासा फाटे लागत बा। लमहर कहानी किरायेदारो में मेहरारू के दकियानूसी सोच एगो दलित परिवार के भलामानुस किरायेदार के हटावे खातिर पति हिवाकर पर दबाव बनावत बा, बाकिर मकान में दुर्घटनाग्रस्त होके लहूलुहान अकेले परल मकान–मालकिन के उहे दलित किरायेदार जब लादि–पाथि के अस्पताल पहुँचावत बा आ आपन खून देके 'नया जिनिगी' देत बा, त आखिरकार उन्हकर हिरदय–परिवर्तन हो जात बा। संग्रह के सबसे लमहर कहानी नया जिनिगी के शुरूआतो के जरि में करकसा मेहरारूए बाड़ी, जेकरा चलते पति दिनेश के बाप–महतारी साँसत झेलत असमय काल के गाल में समा जात बाड़नं बाकिर एगो लँगोटिया इयार के सार्थक पहल से पति–पत्नी के उजड़ल चमन में फेरू से बहार आवत बिया। 'भरम से भूत' में तीरथराज प्रयाग में मेहमानबाजी से तंग आके कवनो दोसरा जगहा बदली करावे के निरनय लियात बा।

बाकिर एह सभ परिवारिक कथ–तथ के लीखि से अलगा हटिके दूगो कहानी सामाजिक–चेतना जगावे के दिसाई सार्थक उतजोग करत बाड़ी स। 'इज्जत के इमारत' दलित स्त्रियन पर होत आइल यौन–शोषण का खिलाफ एगो अइसन सुगबुगाहट, बगावत के सुर बुलंद करत बा, जवना के इंकलाबी धमक से मनबढ़ नवहा बड़मुँहवा लोगन के इज्जत के इमारत धराशाई होखे लागत बा। 'धरम के काम' में समाज के ओइसना समरथी लोगन के अंतर्विरोधी के पोल खोलल गइल बा, जे एक तरफ भूख से बिलविलात अलचार मनई के दुरदुरा के मउवत के मुँह में जाए खातिर मजबूर करत बा, उहँवे दोसरा ओर मुअला का बाद दाह संस्कार खातिर दान देके दरियादिली देखावल बा।

विद्यार्थी जी के कहानियन के भासा सहज, सरस, पनिगर प्रवाह से पढ़निहार के बहवले लेले चलि जात बा आ भोजपुरी के खाँटी शब्द, मुहावरा, लोकोक्ति नगीना–अस जहाँ–तहाँ जड़ल चमकत बाड़न स। ई इहाँ के साहित्य का प्रति लमहर साधना आ समरपन के नतीजा बा। उमेदि बा, समाज में सकारात्मक बदलाव के हिमायतीं विद्यार्थी जी के 'साँवर लइकी' के नेह–छोह से स्वागत होई। ●●

भगवती प्रसाद द्विवेदी, पो.बॉ. ११५, पटना–८००० ००१ (बिहार)

काशी से मगहर : कहले कबीर

शिलीमुख

['कहत कबीर' (आत्मकथात्मक उपन्यास) : अनिल ओझा 'नीरद', मूल्यः 300/–, प्रकाशक : पश्चिम बंग भोजपुरी परिषद्, कोलकाता]

प्रचलित खिस्सा–किंवदन्तियन का बले, 'कबीर' जइसन शख्शीयत के गढ़ल आ उनका व्यक्तित्व का अनगढ़ सरुप के कथा–बुनल आसान काम थोरे बा, दुसरा ओर उनकर 'मसि–कागद' से दूर, रचल 'साहित्य' रहे, जवना के थाह लगावत ना जाने कतना ग्रंथ लिखाइल। बाकिर अनिल ओझा 'नीरद' जी जईसन कवि–कथाकार, कथा बुने शुरू कइलस त काशी से मगहर (गंगा से आमी) के तार अपना आपे जुड़ गइल।

'कहत कबीर' में खुद कबीर आपन आत्मकथा, आ आपबीती बयान करत बाड़न– बीच–बीच में समाज आ ओकरा भीतर सोरि फेंकले संकीर्णता, रुढ़ि आ पूर्वाग्रहन पर आपन टिप्पणियो देत चलत बाड़न। उपन्यासकार के सबसे बड़ समस्या रहे कि ऊ ओह कालखण्ड में– कबीर का भीतर उतरो आ ओह परिवेश के जियो, जवना परिवेश में 'कबीर' के व्यक्तित्व बनल। ऊ परिस्थिति जवना में कबीर क जनम भइल। नीरू–नीमा जइसन निःसंतान के गोदी भरे वाला जाति–धरम विहीन नाजायज औलाद का फब्ती का साथ आ मोलबी का फतवा में जात–जमात बाहर करे क फरमान के जहर पियत उनकर पालन–पोसन भइल। केतना अपमान आ तिरस्कार झेलल होइहें नीमा आ नीरू। तमाम तरह के अड़चन, बहिष्कार के दंश आ गरीबी का बीच बस अल्ला परवरदिगार क सहारा रहे नीमा का पास। सत्ता–व्यवस्था मुसलमाँ क आ धर्म क नगरी काशी के पंडा–पंडित समाज का बीच केतना मजहबी चढ़ा–उपरी रहल होई ओह घरी ओह छोट जोलहा–बस्ती में। ऊपर से मुल्ला–मोलबी के ठसक। बाकि सगरी घृणा, पाबन्दी आ उपेक्षा का बीच उपन्यासकार नीमा के ममतामयी महतारी का चरित्र के जियतार बनावे रखला क भरपूर, उतजोग करत लउकत बा। ओह समय में, आ ओह समाज में 'कबीर' के आइल खुद में एगो हस्तक्षेप रहे।

कबीर के बचपन, कबीरे का जुबानी, इयाद के चित्रन लेखा उचरत–उभरत बा। कुछ जरत–जरावत सवालो खड़ा करत बा। जबाब खोजे के जिज्ञासा करत करत पूरा समाजे क बात–ब्योहार ओकरा सोझा आवत जात बा। भितरी खीझ, असंतोष आ प्रतिरोधी भाव जागत बा कबीर में। एही में चाल सुभाव अइसन कि कबीर ओह प्रकृति में ढलत बाड़न जवन बेपरवाह, अक्खड़ आ परम सुतंत्र वाली स्थिति का ओर जाला। कबो–कबो खिझियाइ के घर से भगला–परइला में अउर बहुत कुछ देखे–सुने आ समझे के अवसर भेंटात बा। सगरी बिपरीतता में, अभागत लड़िका कबीर के भगवान के प्रति विश्वास प्रबल होत बा। साई का सत्ता के ई अनुभव धीरही–धीरे विश्वास में बदलत जाता। हर संकट आ आफत–बीपत से बचावे वाला साईं, खुदा, ईश्वर, राम का सर्वोपरि सत्ता के आभास उनुका के होत बा। एही बीचे गुरू के मिलन क ललक बढ़त बा। जीवन के रहस–भेद, समझ जावे, आतम–सरूप के पहिचान आ तत्त्व–ज्ञान खातिर गुरु–प्रेरना जरूरी होला। रामानंद में ऊ छवि उभरल आ कबीर के मन थिर हो गइल। उथल–पुथल आ हलचल जवन भीतर हर घरी बेचैन करत रहे खतम हो गइल। गुरू अन्हार से बहरियाये क दुआरि बतवले।

'नीरद जी' गुरु–मिलन के प्रसंग के बहुत जीवंत ढंग से उकेरले बाड़े। एही बिच्चे कबीर का अम्मा नीमा का जिद आ प्रयास का सहारे कबीर का बियाह क प्रसंग बा। लोई से बियाह आ ओकरा बिदाई के कथा रचत खा उपन्यासकार ओके सहज सुभाविक रंग, लालित्य आ संवेदनपूर्ण 'टच' नइखे दे पावत। ऊ बस दास्ताँ–बयान बन के रहि जाता। कबीर उहाँ निस्पृह–निरपेक्ष लागत बाड़न। आपुसी संबाद जरूर रोचक बनावत बा प्रसंग के। बियहुती लेके घरे लवटलो पर, जबकि लोई सुघ्घर, सुलच्छनी आ घर के हर चीज के ध्यान राखे वाली बाड़ी तब्बो नव दम्पति का रूप में कबीर के निःसंगता प्रगट होत बा। अम्मा नीमा का हुकुम से एकदिन औलादो पैदा हो जाता– अम्मा का खेलवना का रूप में। इहाँ कबीर आ लोई के अंतरंग नइखे उभरि पावत। एकरा बाद फेरू शुरू होत बा छूटल 'सतसंग'। बीच–बीच में कबीर के रचल साखी–सबद आ पद के सन्दर्भ बइठावल उपन्यासकार के लक्ष्य बन जाता। साखी–सबद आ ओकर संदर्भ त व्याख्या–विवेचन सहित पहिलहूँ रहे, बियाह आ संतान उत्पत्ति का साथ कथा–सूत में पद–रचना क बिनावट शुरू हो गइल। उपन्यासकार इहाँ से, कबीर के रचल साहित्य के मजबूत आधार पकड़त आगा बढ़त बा।

उपन्यास क भाषा हालांकि लेखक का अनुसार काशिका से मिलत–जुलत बा, बाकि काशिका क ठसक, 'टोन' आ रवानी नइखे आ पावत। हँ भोजपुरी के बनारसी रंग–रोगन में ढाले क उतजोग जरूर झलकत बा। कबीर के रचल–साहित्य का आधार पर बुनाये वाली कथा में, ठेठ बनारसी यानी 'काशिका' के प्रयोग क गुंजाइशो कम रहे। अनपढ़, अनगढ़ के भाषा आ

सतसंग का भाषा में समंजस बइठावे में उपन्यासकार जरूर सफलता पवले बा। संवाद प्रसंगानुकूल आ प्रवाह पूरल बा। कथा के गति देबे आ शास्त्रीय–गूढ़ विवेचन के हलुक करे खातिर कबीर का बारे में प्रचलित कथा–प्रसंग बहुत मददगार साबित भइल बा। बियाह आ विदाई के समय कबीर–लोई संवाद में उघरल लोई–साहूकार प्रेम प्रसंग रोचक बा। अइसहीं पिसान आ घरखर्ची देबे वाला साहूकार के घरे, लोई के भींजत पानी में ओकरा घर ले पहुँचावे वाला प्रसंग मर्मस्पर्शी ढंग से उरेहल गइल बा। एह उपन्यास से भोजपुरी भाषी लोगन के 'कबीर' आ उनका पंथ का बारे में जाने समुझे क त मोका मिलबे करी, जटिल पदन के अरथो जाने के अवसर मिली। ओह जुग के योग साधना के गूढ़ उपक्रम कबीर का साहित्य में बा, ओकर बढ़िया व्याख्या उपन्यास में सहजे मिल जाई। कबीर के सहज भाव, निडरता, निस्संगता, निस्पृह शैली आ प्रेम–भगति के आनंद के अवस्था में पहुँचे के मोका मिली। कबीर के लोग, विद्रोही, सुधारक, बेबाक, अक्खड़, फक्कड़ न जाने का–का कहेला बाकि रहले ऊ असल में प्रेम–भगति आ इन्सानियत के मरम समझावे वाला सन्त।

नीरद जी के 'कहत कबीर' उपन्यास के खासियत बा कि उनका जीवन–दर्शन का सँग–सँग एगो सतसंग चलत बा। बोली–बानी–विचार सबमें चिन्तन–मनन। अझुराइल के सझुरवला के कोसिस। अझुरहट से निकले के कोसिस। कबीर के कतने समकालीन रैदास आदि संत–साधु मिलत बाड़े। ओमे, जीव, जग, माया क चर्चा होत बा, प्रेम–भगति क आकलन होत बा। बीच–बीच में कबीर क टिप्पणी–सबद, साखी आ पद आवत बा। उपन्यासकार ओके जीवन संदर्भ से जोरे आ समुझावे क जतन में लागल, कथा सूत के आगा बढ़वले जात बा। कहीं सोझ–साफ, कहीं मन के छूअत।

कबीर के अब्बू गुजरि गइले त घर गिरस्थी का खर्चा बदे कबीर के लागे के परत बा कपड़ा बीने आ रँगे में। इहाँ उनकर मेहरारू क साथ–सहयोग आ स्रम से घर का साथ साथ साधना चले लागत बा। कबीर एके महसूस करत बाड़े कि कबीर के आजाद संत कबीर बनावे में लोई क बड़हन हाथ बा। फक्कड़पन त रहबे कइल। घर गिरस्थी के सम्हारे खातिर, नून–रोटी के जुगाड़ बदे, करम करहीं के परेला। ई करम ओतने ले बा आ निष्ठा से बा। बाकि कम्मे में गुजर–बसर आ भोजन–भजन में मजा लेबे के अभ्यास फकीराना सुभाव बना देला– 'मन लागा यार फकीरी में/जो सुख पायो राम भजन में, सो सुख नाहीं अमीरी में।' तब्बे मुँह से गवाई जब अपना फकीरी में आनंद क अनुभूति होखे लागी। 'प्रेम नगरिया रहनि हमारी, भल बनि आई सबूरी में/मन लागा यार फकीरी में!' 21वां परिच्छेद में उपन्यासकार एकर सुघर विवेचन कइले बा। इहाँ से 27वां परिच्छेद ले, हिन्दू–मुसलमान, जाति धरम क पंडा–पंडित, मुल्ला–मोलबी, मंदिर–मस्जिद आदि के लफड़ा आ मानसिकता क विवेचन बा। कबीर के विरोध ो बा आ विरोध क नतीजा–दुत्कार आ प्रहारो झेलल बा। उ लोई के कान्ह पर बइठाइ के साहु क घरे रात खा पहुँचावे क प्रसंगो बा।

एही तरे कुछ अउर खिस्सा–कबीर का बारे में कहल गइल बा, ओहू सब के आधार बनाइ के उपन्यास के आगा बढ़ावल बा। ओह समय के इस्लामी शासन लोदी का नाराजगी में दिहल मृत्युदंड आ मतवाला हाथी का आगा डालल, जंजीर में बान्ह के नदी का पानी में फेंकइलो का बाद कबीर क बाँच गइला जइसन खिस्सा। अंत में आवत आवत उनका मुवला पर लाश खातिर हिन्दू–मुसल्मान क झगरो वाला खिस्सा बा।

अनिल ओझा 'नीरद' भोजपुरी के वरिष्ठ कवि–कथाकार हउवें। 2008 आ 2009 में उनकर कहानी–संग्रह 'गुरुदक्षिणा' आ 'बेचारा सम्राट' उपन्यास से हमहन क परिचय भइल रहे। परिश्रम आ एकनिष्ठता से रचल उनकर ई दुसरका उपन्यास 'कहत कबीर' भोजपुरी खातिर कई माने में खास बा। ●●

Anjoria.com
पहिलका भोजपुरी वेबसाइट

‘काशिका’ : भोजपुरी के अनूठा काव्य संकलन

डॉ. सान्त्वना

[‘काशिका’ (बनारसी बोली के प्रतिनिधि काव्य संकलन)– संपादक विजेन्द्र मिश्र ‘दमदार’, प्रथम संस्करण, 2016, प्रकाशक पिलग्रिम्स पब्लिकेशन्स, दुर्गाकुंड, वाराणसी–221010, मूल्य :140.00]

ई साँच बा कि भोजपुरी विभिन्न जनपदन में अपना आंचलिक खासियत का साथ बोलल जाले। पूर्वी उत्तर प्रदेश में बनारस, गोरखपुर, बलिया, आजमगढ़, जौनपुर के बोलियन क बोले क अंदाज परस्पर अलग बा। काशी सांस्कृतिक–साहित्यिक, धार्मिक नगरी भइला का नाते ब्रजी, अवधी, उर्दू, भोजपुरी, मैथिली आदि बोलियन के सम्मिलन स्थल रहल। एकरा बावजूद इहाँ के लोगन के जीवन–संस्कृति में जवन बोली अपना विशेष–भंगिमा आ ‘टोन’ का कारन अलग से जानल पहिचानल गइल, ओके ‘काशिका’ कहल गइल।

अपना समय के चैतन्य आ प्रखर साहित्यकार रुद्र काशिकेय नाँव से ख्यात स्व0 शिवप्रसाद मिश्र, भोजपुरी के जनपदीय सुभाव का मुताबिक मल्लिका (गोरखपुर, देवरिया (पड़रौना) का मल्ल जाति के नाँव पर), बल्लिका (बलिया आ आसपास) आ काशिका (काशी) के चर्चा करत ग्रियर्सन का मागधी (बिहारी) के उल्लेख कइले बानी आ विस्तार से ऐतिहासिक सन्दर्भ में ‘काशिका’ के उद्‌भव–विकास आ साहित्य पर विचार प्रगट कइले बानीं। उहाँ का अनुसार भजन, कजरी, चैती, बिरहा आ गजल काव्य–विधा काशिका का प्रारम्भिक साहित्य के लोकप्रियता बढ़वलस।

हिंदी–साहित्य के एगो खास वर्ग, लोकभाषा के साहित्य आ साहित्यकारन के शुरुवे से, महत्वहीन समझलस, तब्बो लोकभाषा अपना जीवनी–शक्ति, मौलिक अन्दाज आ ठेठ–ठाट में, बहुत मेधावी रचनाकार आ कलाकारन के अपना आत्मीय सुभाव से बन्हले रहलस। कतने बड़का साहित्यकार, काशिका का तेवर में अपना सृजन के अनूठा उदाहरण प्रस्तुत कइलन लोग। आजुओ कतने नया कवि रचनाकार ‘काशिका’ भोजपुरी में लिखे–पढ़े में निष्ठा से लागल बा। विजेन्द्र कुमार मिश्र ‘दमदार’ का संपादन में आइल ‘काशिका’ नाँव के संकलन में रामानन्दाचार्य, कबीरदास, तेग अली, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, किशोरीलाल गोस्वामी आ प्रेमघन से लगाइत बेढब बनारसी, बलदेव प्रसाद मिश्र, गुरु बनारसी, भैया जी बनारसी, नजीर बनारसी, बड़े गुरू, कैलाश गौतम, बावला आदि का साथ, खुद विजेन्द्र मिश्र तक सैंतीस गो कवियन के रचना बा। एकरा के तीन खण्ड– (प्रारंभिक, आधुनिक आ सामयिक) में वर्गीकृत कइल बा। पन्द्रहवीं शताब्दी से लेके अब तक का ‘कशिका’ काव्य–परम्परा के परोसत–सहेजत नया काव्यात्मक उरेह के जाने खातिर विजेन्द्र मिश्र ‘दमदार’ के संपादित ई काव्य–संकलन भोजपुरी भाषा–साहित्य का इतिहासो का दिसाईं उपयोगी आ संग्रहणीय बा। ••

भोजपुरी बारहमासा के एगो महत्वपूर्ण संकलन

डॉ. अशोक द्विवेदी

[‘भोजपुरी बारहमासा अउर चतुर्मासा’ संपादक– डॉ. रामनारायण तिवारी एवं जितेन्द्रनाथ राय, मूल्यः 250.00, प्रकाशक : किशोर विद्या निकेतन, वाराणसी।]

आधुनिक जीवन शैली भा तेजी से बदलत समय आजु के आदमी के लोक के आत्मीय चेतनता से एसे नइखे जोड़ पावत, काँहे कि लोक परम्परा से मिलल सुने–सुनावे वाली भाषा छूटि गइल बिया। नया भाषा में पुरनकी भाषा के जियतार तत्व– सम्वेदना, भाव–भंगिमा आ हृदय–संवादिता खतम हो गइल बा। भुलाय–बिसराय दिहल गइल बा। लिखे–पढ़े, मोबाइल, कम्प्यूटर आ इन्टरनेट से मैसेज भेजावे वाली भासा, पुरनकी संवाद का भाषा के जड़ मान के छोड़ देले बिया। दरअसल, पुरनका से नवका के जोड़े वाली भाषा के ऊ आत्मीय भावे लुप्त हो गइल जवना के चलते पहिले लोग कहत–सुनत आ समझत रहे। पहिले लोग बोल–बताइ के ज्ञान देत रहे– गुरुकुल के प्रत्यक्ष संवाद परम्परा रहे। सुनला आ मनन कइला के अभ्यास डालल जात रहे। अब ना त ऊ संवाद बा, ना ओकर सार्थकता। अब लिखित किताब का संगे, गूगल गुरु बा। पुरनकी भाषा के अरथहीन बनावे वाला एह दारुन–समय में, लोकगीत सुने–समझे आ ओकरा जरिये अपना जातीय चेतना से नाता जोरे के समय अब केहू के पास नइखे। अपना मसरफ आ काम भर लेबे से अधिका जनला के जरूरते का बा? जइसे राजनीतिक लोग कर रहल बा।

पहिले लरिकाई में हमके आजी, काकी, फुआ, मौसी,

माई आ टोल–परेस के मेहरारुवन के गीतन के सुर लहरी जब कान में सुनाय त ओकरा गूँज से बरबस मन भींज उठे। गावत आ गाइ के सुनावत खा, ओह लोगिन के अपने गवलकी गीतिया बहा ले जाव। एही तरे बाग, बगइचा, ताल आ गाँव का सिवान में गाइ–गोरू चरावत, सुस्तात कवनो पुरुष स्वर में लोरकी, बिरहा आ निरगुन क टेर उठे, त अइसे लागे, जइसे ओकर गूँज दूरों से सुने वाला के खींच ले जाई। निगिचा गइला पर पता चले कि गावे वाला खुदे लवलीन आ तन्मय बा– जइसे गीत ओकरा के बान्ह के अपरूपी ओकरा मुँहे से उचरत होखे। अज्ञान में हमके पहिले एकर रहस–भेद ना बुझाय, अब समझ में आवेला कि गीतन के ओह टेर आ लय के गूँज में परम्परा से चलत आइल जातीय चेतना के लहर अपना आत्मीयता में अइसन बान्ह लेत होई; तबे नऽ ऊ लोग अदबदाइ के ओह चेतना कऽ लहर में बहि जात होई। ई साइत लोकानुभूति में अपना अनुभूति के प्रतीति रहे।

बिना लिखल सैकड़न बरिस से मुँहा–मुँही जिन्दा रहे वाला एह गीतन के गावे वाला कुछ साक्षर लोग भले कागज पर लिख लेले होखे लेकिन सुन के कंठस्थ क लेबे वाला लोक जुग के अंत हो गइल। एह गीतन के घूमि के बटोरे, आडियो–बिडियों में टेप करे, काँपियन में लिख–लिख के इकट्ठा करे आ फेरू बाद में ओकर संग्रह छपवावे वाला लोगन के निष्ठा आ श्रम के महातम कम नइखे। अइसना लोगन के ऊ सम्मान मिले के चाहीं जवन नया कृति देबे वाला लेखकन से तनी ऊँचे होखे। कारन ई कि एह अनाम गीतन में लोक स्वर आ ओकरा अभिव्यक्ति के एगो जीयत जागत जियतार परम्परा बिराजमान बा। लोकरचित एह साहित्य के रचना भले केहू कइले होखे, बाकिर आज ऊ लोक के वाचिक सम्पदा था। एह वाचिक सम्पदा के परिश्रम से संग्रह आ प्रकाशन अपने आप में एगो बड़ काम बा। एह दिसाईं, पहिले से काम करे वाला विद्वान लोगन के योगदान के उपयोगी आ महत्वपूर्ण मानल जाये के चाहीं।

डॉ0 रामनारायण तिवारी लम्बा समय से भोजपुरी लोकगीतन के संग्रह करे आ ओके समुझे–समुझावे में लागल रहल बाड़न। कुछ समय पहिले डॉ0 तिवारी के भोजपुरी के श्रम गीतन पर आधारित 'जँतसार' किताब बहुत चर्चित भइल त एह कारन ऊ एह किताब में अलिखित स्मृति–परम्परा के गीतन में परम्परा के सांस्कृतिक, सामाजिक धरोहर के संदर्भ सहित समुझे–समुझावे के सार्थक कोशिश कइले रहलन। स्वर्गीय कृष्णदेव उपाध्याय आ स्वर्गीय डॉ. हरिशंकर उपाध्याय का संग–साथ में एह वाचिक गीतन के बटोरे में आस्था आ अटूट निष्ठा के प्रतिफल ई भइल कि बहुत कुछ अइसन गीत बटोरा गइलन सऽ, जवन अब प्रचलन से बाहर भा अप्राप्य मानल जात बाड़न सऽ।

'भोजपुरी बारहमासा अउर चतुरमासा' नाँव के संग्रह डॉ0 रामनारायण तिवारी, डॉ0 जितेन्द्र नाथ राय आ धीरेन्द्र कुमार राय के आपुसी श्रम से तइयार भइल एगो अनूठा संकलन बा। एह संकलन के पाँच भाग में – (माहवारी, समयवारी, अनुवादित अपूर्ण माहवारी बारहमासा आ चतुरमासा) भूमिका, अर्थ आ सन्दर्भ सहित दीहल गइल बा। लोकस्वर में गीतात्मक रूप में सुनावल जाये वाला बारहमासा एक तरह से विरह में बारहोमास के अनुभव, सम्बेदन आ प्रभाव के वर्णनात्मक प्रस्तुति हऽ। संस्कृत साहित्य के ऋतु–वर्णन से कुछ अलग, अपढ़ भा कम पढ़ल लिखल लोगन के सहज भाव से रचल एह बारहमासा में अधिकांशतः प्रेम, नारी विरह के वेदना आ गृहस्थ जीवन में ऋतु परिवर्तन के अनुभूति प्रतीति बयान कइल गइल बा। एह तरह के बारहमासा अन्य लोकभसन में देखे–सुने के मिली। संत कवियन में कबीर, तुलसीदास, पलटूदास, धरनीदास आदि अलग–अलग छंदविधान में बारहमासा रचले रहे लोग। 'पद्मावत' में मलिक मुहम्मद जायसी के 'नागमती वियोग' खण्ड में बारहमासा के उत्कृष्ट आ अतुलनीय रूप देख के अजुओ अचरज होला। भाषा के मौलिक आ ठेठ सुभाव में रचल 'नागमती के विरह वर्णन' जायसी के अमर बना दिहलस। ई सँचहूँ बारहमासा के ऋतु–चक्र के अनुभवजन्य श्रेष्ठ रचना रहे।

बारहमासा के प्रकृति आ कथ्य के चरचा करत डॉ0 तिवारी अपना लमहर भूमिका में उदाहरण सहित संकलित गीतन के ओकरा सन्दर्भ सहित विवेचन कइले बाड़न। एह संग्रह में पचपन–छप्पन गो बारहमासा अर्थ सहित दिहल गइल बा। माहवारी, समयवारी आ अपूण र्ा बारहमासा अलग से वर्गीकृत बा आ अन्त में संग्रहीत गीतन के संदर्भ सूची बा। एह तरह से ई संकलन लुप्त होत लोक संस्कृति के स्मृति गीतन का रूप में देखल जायेके चाहीं। हमनी का जातीय सांस्कृतिक चेतना के धरोहर का रूप में एह लोकगीतन के एगो अलगे महत्व बा। एह दिसाईं ई संग्रह पढ़े–पढ़ावे जोग बा। ●●

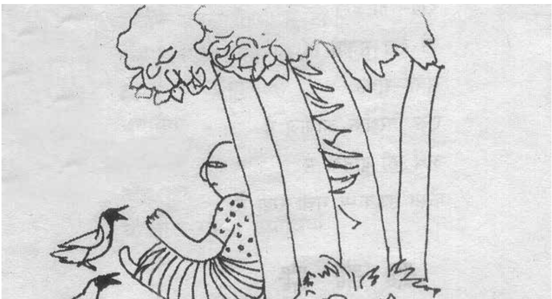

भोजपुरी कबिताई के परम्परा से मिलन : 'नमामि गंगे'

हीरालाल 'हीरा'

['नमांमि गंगे' (भोजपुरी काव्य संग्रह)– डॉ. शत्रुघ्न पाण्डेय, पृ.204, मूल्य 300/, प्रकाशक : बलिया हिंदी प्रचारिणी सभा, बलिया]

अइसे तऽ अब भोजपुरी कविताई गाँव के खेत–खरिहान आ सीवान लाँघत देश आ देश के बाहर के दुनिया के अपना भीतर समेटे लागल बा, बाकि राष्ट्रीय फलक में बदलत समय आ सन्दर्भ से जोड़े में पारम्परिक काव्यध ारा के नया पयान माने राखत बा। एही से भोजपुरी कवि के मानव–मूल्यन के क्षरण आ अतीत के सहकारी समाज–संस्कृति बरबस धेयान खींचत बा। अमानवीय स्थितियन आ स्तरहीन राजनीति के शिकार समाज आ देश के लेके चिन्तित कवि अपना अभिव्यक्ति के कटु–तिक्त बनावे पर मजबूर बा।

डा. शत्रुघ्न पाण्डेय के काव्य संकलन में गंगा माई पर लिखल एगो कविता बा ओही के संकलन के शीर्षक बना दिहल गइल बा। गंगा देश के संस्कृति के पहिचान हई। सबके तारे वाला इनकर पवित्र जल हमनिये के दूषित कर चुकल बानी जा। अब सफाई अभियान आ निर्मलीकरण कार्यक्रम चल रहल बा, बाकिर जवन मइल आ कटुता हमनी का भीतर भरल बा ओकरा सफाई बिना सफाई के हर कोसिस व्यर्थ हो रहल बा। कवि शत्रुध्न पांडेय अपना कविताई में एही मूल पर चोट करत बाड़न। एम्मे भारत माता आ ओकरा नायकन के बखान बा आ समाज के विसंगतियन पर व्यंगो बा। ई व्यंग्य प्रतिक्रिया देत बा।

अपना माटी आ धरती से गहिर लगावे राखे वाला कवि शत्रुध्न पाण्डेय सही माने में समाजधर्मी आ राष्ट्र प्रेमी कवि बाड़न। माटी से जुड़ल किसान धरती का असली पुजारी आ साघक हवे। कवि ओकर बखान करत नइखे अघात (किसनवा तू हउव भगवान पृष्ठ 34)। अपना सहज सुझाव आ निष्ठाभरल कर्म पूजा का कारन किसान देवता के समान बा सभकर भरन पोषन करे वाला "भारत के अभिमान" के सकारात्मक स्तुति कवि जरूर करत बा बाकिर आज का समय में खेती आ खेतिहर के हाल केहु से छिपल नइखे।

संकलन में बयासी गो कविता संकलित सामिल बाड़ी सऽ। हमार भारत भूमि, स्वतंत्रता सेनानी, समाज आ साहित्य सेवियन आ जननायकन के बखान त बड़ले बा, समाजवाद संसद आ राजनीतिको विषयन पर लिखल कविता सामिल बाड़ी स। एकरा साथ परिवारिक, सामाजिक आ क्षेत्रीय विषयन के समेटत इ संकलन विविधता से भरल बा। कवि में राष्ट्र प्रेम जबरदस्त बा। देस में भ्रष्टाचार, कालाबाजारी आ स्वार्थपरक राजनीति करे वालन पर कहीं सीधा–सीघा आ कहीं व्यंग्योक्ति के रूप में प्रगट होत बा। कवि समाज आ ओकरा संवेदनशील संस्कृति के नोकसान पहुँचावे वाला ढपोरसंखी राजनीतिज्ञन के लताड़े से नइखे चूकल। बाकिर देस के रक्षा में प्रान निछावर करे वालन के प्रति अगाध श्रद्धा देखावल बा। शांति आ सद्भाव के अनुसरण आ आचरण एकरा भक्षकन पर ना लागू होखे के चाहीं। कवि के विचार बा कि एह भक्षकन आ आतंकवादियन के क्षमा ना कइल जा सकेला; कवि के कामना बा–

भारत देस अखण्ड बना दऽ, डंका एकर फेरू बजा दऽ।

विश्व में हिन्द देस के झंडा, फहर–फहर फहरा दऽ !

कवि, अध्यापक, समाजसेवी, आ साहित्यकार के रूप में अर्जित अनुभवन से बुनाइल शत्रुघ्न पाण्डेय के ई कविता संग्रह "नमामि गंगे" पढ़े–पढ़ावे जोग बा। ●●

कथक्कड़ी तिसरकी कड़ी–

छोटका के गलती बड़का के सजाय

प्रकाश उदय

बुढ़िया नानी के दूगो नाती, दूनो नाती के एके बुढ़िया नानी। घर में केहू ना आउर, सिवाय एगो देबीजी के मन्दिर के, मन्दिर के देबीजी के।

बड़का नतिया जतने सिधवा, छोटका ओतने शैतान। बड़का ताल पँवर के जाय ओड़हुल के फूल लोढ़े, ताल पँवर के आवे आ देबीजी के फूल चढ़ावे। छोटका फूल उठावे आ पोंटा पोंछ के फेंक दे। बड़का घीव के दियरी जरावे, छोटका दियरी के घीव में बाटी बोर–बोर खाय।

कुछ दिन त सब सब अपत अनेत देबीजी सहली। कुछुओ ना कहली। सोचली कि अबहीं छोट बा छोटका, जतस बढ़त जाई ततस सुधरत जाई। बाकिर छोटका जब जतस बढ़त गइल ततस सहँकत गइल त एक रात देबीजी बुढ़िया नानी के सपना सुनवली कि बुढ़िया, अपना छोटका नाती के सम्हार ले, सुधार ले ना त ....

बुढ़िया नानी हाथ–गोड़ जोड़ली, रोट–मलीदा भखली, बड़ी–बड़ी मनावन कइली त देबीजी दुचार दिन मनली। बुढ़िया नानी छोटका के सम्हारे सुधारे चलली त छोटका जवना फूल में पोंटा पोंछत रहे तवना से नकटी छोड़ावे लागल, जवना दियरी के घीव में बाटी बोरत रहे तवना घीव के बाटी में पलट के खाय लागल।

त अबकी सपना में अइली त देबीजी कहली कि अब ना सुधरी तोर छोटका नतिया त तोरा बड़का नतिया के खा जाइब।

बुढ़िया नानी कहली कि हाय रे माय! छोटका के गलती बड़का के सजाय! छोटका के खइतू त एगो बात, बड़का के काहे खइबू?!

कहली देबीजी कि छोटका बदमास बा कि ना रे? खाइब त कइसे पचाइब! ●●

चउथकी कड़ी–

चल्हाँकी आ चटकन

चल्हाँक चिलनवा के दू बेटा, दूनो चल्हाँक। चल्हाँकी के बात बतियावे खातिर तीनो के मुँह चउबीसो घण्टा ककुलाय। त एक बेर के बात कि केहू किहाँ गमी भइल, सराध के नेवता जइसे सभे किहाँ गइल चिलनवो किहाँ आइल। चिलनवा अपना छोटका बेटा से कहले कि नेवता प तेंही जो, कवनो चल्हाँकी के बात चलइबे त लोग कही कि जब छोटका अतना चल्हाँक त बड़का कतना चल्हाँक त छोटका–बड़का के बाप कतना चल्हाँक!

छोटकू पहुँचले त पहुँचते उनुका चल्हाँकी के एगो बात भेंटा गइल। लगलन चल्हाँकी वाला आपन हँसी हँसे। एह कुमोका के हँसी से हरान घर के मलिकार पुछले कि काहें तूँ हँसलऽ ? त कहले कि असहीं, एगो बात मन में आइल कि रउरा सभे के माथ छिलाइल बा, मान लीं कि रउरा सभ के मूँड़ी कटा गइल त कटलका मुँड़िया के कइसे उठावल जाई, बवड़ी रहित त भरमुट्ठा पकड़ के झम्म से उठा लियाइत ! ...

त चार झापड़ खिया के छोटकू चल्हाँक के घर से खदेरल गइल। खदेराइल घरे अइले त चिलनवा चल्हाँक बडका बेटा से कहले की ई त नाक कटा के आ गइल अबकी तें जो।

बड़कू चल्हाँक पहुँचले त पहुँचते पुछले कि काहे छोटका के चार झापड़ खिया के घर से खदेरल गइल? जब बतावल गइल त लगलन चल्हाँकी वाला आपने हँसी हँसे, कहले कि हद बा। हती चुकी बात कइसे ना छोटका के बुझाइल कि जब मूँड़ी कटाइए गइल त बबड़ी रहे चाहे ना, मुँह में लउर हूर के आराम से मूँडी उठा लिहल जाई!

त चउदह झापड़ खिया के बड़कू चल्हाँक के घर से खदेरल गइल। खदेराइल घरे अइले त चिलनवा चल्हाँक कहले कि तोहनी से कुछ ना उजियाई, हमरे जाके आपन चल्हाँकी चिन्हवावे परी।

पहुँचले चिलनवा चल्हाँक त पहुँचते पुछले कि काहे छोटका के चार, बड़का के चउदह झापड़ खिया के घर से खदेरल गइल। जब बतावल गइल त चल्हाँकी वाला अपना हँसी के भितरे भीतर पी गइले। कहले कि उन्हनी के भेजले ना चाहत रहे हमरा। अपने आइल चाहत रहे। इतमिनान रखल जाय बाकिर कि अबकी कवनो गमी जब होई घरे रउरा, हमहीं आइब, पहिलके उड़ान में ...!

अब, कहवइया के सुनवइया से सवाल कि चार से चउदह भइल, चउदह से ...? ●●

हिन्दी विभाग, श्री बलदेव पी०जी० कॉलेज, बड़ागाँव, वाराणसी

भोजायण

विनोद द्विवेदी

एक बेर राजा भोज अपना राज के सबसे जानकार आ देस–परदेस घूमे वाला, ज्ञानी पंडित के अपना सभा में आदर से बोलववलन। सतकार कइला का बाद पुछलन "रउवा त कतने राज देखले, सुनले बानी। एगो बात बताईं, हमरा राज आ अयोध्या का रामराज में का अंतर बा? जब ओह राज पर 'रामायण' लिखा सकेला त हमरा पर काहे ना लिखा सकेला?"

पंडित बहुत हुसियार रहे। राजा तऽ राजा ठहरले, पता ना, कब का क देस? ऊ मुस्कियात बोलल, "महाराज राउर प्रताप केहू से कम नइखे। रउरा नाँव प 'भोजायण' लिखा सकेला। कहीं तऽ हम...."

पंडित आपन बात पूरा करस एकरा पहिलहीं एगो कउवा उड़त आइल आ पंडित का मुँह पर बीट कऽ दिहलस। राजा के बहुत खीसि बरल, कि उनका सभा में, कउवा के अइसन ढिठाई? तुरन्त कउवा के पकड़े के आदेश भइल। राज में रहे वाला बहेलिया लागि–भीर के कउवा राम के पकड़ लियइलन सऽ। राजा भोज कउवा से पुछलन, "तूँ पंडित का मुँह पर ओही घरी काहें बीट कइले, जब ऊ हमार प्रशंसा करत रहे।"

"राजा राम का राज से रउरा राज के तुलना करे वाला पंडित झूठ बखानत रहे त हमसे ना रहाइल आ ओकरा मुँहें बीट क के झूठ के तोप दिहनी।" कउवा निडर जवाब दिहलस।

"तोरा लगे झूठ साबित करे के, कवन प्रमाण बा? जल्दी बताउ ना तऽ तोर काल नियरा गइल बा। राजा क्रोध में कहलन "हे राजा भोज! अपना राज–दरबार के पाँच गो सच्चा आ ईमानदार अदिमी के हमरा सँगे राजा राम के राज में भेजऽ आ कुछ दिन के समय दऽ, हम साबित करब कि हमार बात केतना सही बा। एक बात अउरी। हे राजा, तुहऊँ ओह राज का सीमा ले चलऽ।" कउवा अनुरोध कइलस

राजा के उत्सुकता बढ़ल। ऊ झटपट पाँच अदिमी के साथ रामराज में कउवा का सँग जाए के लगा दिहले आ अपनहूँ कउवा का पीछा चचले। सीमा आवते, कउवा रूकि गइल आ जमीन पर उचरत बोलल, एइजा खुदाई करावल जाय।" खुदाई होते एगो सुरंग क मुँह मिलल। फेर त राजा आ उनकर सैनिक अचरज में चिहाइल सुरंग में ढुक गइलन। कुछ आगा गइला पर एगो चउतरा पर धइल हीरा–मोती, जवाहरात से भरल सोना के एगो थाल लउकल। कउवा बोलल हे राजा अब एह थाल के उठवा के राजा राम के राज में भेजवावे के आदेश दिहीं। ई पाँचो जना हमरा सँग उहाँ चलो।' आ मन करे त रउवां चलीं। फेरू राजा का आदेश पर, थाल लेके पाँचो आदमी कउवा का पाछा रामराज में चल दिहलन। राज–दरबार में पहुँचते उहाँ के मंत्री कहलस, "हमरा इहाँ त खजाना पहिलहीं से भरल बा। अच्छा रही कि ई सब प्रजा में बँटवा दिहीं सभे।' राजा भोज के दरबारी अब राम का राज में दुआरी–दुआरी घूमे लागल, बाकि प्रजा में केहू ऊ हीरा जवाहरात मोती ना लिहल। "हमनी का एकर का करब जा?" हार पाछ के राज का सिवाना, बगइचा में बइठ के बिचारे लागल लोग। आखिरकार कउवा कहलस, 'एह हीरा–मोती वाला थाल के फेरू राजा किहाँ ई कहि के छोड़ आईं सभे कि, ए राज में केहू एके स्वीकार ना कइल हा आ हमनी के वापस लेके जाए के नइखे। साधारण आदमी का भेस बदलले, राजा भोज, अइसहीं करे कऽ आदेश दिहले। फिर पाँचो दरबारियन संग कउवो उड़ चलल।

हीरा मोती के थाल पहुँचवला का बाद दरबारियन सँग ऊ वापस लवटि आइल। राजा भोज का मन में, तरह तरह के शंका रहे, जवना में ईहो रहे कि कउवा अब त दुसरा राज में बा, हो सकेला इहाँ से ऊ उड़ि के लुकाई जाव आ फेड़ ना लवटे बाकि कउवा के वापस अइला का बाद ई शंका खत्म हो गइल। ऊहो एह हठी कउवा से सचाई जाने खातिर बेकल रहलन।

अपना राज में पहुँचते, ऊ कउवा से सवाल कइलन, "तूँ अभी ले कुछ साबित ना कर पवले कि हमरा राज आ रामराज में का अंतर बा?"

कउवा हँसल, "महाराज, पहिले अपना इमानदार दरबारियन के खनतलाशी लेईं, ओकरा बादे हम कुछ कहब!"

खनतलासी का बाद, सबका पाकिट आ कमरबंद से हीरा, मोती, जवाहरात निकलल त कउवा हँसत बोलल, "देखलीं महाराज, जवना हीरा–मोती के राम का राज में साधारनो अदिमी ना पूछलस, ऊहे रउरा राज में अधिकारिये चोराई–छिपाइ के धरत बा! ईहे रामराज आ भोजराज में अंतर बा!" ●●

न्यू ककरमत्ता कालोनी, डी.एल.डब्लू., वाराणसी

बाति के बतंगड़

डा0 ओमप्रकाश सिंह

एगो पुरान गीत के मुखड़ा आजु याद आ गइल। इयरवा से लागल बाटे इयरिया घरवा का चोरिया–चोरिया ना। अब चुनाव का माहौल में इयार के इयारी के चरचा से ई मत बूझीं सभे कि हम वेलेंटाइन डे के कवनो चरचा करे जात बानी. हमनी किहाँ त वसन्त पंचमीए से शुरू हो जाले बेलाग रसिकता जवन फगुआ ले इजाजती तौर प आ ओकरा बादो कुछ दिन ले चइता में सनाइल हैंग ओवर में। एह मौसम में भर फागुन बूढ़ देवर लागे भा 'चुनरी में लागताटे हवा बेल–बॉटम सीया द ना' जइसन गीत भा एक से एक फूहड़ गीतन के आवाज राहे–पेड़ा सुनाए लागेला आ रउरा चुप रहि जाए होला। फगुआ के बहुते गीत–गवनई से नीमन बुझाए लागेला डोमकच. बारात निकलला का बाद दुलहा का घरे होखे वाला डोमकच के त साफे मनाही होला कि कवनो मरद के ई डोमकच ना त देखे के चाहीं ना सुने। एकरा के मेहरारूए मंचित करेली आ एही बहाने रतजगो हो जाला. बाकि अब एकाध जगहा एकरो लाइव ब्रॉडकास्ट लाउड–स्पीकर लगा के होखे लागल बा। अब बाति बहकि के डीरेल हो जाव ओहसे पहिले लवटल जाव असली मुद्दा प।

हम जवना इयारी के बात उठवनी ह तवन सीधे चुनावे से जुड़ल बा। जइसे नोटबन्दी क एलान के बाद अकूत करियाह धन राखे वाला आ सरकार का बीचे तू डाढ़–डाढ़, हम पात–पात वाला खेल चलल वइसने खेल अब चलत बा। जइसे घर वालन के नजर बचा के नवहियन के इयारी परवान चढ़ेले वइसहीं चुनाव आयोग के नजर बचा के वोटरन प जाल फेंकात रहेला. अपना देश के बकुलाह सेकूलरिज्मो गजबे के ह। सरस्वती पूजा, दुर्गा पूजा, विसर्जन, इहां ले कि दाह संस्कारो रोकल जा सकेला बाकि तजिया का राह में कवनो बाधा ना आवे के चाहीं। मुसलमान आ ईसाई वोटरन के खुलेआम लुभावल जा सकेला बाकि हिन्दुवन के ना। बाकी गोल खुले आम दावा कर सकेलें कि ऊ हतना टिकट मुसलमानन के दिहले बाड़ें बाकि दोसर गोल ई दावा ना कर सके कि ऊ हिन्दू के कतना टिकट दिहले बाड़ें। से दोसरका गोल के मजबूरी हो जाले कि ऊ घुमा के नाक पकड़े। यूपी में जब भाजपा का विरोधी गोलन में हाराबाजी लागल बा कि मुसलमान वोट के बिटोरत बा, भाजपा एको मुसलमान के टिकट ना दे के आपन इरादा जाहिर क दिहलसि आ प्रचार के जिम्मेदारी मीडिया प डाल दिहलसि। सरदेसाई, दत्त, घोष, थापर, कुमार जइसन एंकरन के त पतो ना चले कि ऊ लोग कतना चाव से भाजपा के प्रचार क देला। दीदीया खुलेआम पक्षपात ना करे त ओकरा किहां भाजपा के गोड़ो धरे के जगहा ना भेंटाइत। बाकि बकुलाह सेकूलरिज्म के ई पैरोकार लोग देश के माहौल अइसन बना दीहल कि भाजपा अकेले बहुमत पा लिहलसि केन्द्र में, अयोध्या के राम मन्दिर के मुद्दो अइसने बना के ध दिहले बा लोग. भाजपा अगर नाम लेव तब हल्ला आ नाम ना लेव तबो हल्ला. राम मन्दिर के मामला देश के सुप्रीम पंचायत में बा. एगो फोन प बेल देबे वाला आ रात के दू बजे सुनवाई खाति अदालत खोल देबे वाला एह कोर्ट का लगे राम मन्दिर जइसन मुद्दा प फैसला देबे के समय नइखे. ऊ एह मामिला प रोज आ लगातार सुनवाई क के हमेशा ला मामिला खतम क सकेले बाकि पता ना काहे अइसन हो नइखे पावत जबकि हाई कोर्ट एह बारे में आपन फैसला दे चुकल बा।

अइसने एगो मुद्दा बा लव जिहाद के. वो कत्ल भी करते हैं तो चर्चा नहीं होती, हम आह भी भरते हैं तो हो जाते हैं बदनाम. सही भा गलत बाकि दोसरा जाति–पंथ में शादी–बिआह प हमेशा से बवाल मचत आइल बा. अबहियों मचत रहेला. अपना असली नाम–जाति–पंथ के जानकारी बिना दिहले गैर जाति–पंथ वाला भा वाली के अपना इयारी में फँसावल नैतिक रूप से गलत काम ह आ एकर पुरजोर विरोध होखहीं के चाहीं आ तब अउरी जब एह तरह फँसावल मनई के जाति–पंथ बदलावल हिडेन एजेन्डा होखे. भाजपा अबकी यूपी ला जारी अपना घोषणा पत्र में लिखले बिया कि लइकियन का स्कूल कॉलेज भिरी रोमियो विरोधी बल के तैनाती कइल जाई. कुछ पत्रकारन के एहू प आपत्ति बा. उनुकर कहना बा कि चुनावी फायदा ला लव जिहाद के मुद्दा घूमा के उठवले बिया भाजपा. इहो कहना बा कि रोमियो भा मजनू जइसन ईसाई–मुसलमान नाम दीहल गलत बा. कुछ दोसरे नाम होखे के चाहीं. विरोध बजटो के कइल जात बा कि गाँव आ गरीबन के फायदा चहुँपावे वाला बजट वोटरन के लुभावे ला पेश भइल बा. अब अगर गाँव–गरीब का खिलाफ जाए वाला बजट रहित त का विरोधी बकसि देतें ? शायद असल शिकायत त इहे बा कि गरदन मरोड़े के मौका काहे ना दिहलसि मोदी सरकार! ●●

अँजोरिया डाट काम

गजल

पाण्डेय कपिल

(एक) – गीत मन के लिखइला जमाना भइल
राग में गुनगुनइला जमाना भइल ।

रोज अधराति कोइल कुँहुकलस मगर
आम के मोजरियइला जमाना भइल ।

ओस अइसे त रोजे भिंजावत रहे
मन के महुआ फुलइला जमाना भइल ।

अब ना परतीत के कवनो माने रहल
प्यार के किरिया खइला जमाना भइल ।

कान में अबहूँ गूँजेला कइसन इ धुन
बात उनका से कइला जमाना भइल ।

रूप उनकर ए आँखिन में झलकल करे
श्याम का ब्रज से गइला जमाना भइल ।

(दू) – जीभ पर नाम चढ़ावत बानी
मन क सुगना के पढ़ावत बानी ।

आज पागल परान का धुन में
प्रीत के गीत कढ़ावत बानी ।

नेह से उनका सहारा पाके
मन के चोटी पश चढ़ावत बानी ।

जिन्दगी के किताब में अपना
जिल्द अनुभव के मढ़ावत बानी ।

अब त उसरत बजार बा आपन
हमहूँ दूकान बढ़ावत बानी ।

(तीन) – जिन्दगी दाव पर लगावे दऽ !
बात कुछ दर्द के सुनावे दऽ !

आज तक गीत जे गवा न सकल
गीत ऊ जिन्दगी के गावे दऽ !

रोआँ रोआँ कदम फुलाइल बा
देह के रूप ई देखावे दऽ !

नील आकाश में घटा उमड़ल
मन का ए मोर के नचावे दऽ !

साँस के रास महारास भइल
प्रान के बाँसुरी बजावे दऽ !

गूँज आवत बा दूर से कवनो
गूँज आवे गूँज आवे दऽ !

●●

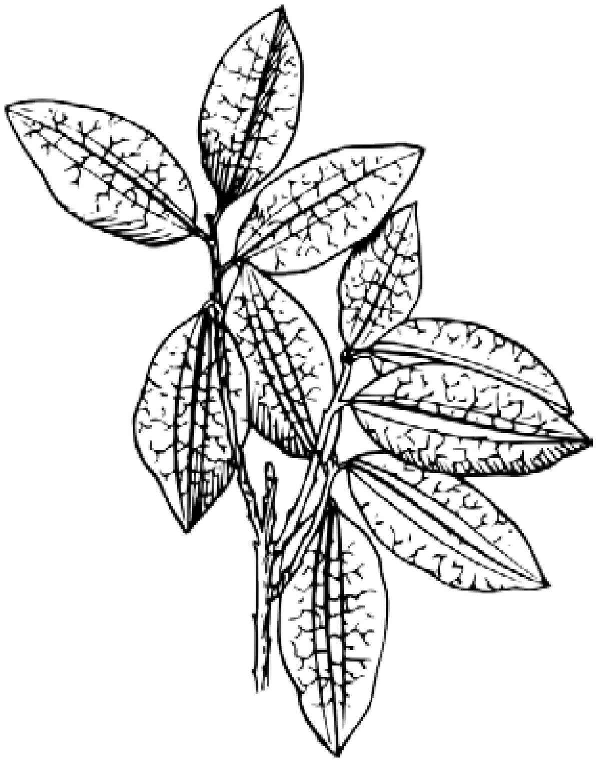

कन्हैया पाण्डेय

(एक)

झँखत किसान बाड़ें अपनी दुआरी
असवों बुझाता रहिहें, बबुनी कुँआरी!

धाइ-धाइ केकरी, दुअरिया ना गइनी
माथ के पगरिया, चरनिया ना धइनी।
हीत-मीत केहू तनिको, बूझे ना लाचारी।

केहू माँगे लाखो-लाख, केहू माँगे गहना
केहू देला हमरी, गरीबी के उलहना
बुझे नाही दुख केहू बोलेला अँगारी।

परल बाटे अँखियन में, लोगवन के माड़ा
तिलक-दहेजवा के, कटले बा हाड़ा
कइसे कसइया-घर में, सउँपी दुलारी?

रहबऽ ना हरबेरी बेटा वाला तूँही
एक दिन तऽ ढहिहें, गुरूरवा के धूही
बदली जमाना, आई दोसरो के बारी!

(तीन)

रात - दिन अब घरी आ पहर देख लीं
लोग पकड़त बा उल्टा डहर देख लीं ।

लोग पियले बा मदिरा कि पगला गइल
लेता अमरित के बदले जहर देख लीं ।

फेड़ कटुता क लहलह आ लदबद भइल
पावे खातिर बा कतना हहर देख लीं ।

जे भी लूटल कमाइल ,उ चलता बनल
आज सोझिया पश टूटत कहर देख लीं ।

साझि होते अन्हरिया हँसल बेहया
फेरु जगमग में भटकल शहर देख लीं ।

(दू)

सरबे लगाइ दिहलें, घरवा के थतिया राम
सोचेले किसान आपन, आगा के विपतिया राम!

पहिले से जरजर रहे, थसकलि पलानी
दुसरे तबाह कइलस, बाढ़ो के पानी
कुछऊ बुझात नइखे, करस का जुगुतिया राम!

सुति-उठि भात-भात, करी जब नन्हकी
खाये बदे कुछऊ धराइ जाई बन्हकी
फूटले करमवा, केतना सहीं हम सँसतिया राम!

अगहन में बाटे अभी, बबुनी के गवना
इहवाँ कपार चढ़ल, आटा-दाल लवना
लागऽता निलाम होई, अबकी इजतिया राम!

बेरि-बेरि सोचला पर आवेला रोवाई
खाद-बीज बिना कइसे खेतवा बोवाई
छोटका किसनवन के बड़ी फजिहतिया राम!

जेतने सँवारऽ तानी, ओतने बिलाता
भितरा से तबो केहू देत बा दिलासा
बाँव नाहीं जाला कबो, कइल मेहनतिया राम!

●●

२ए/२६८, आवास विकास कालोनी, बलिया

■■ गाँव आ गँवई संस्कृति पर केन्द्रित 'पाती' के अंक क बड़ा इन्तजारी रहे ।आजुओ गाँव के पूछे , आ छोह राखे वाला लोग बा ,जान के बड़ा सन्तोख मिलल ,त ,चिट्ठी लिखे से अपना के रोकि ना पवनी ।एह अंक में छपल लेख ,कविता, कहानी में गाँव के माटी के सोन्ह सुगंध बा ।रस छलकत रचनन में गँवई परम्परा ,पुरनका रीति नीति,नेह–छोह आ अभाव के दर्द लखार होत बा ।

शशि प्रेमदेव के गजल में धार आ पीड़ा छिपल बा। मनोज भावुक के एगो शेर 'शायर के बीबी बोले कि हम पागल के बीबी' साँचे बुझाता । गहमरियो जी क गजल अच्छा लागल । 'बाहबाही में दाढी' सुनल कथा बा, तबो बढ़िया लागल। कहानी 'ठेहुना के घाव' मरमबेधी बा एह कहानी के मथेला 'सोनचिरई' हो सकत रहे । 'बेटा के भविष्य' घर घर क कहानी बा। बूढ़ बाप मतारी खातिर ना त केहू का पास समय बा, ना मन। नीरज सिंह के 'शहर बनत एगो गाँव' में उहाँ का डुमरा गाँव के सैर करा देले बानी, गंगा प्रसाद अरुण गाँव के शब्द चित्रे बना दिहले बानी। भगवती प्र0 द्विवेदी करेज खोलि के अपना गाँव क वर्णन कइले बानी। कृष्ण कुमारजी के गँवई चित्रण में लेखकीय साहस लउकत बा, जवना मे उहाँ का अपना जातिये पर व्यंग करे से नइखीं चूकल। रामदेव शुक्ल जी क लमहर रिपोर्ताज बन्हले रहेता। लेखक तटस्थ भाव से, हर क्षेत्र के बदलाव का साथ प्रस्तुत करत बा। 'गाँव होई नापाता !' का अशोक तिवारी जी के धन्यवाद कि उहाँ का रोचक ढंग से गाँव क रीति रेवाज, परब तिहुवार आ जीवन के विविध पक्ष के सोगहगे हाजिर कइले बानी । रमाशंकर जी मँजल लेखक हईं, 'बगइचा में डोली' के सहजता मन मोह लिहलस । सम्पादकजी, न जाने काहे आपन आत्मकथा अन्त में रखले बानी। पढ़ के लागत बा कि साँचो संघर्षे में जीवन बा। कुल मिला के ई अंक साँचो, गाँव के जतरा करा देत बा । ई अंक हजारो लोगन का दरद के बानी देले बा ..ओह दरद के, जवन लिखले ना लिखाई,गवले ना गवाई । एह धरोहर अंक खातिर धन्यवाद !

■ अजय कुमार, आनन्द नगर, मोतीझील, पिपरहिया रोड, आरा ८०२३०१ भोजपुर

■■ 'पाती' के सितम्बर'2016 अंक पाके हियरा जुड़ा गइल, काहें कि गाँव–जवार के विशद विवेचन से सम्बोधित गीत गजल, संस्मरण, रिपोर्ताज, कहनी– कथा में पुरनका गाँव देहात जीवन्त हो गइल। हमार पन्ना में ओंकारेश्वर, महाकालेश्वर का सँगे भीमाशंकर ज्योतिर्लिंग क दर्शन भइल आ देवाधिदेव महादेव का प्रति सरधा जागल। रउवा पर्यटन साहित्य में 'महेशानमपरीदेवः' के सात्विक भाव से चित्रण बा । सोनपुर, ददरी मेला, भंटा लोटा मेला आ मेला घुमनी से ऊपर उठि के भोजपुरी भाई लोग तीर्थाटनो करो, जवना से ज्ञान, भक्ति आ मुक्ति मिलो। कजरी त भारतीय लोक संस्कृति के पराकाष्ठा हवे भक्ति रस के उद्भव एम्मे भइल बा। लोकराग के माइक्रो (सूक्ष्म) विवेचन 'घेरि घेरि आवे सावन के बदरिया' में देखते बनत बा । कजरी के बहुआयामी रूप–रंग, लय विधान, विस्तार आ गहिराई के निरूपण खातिर बधाई।

'गाँव में केतना गाँव' (रामदेव शुक्ल) में देवर–भउजाई के सात्विक नेह छोह देखे लाएक बा। ठेला पर आमलेट, मैगी, चाउमिन, पाउच के लहार ..पहिले जे गाँव में शराब पिये, उ सिर झुकाइ के चले, आज सीना तान के चलत बा । गाँव के फार्महाउस, खेत बिकवावे वाला डाकदर, शौचालय बदे मिलल धन क बनरबाँट , मोबाइल ,किरकेट ,पान मसाला में नसाइल गँवई पीढ़ी पर शुक्ल जी के प्रहार 'गाँव गया था ,गाँव से भागा' गाँव का भाग्य के चरितारथ करत बा ।

'जीवन समर में हमार गाँव' (आत्मकथा) में पुरनका गाँव के जथारथ, खेती गिरस्थी, आ ओकर उपकरण, खेल क मैदान, स्कूल आदि के चित्र बारीकी से उरेहल बा। गाँव में सब भलमानुसे ना, दुरजनो होला। घरेलू हाल आ अपना समय क साहित्यकार साथियन का चित्रण में अशोक द्विवेदी सफल बानी। सादा जीवन, ऊँच बिचार क जियतार रूप एह आत्मकथा में भेटाता। पूर्वांचल के नवका पीढ़ी एह सब से सीख लेव आ आपन जीवन निर्मान करे तऽ सँचहूँ भोजपुरी क्षेत्र हर दिसाईं समृद्ध हो जाई ।

■ डा०अर्जुन तिवारी, पूर्व पत्रकारिता विभागाध्यक्ष,काशी विद्यापीठ एव निदेशक एन.१०/२६ के-१, जानकीनगर बजरडीहा, वाराणसी

■■ भोजपुरी 'पाती' के जवन रूप–रेख रउरा प्रदान कइले बानी ,ऊ बड़ा आकर्षक बा । हाथ में आवते मन अगरा जाला कि हमरा भोजपुरी में अइसन पत्रिका निकल रहल बा, जेवन दुसरा भाषा का पत्रिकन से तनिको उनइस नइखे बढ़िया आ स्तरीय कथा कहानियन आ कविता का साथ राउर ध्यान वैचारिक निबन्ध पर बा। विविध विषयक वैचारिक निबन्धन के लगातार 'पाती' में जगह देके भोजपुरी साहित्य के श्री वृद्धि में आप अमूल्य जोगदान कर रहल बानी।

दिसं02015 वाला अंक में सम्पादकीय, जयकान्त जी के 'मातृभाषा के महत्व', प्रमोद तिवारी के 'लोक के आधुनिकता', कृष्ण कुमार के 'आवारा आतंक' अशोक तिवारी के 'अपराध आ भ्रष्टाचार' आदि बड़ा सामयिक आ वैचारिक बा। भगवती प्र0द्विवेदी के 'लोकगायकी में व्याप्त अश्लीलता' आ बरमेश्वर सिंह के व्यंग्य लेख जोरदार बा। भाषाशास्त्र पर आचार्य विश्वनाथ सिंह, अशेष जी के रचना विद्वत्तापूर्ण आ महत्वपूर्ण बा। कहानी त, लगभग हर अंक में तीन गो चार गो रहबे करेला, एह अंक में कन्हैया सिंह सदय आ शारदा पाण्डेय के कहानी बढ़िया लागल। प्रगत जी लगातार सामयिक आ प्रासंगिक लिख रहल बानी।

■ **डा० ब्रजभूषण मिश्र, मुजफ्फरपुर (बिहार)**

■■ सितंबर 2016, अंक 81–82 'गाँव आ गँवई संस्कृति पर केन्द्रित' पाती के मिलल सुखद बा। 'पाती' के अंक दर अंक, एह सम्पूर्ण पत्रिका के लगातार प्रकाशन महत्वपूर्ण बा। कलात्मक कवर का बाद लीकि से हट के लिखल संपादकी में 'भीमाशंकर ज्योतिर्लिंग' के यात्रा–वृत्त में रउरा बैरागी–भाव के बधाई, जे बिना खरच बरच के बाबा के पवित्र धाम घुमा दिहलस। 'घेरि घेरि आई सावन के बदरिया' त हमहन का लोकराग रंग के जीवंत झाँकिये बा। अइसहीं लरिकाईं से लेके शिक्षा आ बियाह तक के आत्मकथा 'जीवन समर में गाँव' के इयाद–दरीचा जीवन्त आ प्रभावशाली। अन्तर्मन के छुवे आ हिलावे वाला। ई पढ़त खा मुक्तिबोध के एगो लाइन बारबार इयाद आइल ..विचार आते हैं , लिखते समय नहीं , बोझ ढोते वक्त पीठ पर ..। एह आत्मकथा के पढ़ला के बाद ई बात बुझाता कि दर्द के कोख से असली सृजनशीलता आ सकारात्मकता के जनम होला । तबे रउवा 'पाती' के आजु ले सँजोइ के निरन्तरता देइ रहल बानी।

नया शुरू भइल स्तम्भ 'गाँव–जवार के माटी के महक' सुन्दर आ स्वागत जोग बा । श्री सतीश त्रिपाठी आ अर्चना रामसुन्दरम् के समाजिक दायित्व आ काम सराहे जोग बा। सतीश जी त भोजपुरी के बढ़न्ती क नायके रहल बाड़े। अइसहूँ एह स्तम्भ के आवे वाला लोगन क परिचय भोजपुरी के संघर्षशील लोगन खातिर मिसाल बनी। एक से एक विद्वान रचनाकार लोगन के रचन आ रचनाशीलता से भरल ई अंक ,सचहूँ गाँव के सोगहग रूप देखावत बा। विमर्श में डा0प्रमोद तिवारी के आलेख 'गाँव अपना के केतना चीन्हेला', आज का गाँव के, पूरा ढंग से परिभाषित करत बा, बाकी विविधता से भरल कई लोगन के लेख––संस्मरण त पुछहीं के नइखे !

■ **कृष्ण कुमार, महावीर स्थान के निकट, करमनटोला, आरा -८०२३०१**

■■ 'पाती' पत्रिका के पछिला 80–81–82 अंक के स्तरीय रचना सामग्री, खास कर गद्य का साथे साथ सम्पादकीय पढ़ के सुखद अचरज भइल। लोकजीवन क सांस्कृतिक आ उज्जर पक्ष उजियार कइल आजु के जमाना में एतना आसान नइखे। भोजपुरी का एह पत्रिका क रंग–रूप, कलेवर आ विषय वस्तु ओह भ्रम के तूरत बा, जेवना में भोजपुरी लेखन आ ओकरा पत्रकारिता के कमतर आँकल जाला । पत्रिका आ ओकरा रचना सामग्री के अइसे सुरुचि से परोसल, भोजपुरी साहित्यिक पत्रकारिता के सीमा बढ़ावत बा ।

'गाँव पर केन्द्रित' ई अंक अपना गाँव जवार आ लोक परम्परा के जाने समुझे खातिर पढ़े आ जोगइ के राखे वाला अंक बन गइल बा। कविता, कहानी, यात्रा वृत्तांत, रिपोर्ताज, संस्मरण, आत्मकथा आ ललित विचारपूर्ण लेखन से भरल ई अंक, भोजपुरी गद्य के विविधता देखावत बा । एह अंक का कवि ,लेखक लोगन के प्रणाम आ साधुवाद !

■ **ऋचा दुबे, द्वारा -विजय दुबे, भरून्धा कछार, वाराणसी रोड, मिर्जापुर -२३१००१**

■■ 'पाती' के 'गाँव आ गँवई संस्कृति पर केन्द्रित' अंक गँवई माटी का सोन्ह महक से भरल बा । अंक में आइल लेख ,संस्मरण, निबन्ध, कविता, कहानी में पुरनका गाँव क बदलल आ बदलत रूप लखार होता, संपादकी में यात्रा वृत्त भोजपुरी पत्रिका का लेहाज से नया आ साहसिक प्रयोग बा। लागत बा संपादक जी अकेल ना, पाठकन का साथे यात्रा पर बानी। ई यात्रा पाठको के स्वानुभूति करावत बा। सावन आ कजरी के रसगर लय, ताल आ इतिहास अगिला लेख में बा, जवन ज्ञानवर्द्धक बा। कृष्ण कुमार के 'हमार गाँवः लहुरी दिल्ली' गाँव के अनुभूत वृत्तान्त बा। इहाँ का कलम के जादूगर बानी। भाषा ओही अनुकूल बा। एम्मे कथा शैली का पुट मे आइल चन्द्रबाला दीदी के सोच आ निर्णायक फैसला अलगे रंग भरत बा। डा0 रमाशंकर श्रीवास्तव जी के 'बगइचा में डोली' आ आशारानी लाल के संसमरण गाँव का पुरनका स्थिति के देखावत, नवको बदलाव के देखावत बा। रमाशंकर जी के चिन्ता चुभत बिया, एतना बड़हन गाँव आ एगो आम के पल्लो नइखे मिलत ! जगन्नाथ, मिथिलेश गहमरी आदि के गजल सामयिक आ दिल के छूवे वाला बा ।

■ **रामयश 'अविकल' - पकड़ी गैस एजेन्सी के दक्षिण, पो०-पकड़ी, आरा, जिला भोजपुर**